

मङ्गलस्थान के निकटदेश से चली हुई शोभायमान दो रेखायें अँगूठे की पी सामने यदि पहुँच जावें तो वह प्राणी करने योग्य कार्य में बहुतसा तर्क करनेहारा नदी व नाले आदिकों में दूखजाता है ॥ १०० ॥

१२ वृद्धाङ्गलेवै निकटे नस्य रेखाद्यं चेद्ग्रथितं मिथः स्यात् ।

तदा नरो नास्तिकतामुपैति पाखण्डकारी परवित्तहारी ॥ १ ॥

अँगूठे के नस्के पास टेढ़ी फनाकार दो रेखाओंवाला परस्पर (५) गुँथा हुआ निसोहता हो तो वह प्राणी पाखण्डकारी होकर परधन का हरनेवाला होताहुआ नास्तिको पाता है ॥ १ ॥

१३ मन्दालयाचेच्चलिता सुरेखा स्वल्पस्वरूपा समुपैति पैत्रीम् ।

तदा नरस्तूच्चपदं प्रयाति राज्यात्प्रतिष्ठां प्रतिपद्य सम्यक् ॥ २ ॥

शनैश्चर के स्थानसे चली हुई शोभायमान रेखा छोटे रूपवाली होकर पितृरेखा के पहुँच जावे तो वह प्राणी भलीभांति किसी राज्य से प्रतिष्ठा को पाकर उंचे पद अधिकारी होता है यानी वड़ी प्रतिष्ठा के साथ ऊचेपद को पाता है ॥ २ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिवन्धेदेशाद् वक्रा सुरेखा पितरं प्रयाति ।

ज्वरार्दितः क्षीणतनुर्मनुष्यो दीनो दरिद्रो दयितासमेतः ॥ ३ ॥

मणिवन्ध (कङ्गे) से उठी हुई शोभायमान रेखा टेढ़ी होकर पितृरेखा के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी क्षीणकायावाला, दयितासमेत, दीन व दरिद्री होकर बुखार घ्याकुल रहता है ॥ ३ ॥

१५ काव्यालयस्थं परिभाति चिह्नं वाणौर्विभिन्नं यदि षट्करेखम् ।

हासी विलासी रतिरङ्गलासी ह्यानन्दराशी पुरुषः प्रकाशी ॥ ४ ॥

शुक्र के स्थान में टिका व पांच तिरीछी रेखाओं से कटा हुआ छः रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी हँसनेवाला, ऐयाश व रतिरंगमें लसाहुआ आन की राशिवाला होकर प्रकाश का करनेवाला कहाता है ॥ ४ ॥ (देखो चित्र नं० १४)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ प्रदेशिनी चन्द्रमिते परुषके रेखाद्यं चेत्कुटिलं चकास्ति ।

उग्रस्वभावो मनुजस्तदा स्यात्कोधातुरः क्षीणकलेवरश्च ॥ ५ ॥

तर्जनी अँगुली की पहिली पोर में दो रेखाओंवाला निशान टेढ़ा होता हुआ

* रतिरङ्गे लसितुं शीलमस्येति ॥

सोहता हो तो वह प्राणी कठोर चित्तवाला होकर कोप से घबड़ाया हुआ क्षण काया गला होता है ॥ ५ ॥

२ मन्दालयचेचलिते कुरेखे सन्तर्जनी मूलगते यदा स्तः ।

सम्पत्तिहीनो मनुजो विशोकी प्रासभ्यदोषान्मरणं प्रयाति ॥ ६ ॥

शनैश्चर के स्थान से चली हुई छोटीसी दो रेखायें टेढ़ी होकर तर्जनी अँगुली पर्यन्त यदि चली जावें तो वह प्राणी वडे शोचका करनेवाला होकर संपत्तियों से हीन होता हुआ अपने हठतादोष से मौत को पाता है ॥ ६ ॥

३ संभोगशाखा गुरुगा गभीरा स्वत्पस्वरूपा कुटिला विभाति ।

तदा ह्यपस्मारयुतो मनुष्यो जलाजिनभीतो जडतामुपैति ॥ ७ ॥

संभोगरेखाकी शाखारेखा बृहस्पति के स्थान में पहुँचो गहरी व टेढ़ी होकर छोटेरूप गली होती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मिरगीरोग से संयुत होकर पानी व आगी म डरता हुआ जडता को पाता है ॥ ७ ॥

४ संभोगरेखा निजमध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना सख्ला विभाति ।

संभोगरेखा

मानी मनुष्यो ममतासमेतो मन्दाजिनरोगं लभते नितान्तम् ॥ ८ ॥

संभोगरेखा (अस्पदेशीय आयुरेखा) सीधी होकर अपने विचले भाग में छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मानी व ममता से संपत्र होकर हमेशा मन्दाजिनरोग को पाता है ॥ ८ ॥

संभोगरेखा

५ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखाविहीना शनिगा विभाति ।

दीपान्तरं याति नरस्तदानीं सम्भ्रान्तचित्तः परितो भ्रमेच ॥ ९ ॥

सुभोगरेखा (आयुरेखा=हार्टलाइन) ऊपरले भाग में शाखा से विहीन होती हुई शनैश्चर पर्यन्त पहुँचकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी संभ्रान्तचित्त होता हुआ दूसरे दीपको चला जाता है और चारों तरफ धूमता रहता है ॥ ९ ॥

६ काव्यालयचेचलिता सुरेखा पित्रोर्विभित्त्वा भजते सुभोगम् ।

सोयं नरो वह्निविदग्धगात्रो ह्यापोति मृत्युं सहसासमेतः ॥ १० ॥

शुक के स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा मात्ररेखा व पित्ररेखा को काटकर भोग रेखा को सेवती हो तो वह प्राणी बल से संपत्र होकर आगी से जली कायांवाला होता हुआ मौतको ही पाता है ॥ १० ॥

७ मातुः सुरेखा सख्ला गभीरा शाखासमेता यदि चोर्ध्वदेशे ।

१ सम्भ्रमत्रयमिच्छन्ति भयमुद्गेगमादरम् ॥

तदा जनो वैरिगणान्विजित्य विश्वासपात्रो विभुतामुपैति ॥ ११ ॥

माताकी रेखा सीधी व गहरी होकर यदि ऊपर ले भाग में शाखाओं समेत जावे तो वह प्राणी विश्वासशाली होकर वैरिगणों (शञ्चुसमूहों) को विजयकर विनाश को पाता है ॥ ११ ॥

८ वृद्धाङ्गुलेवै निकटे नखस्य रेखात्रयं चेत्सरलं विभाति ।

विश्वासशाली मनुजस्तदा स्यादेखाद्यं चेतु फलं तदेव ॥ १२ ॥

अँगूठे के नह के निकट देश में तीन रेखाओंवाला निशान सीधा होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी विश्वासपात्र होता है और यदि पूर्वोक्त निशान दो रेखाओंवाला प्रतीत होता हो तो फल वही होता है जो कि पहले कहा गया है ॥ १२ ॥

९ संभोगरेखाधरणं विभाति तिर्यक्स्वरूपं यदि युग्मरेखम् ।

तदा नरो रोगगणाभिभूतो रक्षातिसारं लभते रसज्ञः ॥ १३ ॥

संभोगरेखा (हार्टलाइन) के निचले भाग में प्राप्त हुआ दो रेखाओंवाला निशान देवरूपवाला होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी रोगसमूहों से व्याकुल होता हुआ रसज्ञाता होकर रक्षातिसार (पित्तातिसार में गर्भवस्तु के खाने से होता है) को पाता है ॥ १३ ॥

१० मातुः सुरेखा यदि नीचभागे शाखासमेता सरला विभाति ।

निर्वोधरूपो मनुजस्तदा स्यात्सत्येन हीनो ह्यनभिज्ञमुख्यः ॥ १४ ॥

माता की रेखा सीधी होकर यदि निचले भाग में शाखासमेत सोहती हो तो प्राणी सत्य से हीन होकर मूर्खों में मुखिया होता हुआ अवोधरूप से रहता है ॥ १४ ॥

११ पैत्री सुरेखा मणिवन्धहीना वक्रा सकोणा मिलिता जनन्याम् ।

दीर्घायुषं तं पुरुषं करोति पारुष्यहीनं परमार्थलीनम् ॥ १५ ॥

पिता की रेखा मणिवन्ध (क्रब्जे) से हीन, टेढ़ी व कोण समेत होकर मारेखा मिली हुई देखी जावे तो उस प्राणी को कठोरता से हीन व परमार्थ में लीन हुआ व उमरवाला बनादेती है ॥ १५ ॥

१२ स्वत्पा सुभाग्या कुटिला चकास्ति क्षुद्राविभिन्ना यदि मध्यदेशे ।

अत्पायुषं तं पुरुषं करोति ह्यानन्दहीनं वसुधाविहीनम् ॥ १६ ॥

भाग्यरेखा (ऊर्ध्वरेखा) छोटे रूपवाली व टेढ़ी होकर यदि विचले भाग में बोटी रेखाओं से कटी हुई देखी जावे तो उस प्राणी को आनन्द से हीन व वसुधा विहीन बनाकर अत्पायु करती है ॥ १६ ॥

१३ भाग्या सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे शाखासमेता जननीं प्रयाति । प्राप्त
तेला
तदा नरो रोगचयाभिभूतो भोगाभिभूतो भयतासुपैति ॥ १३ ॥

भाग्यरेखा (फेटलाइन) यदि ऊपर ले भाग में शाखाओं समेत होती हुई मात्रेरेखा के पास जावे या सामने ही रहे तो वह प्राणी रोगसमूहों से पीड़ित व भोगों से व्यकुल हुआ भय (डर) समूह को पाता है ॥ १३ ॥

१४ काव्यालये चेद्विशदं विभाति भिन्नोर्ध्वभागं गुणितस्य चिह्नम् ।

सोयं जनः स्याद्विनिताविलासी हासी विघासी च सदा सुखाशी ॥ १४ ॥

शुक्र के स्थान में गुणित X का निशान साफ होकर ऊपरले भाग में कटा हुआ यदि X शोहता हो तो वह प्राणी विनिताओं में विलास करता व हँसता व बहुत खानेवाला होता हुआ हमेशा सुख की आशावाला होता है ॥ १४ ॥ (देखो चित्र नं० ३५)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ प्रदेशनीभूमियुगे^२ परुषके धनाख्यचिह्नं विशदं विभाति ।

तदा नरः स्वं लभतेबलाया नार्या यदा चेत्कुलया भवेत्सा ॥ १५ ॥

तर्जनी अँगुली की पहली व दूसरी पोर में यदि धन का + निशान साफ होकर शोहता हो तो वह प्राणी किसी त्वी के पास से धन को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान त्वी के करतल में प्रतीत हो तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ १५ ॥

२ अनामिकामध्यमिकासुमूले रेखाचतुष्कं यदि भाति स्वल्पम् ।

दाता दयालुर्मनुजस्तदा स्याद्विश्वासशाली विषयैर्विरक्तः ॥ २० ॥

अनामिका व मध्यमा अँगुली की मूल में छोटासा चार रेखाओंवाला निशान यदि शोहता हो तो वह प्राणी दाता व दयावान होकर विश्वासपात्र होता हुआ भोगों से वेरक्त रहता है ॥ २० ॥

३ मन्दालयाच्चलिता सुरेखा गम्भीररूपा समुपैति सूर्यम् ।

पापाधिकारी पुरुषस्तदा स्यात्पारुष्ययुक्तः पशुतुल्यबुद्धिः ॥ २१ ॥

शनैश्चर के स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा गहरी होकर यदि सूर्यपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी पापाधिकारी होकर कठोरता से संयुक्त होता हुआ पशुकी समान बुद्धिवाला होता है ॥ २१ ॥

४ सौम्यालयान्ताच्चलिता सुरेखा कौटिल्यरूपा यदि याति मन्दम् ।

मन्दस्वभावो धृण्या समेतः पापे प्रवृत्तः पुरुषोधमः स्यात् ॥ २२ ॥

बुधके स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा टेढ़ी होकर यदि शनैश्चरपर्यन्त व जावे तो वह प्राणी मन्दस्वभाववाला व वृणा (धिन) से संयुत होकर पाप में पराहोताहुआ निनिदत होता है ॥ २२ ॥

५ गुर्वालयस्थं विशदं विभाति रेखात्रयं चेत्सरलस्वरूपम् ।

सोयं जनो मस्तकघातमेति राज्याधिकारी रमणीविहारी ॥ २३ ॥

बृहस्पति के स्थान में टिकाहुआ साफ व सीधा होकर तीन रेखाओंवाला नियदि सोहता हो तो वह प्राणी किसी महाराजा की राज्य में अधिकारी होकर रमण्यविहार करता हुआ मस्तक में चोट चपेट को पाता है ॥ २३ ॥

६ सौम्यालये चेत्सरला सुरेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति ।

मान्यो वदान्यो मनुजस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्सुरता भवेत्सा ॥ २४ ॥

बुधके स्थान में सीधी, गहरी व साफ होकर शोभायमान रेखा यदि सोहती हो वह प्राणी मान्य होकर वदान्य (बड़ादानी) या बोलनेवाला होता है और यदि पूरे रेखा त्री के करतल में प्रतीत हो तो वह बड़ी रमनेवाली होती है ॥ २४ ॥

७ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे गम्भीररूपा भगिनीसमेता ।

तदा नरः स्याद्दृढगात्रयष्टिः संभोगशाली सुर्पमासमेतः ॥ २५ ॥

संभोगरेखा (हार्टलाइन) गहरी होकर यदि निचले भागमें भगिर्विरेखा सम्रतीत होवे तो वह प्राणी मज्जवृत कायावाला होकर बड़ा भोगी होता हुआ परमण्डल वाला होता है ॥ २५ ॥

८ संभोगरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना कुजगा विभाति ।

कामातुरः कार्यरतो मनुष्यो ब्रीडाविहीनो वनितापुर्वैति ॥ २६ ॥

मङ्गल के स्थान में पहुँची संभोगरेखा यदि चिचले भागमें छोटी छोटी रेखाओं से हुई सोहती हो तो वह प्राणी कामातुर व कार्य में परायण होताहुआ निर्लज्ज हो वनिता (लुगाई) को पाता है ॥ २६ ॥

९ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वदेशे मातापितृभ्यां सहिता सकोणा ।

सत्येन हीनो विपदा समेतः संकष्टशाली मरणं प्रयाति ॥ २७ ॥

संभोगरेखा यदि ऊपरले भाग में कोणसमेत होकर मातृरेखा व पितृरेखा से कुर्दृ देखी जावे तो वह प्राणी भूठा व विपदा से घिराहुआ महाकष का भोगनेवा होकर मौतको पाता है ॥ २७ ॥

१० अङ्गष्टशाखानिकटे विभाति रेखात्रयं रेखयुगेन भिन्नम् ।

धूर्तः कुशीदी मनुजो मिथश्चेद्धिन्म सृतिं वैत्यधनी सचकम् ॥ २८ ॥

अँगूठे की शाखाओं के समीप ऊपरल भागमें तिरीछी दो रेखाओं से कटाहुआ तीन खाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी जुआरी होकर व्याजखोर होता है और यदि पूर्वोक्त निशान परस्पर रेखाओं से कटाहुआ देखाजावे तो वह प्राणी मौत को आता है और यदि पूर्वोक्त निशान चक्राकार देखाजावे तो वह धनरहित होता है ॥ २८ ॥

११ शुकालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं त्रिशूलानुमितं विभाति ।

सोयं नरो वह्निविदउधगात्रो यज्ञादिकार्यं कुरुते नितान्तम् ॥ २९ ॥

शुक के स्थान में त्रिशूल के समान निशान साफ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी आगीसे जलेहुए गात्रवाला होकर हमेशा यज्ञादि कार्यों को करता है ॥ २९ ॥

१२ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशादेखा गभीरा समुपैति सौम्यम् । *भाष्यटेला*
सोयं नरः स्याद्विनयी जयी च संक्षीणचेता यदि कर्तिता स्यात् ॥ ३० ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई रेखा गहरी होकर यदि बुध पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी विनयी होकर वैरियों का जीतनेवाला होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा कटीहुई प्रतीत हो तो वह क्षीणचित्तवाला होता है ॥ ३० ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वाज्या सुरेखा यदि याति शौरिम् । *भाष्यटेला*
औत्करण्ड्ययुक्तो मनुजस्तदा स्यादेखा नता चेत्कलताविशेषः ॥ ३१ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई भाष्यरेखा (फेटलाइन) यदि शनैश्चर पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी उत्करण्डा से संयुक्त होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा लचीहुई प्रतीत हो तो विशेष उत्करण्डवाला होता है ॥ ३१ ॥

१४ अङ्गष्टमूले विशदस्वरूपं वज्रानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं नरः स्यात्कुविचारशाली ह्याचौरहारी व्यभिचारकारी ॥ ३२ ॥

अँगूठे की पूलमें वज्र के समान निशान साफ होकर यदि सोहता हो तो वह बुरे विचार विचारनेवाला व आचारका हरनेवाला होकर व्यभिचारका करनेवाला होता है ॥ ३२ ॥

५ पित्रोः सुमध्ये परिदृश्यमानं वस्वङ्गतुत्यं यदि भाति चिह्नम् ।

दुःखाकरः स्यान्मनुजो जनानामुद्वन्धतो मृत्युमुखं प्रयाति ॥ ३३ ॥

१ धूर्तेऽक्षदेवी कितयोऽक्षधूर्तो धूतकृत्समा, इत्यमरः २ आचाराज्ञभते द्यायुराचारादीप्ति-
मज्जाः । आचाराज्ञनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणमिति मनुः ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के बीचमें देखाहुआ आठअङ्क के समान निशान यदि सो हो तो वह प्राणी मनुष्योंके लिये दुःखकारी होता हुआ फांसी से मौत को पाताहै ॥ ३६ ।।
(देखो चित्र नं० ३६)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितफरतलफलमाह—

१ मध्याङ्गलेवै प्रथमे परुष्के चिह्नं त्रिरेखं यदि वेदभिन्नम् ।

औत्करण्थयुक्तो मनुजस्तदा स्यादौदास्यपूर्णो नितरामुदारः ॥ ३७ ॥

मध्यमा अँगुली की पहली पोर में तिरीछी चार रेखाओं से कटा हुआ सीधी रेखाओंवाला निशान यदि भासमान होता हो तो वह प्राणी उत्करण से संयुक्त कर उदासीनता से पूर्ण रहता हुआ बहुतही उदार होता है ॥ ३४ ॥

२ प्रदेशनीचन्द्रमिते परुष्के वक्रं त्रिरेखं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं नरो धर्मपरो नितान्तं धन्यो धरित्र्यां धनतामुपैति ॥ ३५ ॥

तर्जनी अँगुली की पहली पोर में टेढ़ा होकर तीन रेखाओंवाला निशान यदि होता हो तो वह प्राणी हमेशा वर्ष में परायण रहता हुआ पृथ्वीमण्डल में धन्य हो धनसमूहों को पाता है ॥ ३५ ॥

३ मातुः सुरेखाधरतश्चलन्ती भिन्ना सुरेखा दिनपं प्रयाति ।

द्रव्यादिहेतोः पुरुषान्निहन्ति इस्वा यदा चेत्तनुघातमेति ॥ ३६ ॥

मातृरेखा के निचले भाग से चली हुई रेखा छोटी रेखा से कटकर सूर्यपर्यन्त च जावे तो वह प्राणी द्रव्यादिकों के लिये पुरुषों का वध करता है यानी दाकेजनी करत और यदि पूर्वोक्त रेखा छोटीसी प्रतीत होकर शुद्धरेखाओं से कटी फटी देखी जावे वह प्राणी अपने शरीर में चोट चपेट को पाता है ॥ ३६ ॥

४ संभोगरेखानिकटे विभाति भग्नीसुरेखा वितता गभीरा ।

सोयं जनः स्याद्विनिताविलासी संमोदराशी वहुधा प्रहासी ॥ ३७ ॥

सुभोगरेखा के समीप भग्नीरेखा फैली व गहरी होकर यदि सोहती हो तो वह प्रमदाओं में विलास करनेवाला होकर वडे आनन्द की राशि होता हुआ प्रायः हँसनेवाला होता है ॥ ३७ ॥

५ संभोगरेखा यदि नीचभागे शुद्धाविभिन्ना कृशतासमेता ।

वक्षस्थलाघातमुपैति जन्तुर्जायाविरोधी जनतासमेतः ॥ ३८ ॥

१ दिनपं दिनपर्ति सूर्यमितियावत् ॥

संभोगरेखा (अस्मदेशीय आयुरेखा) यदि निचले भाग में पतली होकर छोटी छोटी खाओं से कटी हुई सोहती हो तो वह प्राणी लुगाई (अपनी प्यारी) का विरोधी होकर ननसमूहों से संपर्ज होता हुआ छाती में चोट चेपट को पाता है ॥ ३६ ॥

३ भोगा गभीरा मिलिता सुवप्रे तन्मध्यगा स्वरूपतरा च माता ।

रोगाभिभूतो मनुजस्तदानीं भूतादिदोषैरपमृत्युपैति ॥ ३६ ॥

भोगरेखा “ ऊपर ले भाग में ” यदि गहरी होकर पितृरेखा में भिली हुई देखी जावे और उन दोनों रेखाओं के बीच में पहुँची हुई मातृरेखा छोटीसी प्रतीत होवे तो वह प्राणी रोगों से पीड़ित होता हुआ भूतादि दोषों से अकालमौत को पाता है ॥ ३६ ॥

४ पितुः सुशीर्णेऽपरिगं विभाति तारानुरूपं युगलस्वरूपम् ।

तदा नरोऽसौ यशसा समेतो मान्यो वदान्यो वलतासमेतः ॥ ४० ॥

पितृरेखा के बत्थे के ऊपरले भाग में प्राप्त हुए नक्षत्र (नखत) के समान आकार लाले दो निशान यदि सोहते हों तो वह प्राणी चली व यशस्वी होकर माननीय होता हुआ दानी होता है ॥ ४० ॥

५ अङ्गुष्ठशाखोपरिगं विभाति रेखाचतुष्कं यदि स्वरूपम् ।

श्लेष्मादितोऽसौ मनुजः कृशाङ्गो भामाभिभूतो अमतामुपैति ॥ ४१ ॥

अँगुष्ठे की शाखा रेखा के ऊपरले भाग में प्राप्त हुआ छोटासा चार रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी कफरोग से पीड़ित व दुर्बल देहवालों होकर दुग्धाइयों से अनादृत होता हुआ अमसमूहों को पाता है ॥ ४१ ॥

६ भोगाधरस्थं विशदं विभाति चिह्नं त्रिकोणं यदि दृश्यमानम् ।

कान्ताभिलाषी कलही मनुष्यः प्राप्नोति मृत्युं द्विष्टः करेण ॥ ४२ ॥

भोगरेखा के निचले भाग में टिका व देखा हुआ त्रिकोण का निशान साफ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी कामिनी की अभिलाषा करता हुआ लड़ाई लड़नेवाला दोकर दुश्मन के हाथ से मौत को पाता है ॥ ४२ ॥

७ पितुः सुरेखोपरिगं चकास्ति चिह्नं त्रिशूलानुमितं यदा चेत् ।

तदा नरो वह्निविदउधगात्रो व्यासक्लचित्तो व्ययतामुपैति ॥ ४३ ॥

पितृरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्त हुआ त्रिशूल के समान निशान यदि सोहता हो तो चमकता हो तो वह प्राणी आगी से जले हुए अङ्गवाला होकर घबड़ाये मनवाला होता हुआ घने खर्च को पाता है यानी बड़ा खर्चीला होता है ॥ ४३ ॥

११ पैत्री समुत्था विशदा गभीरा रेखा यदा भ्रातृपदं प्रयाति ।
सोयं जनः शत्रुपराजितः स्यात्संकर्तिता चेदरिवृन्दमुक्तः ॥ ४४ ॥

पितृरेखा से उठी रेखा साफ व गहरी होकर यदि भ्रातृस्थान पर्यन्त पहुँच जावे वह प्राणी शत्रुओं से पराजित होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा कटी हुई देखी जावे वह प्राणी वैरिसमूहों से छूट जाता है ॥ ४४ ॥

१२ चन्द्रालयस्थं विशदस्वरूपं तिर्यक्त्रिरेखं यदि भाति चिह्नम् ।
सोयं जनः स्याज्जलयानयायी मायाविधायी ममतापहायी ॥ ४५ ॥

चन्द्रमा के स्थान में इका हुआ तिरीछा तीन रेखाओंवाला निशान साफ होकर य सोहता हो तो वह प्राणी माया का विधान करनेवाला होकर ममता को त्यागता हु जहाज की सवारी से गमन करता है यानी जलपथ में परिभ्रमण करता है ॥ ४५ ॥

१३ भाज्यासमुत्था विशदा सुरेखा वक्त्रा गभीरा मिलिता जनन्याम् ।
जङ्घास्थभङ्गं लभते जनो वै जाज्वल्यमानो ज्वरजार्तियुक्तः ॥ ४६ ॥

भाज्यरेखा से उठी हुई साफ शोभायमान रेखा टेढ़ी व गहरी होकर मातृरेखा मिल जावे यानी मिली हुई प्रतीत होवे तो वह प्राणी ज्वर से उपजी पीड़ा से संयुक्त होकर बहुत ही जलता हुआ जङ्घा की हड्डी के भङ्ग को पाता है यानी उस प्राणी की जां की हड्डी टूट जाती है ॥ ४६ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वाग्या सुरेखा समुपैति शौरिम् ।

मणिबन्ध चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदा स्यादुष्टस्वभावो विगतप्रभावः ॥ ४७ ॥
मणिबन्ध (क्रब्जे) से उठी हुई भाज्यरेखा यदि शनैश्चरपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी दुष्टस्वभाववाला होता हुआ विशेषता से गतप्रभाववाला होकर चौर्कर्म परायण रहता है यानी चोरी करता है ॥ ४७ ॥

१५ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्वक्रा सुरेखावरजं प्रयाति ।

तदा जनो बन्धुगणाभिभूतः प्राप्नोति दुःखं देयितासमेतः ॥ ४८ ॥

मणिबन्ध (क्रब्जे) से उठी हुई शोभायमान रेखा टेढ़ी होकर यदि भ्रातृस्थान चलीजावे तो वह प्राणी बन्धुगणों से अनाद्वत होता हुआ यानी क्षति को पाता हुआ भार्यासमेत दुःख को पाता है ॥ ४८ ॥ (देखो चित्र नं० ३७)

१ अमोषेभोवितं हृदयं देयितं ब्रह्मं प्रियमित्यमरः ॥

अथ पश्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुष्के वृत्तार्धचिह्नं विशदं विभाति ।

राज्याभियोगे नियतो नरः स्याद्विवादशाली विषये रतश्च ॥ ४६ ॥ वकील

कनिष्ठा अङ्गुली की पहली पोर में अर्धवृत्त का निशान साफ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी भगड़ालू होकर विषयों में रत होता हुआ राज्य के मुकदमा फैसल कराने में नियत रहता है यानी वैरिस्टर या वकील कहाता है ॥ ४६ ॥

२ सौम्यालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं द्विरेखं सरलं चकास्ति ।

बाहौ विघातं लभते मनुष्यो विद्याविवेकी प्रथितः पृथिव्याम् ॥ ५० ॥

बुधके स्थान में दो रेखाओं वाला निशान साफ व सीधा होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी विद्वान् व विवेकी होकर पृथ्वीमण्डल में विल्यात होता हुआ भुजाओं में चोट चेपट को पाता है ॥ ५० ॥

३ अनामिका मध्यमिकासुमध्ये वक्रा कुरेखा समुपैति सूर्यम् ।

जङ्घाभिघातं लभते जनो वै जञ्जप्यमानो जनतासमेतः ॥ ५१ ॥

अनामिका व मध्यमा के बीच में छोटी सी रेखा टेढ़ी होकर यदि सूर्य के स्थान को चली जावे तो वह प्राणी निन्दित को जपता हुआ जनसमूहों से सम्पन्न होकर जङ्घामें आघात (चोट) को पाता है ॥ ५१ ॥

४ मन्दालये चेद्विशदं विभाति गुणाख्यचिह्नं युगलस्वरूपम् ।

संपत्तियुक्ते मनुजस्तदा स्यात्सौभाग्यशाली सुषमासमेतः ॥ ५२ ॥

शनैश्चरके स्थान में दो गुणाके ×× निशान साफ होकर यदि सोहते हों तो वह प्राणी सम्पदाओं से संयुक्त होता हुआ सौभाग्यशाली होकर बड़ी शोभावाला होता है ॥ ५२ ॥

५ संभोगशाखा विशदा गभीरा संतर्जनीमूलगता विभाति ।

सोयं जनो मध्यमवित्तशाली संरक्षमध्या यदि वित्तपाली ॥ ५३ ॥

संभोगरेखा (हार्टलाइन) की शाखारेखा साफ व गहरी होकर भलीभांति तर्जनी अङ्गुली की मूल में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी साधारण धनी होता है और यदि पूर्वोङ्करेखा बीचमें लाल बर्णवाली होकर प्रतीत हो तो वह प्राणी बड़ा धनवान् होकर धनकी रखवारी करता हुआ खा नहीं सकता है ॥ ५३ ॥

६ वक्रा सुभोगा शनिगा विभाति क्षुद्राविभिन्ना यदि गर्तयुक्ता ।

लाभं विना ब्राम्यति दूरदेशे दारिद्र्ययुक्ते मनुजो भयार्तः ॥ ५४ ॥

सुभोगरेखा (असमैरीय आशुरेखा) टेढ़ी व शनैश्चर के स्थान में पहुँची व छोटी बैरेखाओं से कठी हुई गड़ह से संयुक्त होकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी दरिद्रता सम्भव होकर भयसे घबड़ाता हुआ लाभके विनाही दूरदेश में वूमता है ॥ ५४ ॥

७ संभोगरेखाधरणं चकास्ति चन्द्राङ्कनन्दाङ्कयुतं सुचिह्नम् ।

सोयं नरस्यान्नरधातकारी पापाधिकारी परवित्तहारी ॥ ५५ ॥

संभोगरेखा (हार्टलाइन) के नियते भागमें प्राप्तहुआ एकाङ्क व नवाङ्क से संयुत हो शोभायमान निशान यदि चयकता हो तो वह प्राणी पापोंका अधिकारी होकर पराक्रम का हरनेद्वारा होताहुआ मनुष्यों का वात करनेवाला होता है ॥ ५५ ॥

८ मातुस्मुरेखा यदि नीचभागे भग्नीसमेता कुटिला चकास्ति ।

गर्वी गुणज्ञो मनुजस्तदास्यादुष्टाशयश्रौर्यरतो नितान्तम् ॥ ५६ ॥

मातुरेखा निचले भागमें टेढ़ी होकर यदि भग्नीरेखा समेत सोहती हो तो वह प्राप्तुरेतलवाला व हमेशा चोरी करने में लगहुआ गुणों का ज्ञाता (जाननेवाला) हो घमएडी बना रहता है ॥ ५६ ॥

९ संभोगशाखा सरला गभीरा भग्नीसमेता गुरुगा विभाति ।

सोयं नरो धर्मपरो मनस्वी दानी सुमानी धनतासमेतः ॥ ५७ ॥

~~संभोगरेखा~~ संभोगरेखा (हार्टलाइन) की शाखारेखा सीधी, गहरी व भग्नीरेखा से संयुत हो वृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी धर्मपरायण, मनस्वी दानी व बड़ामानी होकर धनसमूहों से संपन्न होता है ॥ ५७ ॥

१० पितुः सुरेखोपरिं विशुद्धं चिह्नं द्विरेखं सरलं चकास्ति ।

तदा जनो वन्धुविरोधकारी व्यासक्षचितः प्रमदाविहारी ॥ ५८ ॥

पितुरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्तहुआ साफ व सीधा होकर दो रेखाओंवाला निर्यादि सोहता हो तो वह प्राणी वन्धुवर्गों से विरोधरखनेवाला होकर घबड़ाये मनवा होताहुआ प्रमदाओं में विहार करनेवाला होता है ॥ ५८ ॥

११ पैत्री सुवक्रा मिलिता सुमात्र्यां स्वल्पा गभीरा विशदा विभाति ।

आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो भग्नीसमेता यदि दीर्घमायुः ॥ ५९ ॥

पिताकी रेखा टेढ़ी, छोटी, गहरी व साफ होकर यदि मातुरेखा में मिली हुई सोहती हो तो वह प्राणी अल्पायु को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा भग्नीरेखा समेत देखी तो वह प्राणी दीर्घायु को पाता है यानी व्यानवे वर्धपर्यन्त जीता है ॥ ५९ ॥

२ चन्द्रालयचेचलिता सुरेखा वक्रा सशाखा यदि याति भाग्याम् ।

आरातिभीतः स्वजनैर्विहीनः क्रान्ता यदाचेन्मनुजो विजेता ॥ ६० ॥

चन्द्रमा के स्थान से चली हुई शोभायमान रेखा टेढ़ी व शाखासभेत होकर यदि भाग्य
वा (फेटलाइन) पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी वैरियों से डरता हुआ अपने बन्धुवर्गों
का राहित होता है यानी उस प्राणी के कुमुखीलोग शब्द होनाते हैं और यदि पूर्वोक्त रेखा
कसी रेखा से आतिक्रमण की जावे तो वह प्राणी वैरियों को विजय करता है ॥ ६० ॥

३ भाग्या समुत्था मणिवन्धदेशान्मध्ये विभिन्ना शनिगा विभाति । **मात्रप्रस्तुत**

मणिवन्ध (कङ्गे) से उठी भाग्यरेखा बीचमें कटी व शनैश्चर पर्यन्त पहुँची हुई दोहती हो तो वह प्राणी ज्वररोग से पीड़ित होकर बातव्याधि से संयुक्त होताहुआ नांवों में चोट चपेट को पाता है ॥ ६? ॥

३४ चन्द्राधरस्था कुटिला सुरेखा भाज्या विभित्त्वा यदि याति काव्यम् ।

कौतूहलासक्तमना मनुष्यः कल्याणयुक्तः सुभगः सुशीलः ॥ ६२ ॥

चन्द्रमा के निचले भागमें टिकी व टेढ़ी शोभायमान रेखा भाष्यरेखा (फेटलाइन) को काटकर शुक्रस्थान के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी खेलमें आसक्त मनवाला व खल्याण से संयुक्त होताहुआ बड़े ऐश्वर्यवाला होकर बड़ा शीलवान् कहाजाता है ॥६२॥

१५. पित्रोस्मुमध्ये विशदस्वरूपं शैलाङ्कतुल्यं यदि भाति चिह्नम् ।

दौर्जन्ययुक्तो मनुजो भलाक्तो ह्युद्बन्धतो सृत्युमुखं प्रयाति ॥ ६३ ॥

मातृरेखा व पितृरेखा के विचलेभाग में साफ स्वरूपवाला होकर सातके आंक कासा नेशन यदि सोहता हो तो वह प्राणी दुर्जनता से संयुक्त होकर मलसे भराहुआ फांसी मौतको पाता है यानी मौत के मुख में जाता है ॥ ६३ ॥ (देखो चित्र नं० ३८)

अथ पोदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

सौम्यालये चेद्विशदास्सवक्राः क्षद्रास्सरेखा बहुशो विभान्ति ।

चौर्ये प्रवृत्तो मनजस्तदा स्याच्चत्प्रभावश्चपलस्वभावः ॥ ६४ ॥

वुधके स्थान में साफ, टेढ़ी व छोटी होकर वहुतसी रेखायें यदि सोहती हों तो वहप्राणी
प्रभावबाला होकर चपल स्वभावबाला होता हुआ चोरी करने में लगा रहता है ॥६४॥

१८ चण्डांतमजस्थानगतं सुचिहं संमध्यभिन्नं वृजिनं द्विरेखम् ।

सम्पत्समेतो मनुजो विलासी सौभाग्यशाली मणिरत्नमाली ॥ ६५ ॥

शनैश्चर के स्थान में प्राप्त होकर टेढ़ा व दो रेखाओंवाला निशान यदि बीच में रेखा से कटा हुआ सा प्रतीत होवे तो वह प्राणी सम्पदाओं से सम्पन्न होता विलासी व सौभाग्यशाली होकर मणिरक्षोंकी मालावाला होता है ॥ ६५ ॥

३ संभोगरेखा यदि चोर्ध्वभागे क्षुद्राविभिन्ना गुरुगा विभाति ।

मस्ताभिघातं लभते मनुष्यो मानी मनीषी ममतासमेतः ॥ ६६ ॥

संभोगरेखा (हार्टलाइन) ऊपरले भाग में छोटी छोटी रेखाओंसे भिन्न होकर वृहत के स्थान में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मानी व बुद्धिमान होकर ममत संपन्न होता हुआ मस्तक में आघात को पाता है ॥ ६६ ॥

४ प्रदेशिनीमूलगतं सुचिह्नं ध्वजस्वरूपं विशदं विभाति ।

सोयं जनः सज्जनसङ्कारी धर्मी धरित्र्यां धनताविधारी ॥ ६७ ॥

तर्जनी अँगुलीकी मूलमें प्राप्त हुआ ध्वजा (झरडी) के समान रूपवाला शोभाय निशान साफ होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी सज्जनों का संग करनेवाला है पृथ्वीमण्डल में धर्मी होता हुआ धनसमूहों का धारनेवाला होता है ॥ ६७ ॥

५ मातुः सुरेखा यदि चोर्ध्वभागे संभिन्नशीर्षी गुरुगा विभाति ।

शोकाकुलस्यान्मनुजो गदातो गम्भीरभावो विगताभिमानः ॥ ६८ ॥

माताकी रेखा (हार्टलाइन) ऊपरले भाग में भलीभांति कटे शीशवाली होकर स्पति के स्थान में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी रोगों से पीड़ित है गम्भीर आशयवाला व निरभिमानी होता हुआ शोक से व्याकुल होता है ॥ ६८ ॥

६ भोगा सुरेखा यदि शृङ्खलाङ्गा गम्भीररूपा गुरुगा विभाति ।

भार्याविहीनो मनुजस्तदार्नीं गत्वा विदेशं समुपैति मृत्युम् ॥ ६९ ॥

भोगरेखा (हार्टलाइन) संकलके समान अङ्गवाली व गहरी होकर वृहस्पति स्थान में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी लुगाई से रहित होता हुआ परदेश जाकर मौतको पाता है ॥ ६९ ॥

७ संभोगमात्रोर्यदि मध्यदेशे गुणाख्यचिह्नं विपुलं विभाति ।

चिन्तातुरः स्यान्मनुजो मनस्वी पदाभिलाषी श्रमतासमेतः ॥ ७० ॥

संभोगरेखा व मातृरेखा के विचले भाग में बड़ाभारी गुणकासा निशान यदि सो हो तो वह प्राणी चिन्ताओं से आतुर व मनमौजी होकर पदकी अभिलाषा करता बड़ा परिश्रमी होता है ॥ ७० ॥

मातुःसुरेखा यदि नीचभागे भिन्ना सुभोगाभिसुखं प्रयाति ।

आयुष्यमल्पं लभते मनुष्यो ह्याचारहीनो व्यभिचारशीलः ॥ ७१ ॥

माताकी रेखा यदि निचले भाग में कटी हुई सुभोगरेखा के सामने चली जावे तो वह ऐ अनाचारी होता हुआ व्यभिचारी होकर अलपायु को पाता है ॥ ७१ ॥

भाग्यासुपित्रोर्यदि मध्यदेशे भिन्ना सुरेखा कुटिला विभाति ।

विश्वासघाती मनुजो विवादी दुष्टस्वभावो नृपदण्डमेति ॥ ७२ ॥

भाग्यरेखा व पितृरेखा के बिचले भाग में कटी हुई रेखा टेढ़ी होकर यदि सोहती हो वह प्राणी विश्वासघाती व विवादी होकर बुरे स्वभावबाला होता हुआ राजदण्ड पाता है ॥ ७२ ॥

० मातुसुरेखाधरणं विभाति मध्ये विभिन्नं कुटिलं द्विरेखम् ।

सोयं महोच्चात्पतितो मनुष्यो मानी महौजा मदनातुरश्च ॥ ७३ ॥

मातृरेखा के निचले भाग में प्राप्त व वीच में कटाहुआ दो रेखाओंबाला निशान टेढ़ा कर यदि सोहता हो तो वह प्राणी मानी व महावली होकर कामातुर होता हुआ बड़े स्थान से लुढ़कपड़ता है यानी गिरकर बड़ी चोट को पाता है ॥ ७३ ॥

१ पैत्री सुवक्रा मणिबन्धहीना वृत्तार्धमध्या गुरुगा विभाति ।

सोयं जनो विन्दति नेत्रघातं नारीविहीनो नयतासमेतः ॥ ७४ ॥

पिताकी रेखा टेढ़ी व मणिबन्ध (कब्जे) से छुटी तथा मध्य में अर्धवृत्त से संयुक्त कर बृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी स्त्री से विहीन कर नीतिसमूहों से संपन्न होता हुआ नेत्रों में चोटको पाता है ॥ ७४ ॥

२ वृद्धाङ्कुलेवै निकटे नखस्य वेदाङ्कतुल्यं यदि भाति चिह्नम् ।

चौर्ये रतः स्यान्मनुजः कुसङ्गी धर्मादिभङ्गी भयदो जनानाम् ॥ ७५ ॥

अङ्गूठे के नह (नाखून) के निकट चारके आंक कासा निशान यदि सोहता हो तो प्राणी बुरे लोगों का साथी वन धर्मादिकों को भङ्ग करता हुआ जनोंको भयदायक कर चोरी करने में परायण रहता है ॥ ७५ ॥

३ वृद्धाङ्कुलेवै द्वितये परुषके वक्रं द्विरेखं विरलं विभाति ।

विज्ञानहीनो मनुजो बलिष्ठो बालादिलीनो मृतिमेति पाशात् ॥ ७६ ॥

अगूठे की दूसरी पोर में टेढ़ा होकर दो रेखाओंबाला निशान विरल होता हुआ यदि होता हो तो वह प्राणी विज्ञान से विहीन व बलवान् होकर बालादिकों में लीन होता हुआ फांसी से मौत को पाता है ॥ ७६ ॥

१४ भाग्याचलन्ती मणिवन्धदेशात्सञ्ज्ञमस्ता समुपैति सूर्यम् ।
सौख्यान्वितोऽसौ सुभगो मनुष्यो व्यापारशाली वसुधामुपाली॥७

मणिवन्ध (कब्जे) से चली हुई भाग्यरेखा (फेटलाइन) छुट्टेखाओं से कटे गये वाली होकर सूर्यके पास पहुँच जावे तो वह प्राणी सुखता से संपन्न व बड़ा भाग्य होता हुआ व्यापारी (रोजगारी) होकर पृथ्वी का पालक होता है ॥ ७७ ॥

१५ वक्रा सुवप्राधरतश्चलन्ती छुट्टासमेता यदि याति मात्रीम् ।

संभ्रान्तमस्तो मनुजो भयार्तो ह्युद्धिग्नवित्तो विफलं विवेति ॥ ७८ ॥

पितृरेखा के निचले भागसे चली हुई छोटीरेखाओं समेत रेखा टेढ़ी होकर मातृरेखा समीप पहुँच जावे तो वह प्राणी डरा हुआ भलीभांति घूमे शीशदाला व ज्वेदिलवा होकर सबकामों में विफलता को पाता है ॥ ७८ ॥

१६ चन्द्रालयस्थं सरलं ध्वजाङ्कं तिर्यग्विभिन्नं ग्रथितं मिथश्चेत् ।

दुष्टस्वभावोऽधमतासमेतो ह्याम्रोति मृत्युं जनतापकारी ॥ ७९ ॥

चन्द्रमा के स्थान में टिका व सीधा होकर ध्वजा (झण्डी) कासा निशान व तिरीछा कटा व परस्पर गुथाहुआ प्रतीत होवे तो वह प्राणी दुष्टस्वभाववाला व नीचपनी सम्बन्ध होताहुआ जनसमूहों का अपकारी होकर मौतको पाता है ॥ ७९ ॥ (देखोचित्रनं०

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह —

१ भोगासमुत्था सरला गभीरा रेखा यदैका यदि याति चान्द्रिम् ।

ज्ञानी गुणी स्यादुपदेशदाता मानी महोजाः परवृत्तगोसा ॥ ८० ॥

भोगरेखा (हार्टलाइन) से उठी हुई सीधी व गहरी होकर एकरेखा यदि वुथपन्न चलीजावे तो वह प्राणी ज्ञानी, गुणी व उपदेशदाता होकर मानी व बलवान् होताहुआ परकथा का प्रकाशक नहीं होता है यानी सर्वों के चरितों को छिपाये रहता है ॥ ८० ॥

२ संभोगरेखोपरिगा गभीरा वक्रा सुरेखा समुपैति सूर्यम् ।

सोयंजनो विज्ञतमो गुणज्ञो नामी सुधामी धनतासुपैति ॥ ८१ ॥

संभोगरेखा (आयुरेखा) के ऊपरले भागमें पहुँची हुई गहरी व टेढ़ी होकर शोभायरेखा यदि सूर्य के समीप चलीजावे तो वह प्राणी महाज्ञाता व गुणज्ञाता होकर न व सुधामी होताहुआ धनसमूहों को पाता है ॥ ८१ ॥

३ पैत्रीसमुत्था विशदा सुरेखा स्वल्पा गभीरा यदि याति मन्दम् ।

साँव्रत्सरो ना खलु पारदर्शी दैवज्ञवर्यो यदि दीर्घगा चेत् ॥ ८२ ॥

पिताकी रेखासे उठी हुई साफ, छोटी व गहरी होकर शोभायमान रेखा यदि शनैश्चर-
पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी ज्योतिर्वेत्ता होकर निश्चय कर पारदर्शी होता है और यदि
पूर्वोक्त रेखा भारी देखीजावे तो वह प्राणी दैवज्ञों में प्रधान कहाता है ॥ ८२ ॥

४ पैत्रीसमुत्थं विशदं गभीरं केतुस्वरूपं गुरुगं विभाति । देवेन्द्रेस्मृत्या

शास्ता जनानां मनुजस्तदा स्याहाता दयालुर्दयितासमेतः ॥ ८३ ॥

पैत्रीरेखा से उठा साफ व गहरा होकर ध्वजा (झण्डी) के समान निशान वृहस्पति
के स्थान में पहुँचाहुआ यदि सोहता हो तो वह प्राणी प्राणप्यारी समेत दयालु व दाता
होकर सर्वजनों का शासन करनेवाला होता है ॥ ८३ ॥

५ देवेन्द्रवन्द्यालयं विभाति चिह्नं त्रिकोणं विशदस्वरूपम् । △

सोयं जनः सर्वजनप्रधानः प्रख्यातैर्कीर्तिं लभते नितान्तम् ॥ ८४ ॥

वृहस्पति के स्थान में पहुँचाहुआ त्रिकोण का निशान यदि साफ होकर सोहता हो
तो वह प्राणी सर्वजनों में प्रधान होताहुआ हमेशा विख्यात कीर्तिको पाता है यानी किसी
रियासत का एजएट होता है ॥ ८४ ॥

६ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे वक्रा द्विशाखा खलु मध्यमान्ता ।

विंशाब्दमायुर्लभते मनुष्यः शाखात्रयं घेत्खगुणाब्दमायुः ॥ ८५ ॥

भोगरेखा (हार्टलाइन) निचले भागमें दो शाखाओंवाली होकर यदि टेढ़ी होतीहुई
मध्यमातक चलीजावे तो वह प्राणी वीस वर्ष की आयुको पाता है और यदि पूर्वोक्तरेखा में
तीन शाखायें प्रतीत होवें तो तीस वर्षकी आयुको पाता है ॥ ८५ ॥

७ मातुः सुरेखा यदि नीचभागे शूलाख्यचिह्नेन युता यदा स्यात् । मातृरेखा

सोयं विनीतो मनुजो महात्मा यज्ञादिधर्माङ्गयुतो जनानाम् ॥ ८६ ॥

माताकी रेखा निचले भागमें त्रिशूल के समान निशान से संयुक्त होकर यदि प्रतीत
होते तो वह प्राणी शिक्षित व मनुष्यों में महात्मा होकर यज्ञादिधर्मसम्बन्धी अङ्गों से
युत होता है ॥ ८६ ॥

८ मात्री सुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां संमध्यमिन्ना शशिगा विभाति ।

व्याजी विवादी मनुजो विलासी सम्पत्तिराशी च महाप्रकाशी ॥ ८७ ॥

पिताकी रेखा में मिली व बीचमें कटी हुई माता की रेखा यदि चन्द्रमा के स्थान
पहुँचकर सोहती हो तो वह प्राणी छली, बहसी व विलासी होकर संपदाओं की
शिवाला होताहुआ महाप्रकाशी होता है ॥ ८७ ॥

६ पैत्रीसमुत्था मिलिता सुमात्र्यां रेखा सकोणा कृशगा विभाति ।
५८ विश्वासशाली मनुजो विशोकी वेदान्तभाषी विदुपां वरेयः ॥ ८
 पिताकी रेखा से उठी व भाताकी रेखा में मिलीहुई रेखा त्रिकोण समेत होकर विश्वासी सोहती हो तो वह प्राणी विश्वासी व विशोकी होकर वेदान्तवेत्ता होताहुआ विश्वासी में प्रधान कहाता है ॥ ८८ ॥

९० मातुस्सुरेखोपरिगा सुभोगा संभुग्नमध्या समुपैति शौरिम् ।

अल्पायुपं तं पुरुषं करोति सौभाग्यवन्तं बहुभोगवन्तम् ॥ ८६ ॥

मातृरेखा के ऊपर ले भागमें प्राप्तहुई भोगरेखा (हार्टलाइन) बीचमें टेढ़ी शैनैश्चर्पयन्त पहुँचजावे तो उस प्राणी को सौभाग्यवान् व महाभोगवान् बनाकर अत्यन्त देखती है ॥ ८६ ॥

९१ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशात्सार्प्यं द्विरेखं जननीमुपैति ।

दौर्भाग्ययुक्तो मनुजो दुराशो दीनो दरिद्रो दुरितान्युपैति ॥ ९० ।

मणिबन्ध (कब्जे) से उठा हुआ सर्प के समान दोरेखाओंवाला निशान यदि रेखा के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी दुरी आशावाला, दीन व दरिद्री होकर दौर्भाग्य संयुत होता हुआ पापों को पाता है ॥ ९० ॥

९२ वक्रा सुपैत्री मिलिता जनन्यां संमध्यभिन्ना भगिनीसमेता ।

सोयं जनो विन्दति देहघातं करण्डूसमेतो ज्वरजार्तियुक्तः ॥ ९१ ॥

माताकी रेखा में मिली पिताकी रेखा टेढ़ी होकर बीच में कटीहुई भगिनीसमेत देखी जावे तो वह प्राणी खम्मुली से संपन्न होकर ज्वर से उपजी पीड़ा से संयुक्त होता हुआ देखी चोट चेपेट को पाता है ॥ ९१ ॥

९३ रेणुा समुत्था मणिबन्धदेशाद्का गभीरा पितरं प्रयाति ।

संतीक्षणबुद्धिर्मनुजः सुकर्मा सौभाग्यशाली सुखतामुपैति ॥ ९२ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई रेखा टेढ़ी व गहरी होकर पितृरेखा के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी भलीभांति तीव्र बुद्धिवाला व शोभन कर्मोवाला होकर सौभाग्यशाली होता हुआ सुखसमूहों को पाता है ॥ ९२ ॥

९४ अङ्गष्टपूले विशदं सुवक्रं रेखाचतुष्कं यदि याति काव्यम् ।

सोयं मनुष्यः प्रथमे वयस्के प्राप्नोति सौख्यं शुभतासमेतः ॥ ९३ ॥

अँगूठे की मूलमें चार रेखाओंवाला निशान साफ व टेढ़ा होकर यदि शुक्रके पास बलाजावे तो वह प्राणी शुभसमूहों से संपन्न होकर पहली उमर में सौख्यको पाता है ॥६३॥
(देखो चित्र नं० ४०)

अथ षोडशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सुतर्जनीपर्वयुगे विभाति तिर्यग्विभिन्नं सरलैकरेखम् ।

सोयं जनः स्याद्बुधवर्गबन्धुः प्रधानलोकानुगतः सहिष्युः ॥ ६४ ॥

तर्जनी अँगुली की पहिली व दूसरी पर्व में तिरीछी रेखासे कटाहुआ सीधी एक रेखा बाला निशान यानी धनका चिह्नसा प्रतीत हो तो वह प्राणी पहिंडतसमूहों का वान्धव होकर प्रधानलोगों का अनुगामी होता हुआ क्षमाशील होता है ॥ ६४ ॥

२ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुषके संकर्तिता वै यति सन्ति रेखाः ।

तावत्प्रमाणा मनुजस्य नूनं नश्यन्ति गर्भा गदपीडिता वा ॥ ६५ ॥

कनिष्ठा अँगुली की पहिली पोर में जितनी रेखायें कटीहुई प्रतीत हों तो उस प्राणी के उतनेही गर्भ निश्चय कर नष्ट होजाते हैं याकि रोगसे पीड़ित होते हैं ॥ ६५ ॥

३ सौम्यालये चेत्सरलं त्रिरेखं तिर्यग्विभिन्नं श्रुतिसंमिताभिः ।

नार्या पिशाच्या परिवच्छितो ना दारिद्र्यदुःखाभिभवं प्रयाति ॥ ६६ ॥

बुधके स्थान में चार रेखाओंसे तिरीछा कटाहुआ तीन रेखाओंवाला सीधा निशान यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी पिशाचरूपिणी नारी से छला हुआ दारिद्र्य व दुःख के तिरस्कार को पाता है ॥ ६६ ॥

४ सूरालये चेद्विशदं विशालं विभाति चिह्नं सरलं द्विरेखम् ।

दाराभिभूतो मनुजो मदान्धो ज्ञानेन मानेन धनेन हीनः ॥ ६७ ॥

सूर्य के घर में साफ सीधा विशाल दो रेखाओंवाला निशान यदि प्रतीत होता हो वह प्राणी भार्या से अनादृत होताहुआ मदान्ध होकर ज्ञान, मान व धन से हीन होनाता है ॥ ६७ ॥

५ भाग्या सुरेखा समुपैति सौरिं सञ्चिन्नमस्ता सरला गभीरा ।

कष्टार्दिताङ्गो मनुजस्तदार्नीं कारालयं याति करालरूपः ॥ ६८ ॥

भाग्यरेखा (फेटलाइन) गहरी व सीधी होकर कटे शीशवाली होती हुई यदि शनि-शर के समीप पहुँचजावे तो वह प्राणी कष्टों से पीड़ित अङ्गोंवाला होताहुआ करालरूप-भारी होकर कारालय (जेलखाने) को जाता है ॥ ६८ ॥

६ भोगा सुरेखा जननीमुपैति कौटिल्यमस्ता यदि मध्यभिन्ना ।

सोयं जनः स्याद्यभिचारशाली नार्या यदा चेत्कुलटा तदा सा ॥ ६६

भोगरेखा बीच में कटीहुई टेढ़े शीशवाली होकर मातृरेखा के पास पहुँच जावे वह प्राणी व्यभिचरशाली होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा रमणी के करतल में प्रहो तो वह कुलटा होजाती है ॥ ६६ ॥

७ भोगा सुरेखा यदि नीचदेशे क्षुद्राविभिन्ना कृतचुल्लिरूपा ।

तदा सुतानां प्रसवे जनस्य प्रभूतपीडा स तु भोगशाली ॥ १०० ॥

यदि भोगरेखा निचले भागमें क्षुद्ररेखाओं से कटीहुई चूलहों कासा रूप बनालेवे उस प्राणी के सन्तानों के प्रसवकाल में अधिक वेदना होती है और वह भोगशाली कहाता है ॥ १०० ॥

८ क्षुद्रा गर्भीरा जननीसुरेखा संभिद्य भोगां यदि याति मन्दम् ।

स यौवने मृत्युमुखं प्रयाति स्पर्शेन हीना खलु पानसकः ॥ १ ॥

बोटी व गहरी होकर मातृरेखा यदि भोगरेखा को काटकर शनैश्चर के पास चली तो वह प्राणी युवावस्था में ही मौत को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा भोगरेखा स्पर्श न करे तो वह प्राणी मद्यपायी होजाता है ॥ १ ॥

९ पित्रा वियुक्ता यदि मातृरेखा तदन्तरे क्षुद्रतरा विभान्ति ।

विश्वासहीनो मनुजो महौजा वेश्यारतः स्याद्विषयाभिभूतः ॥ २ ॥

यदि पैत्रीरेखा से जुदी मातृरेखा प्रतीत हो और उन दोनों के बीच बोटी बोटी बहुत रेखायें सोहती हों तो वह प्राणी महावलवान् व विश्वासहीन होताहुआ वेश्याओं में होकर विषयों से अनादत होता है ॥ २ ॥

१० काव्यालयाच्चलिता सुरेखा संभिद्य पैत्रीमभियाति भाग्याम् ।

कापव्यसक्तो मनुजो हि लम्पटो दौर्भाग्ययुक्तो दयया विहीनः ॥ ३ ॥

शुक्रके घरसे चलीहुई एक रेखा यदि पैत्रीरेखा को काटकर भाग्यरेखा के समूह पहुँच जावे तो वह प्राणी छलछन्दी व लम्पट होकर दौर्भाग्य से युक्त होता हुआ दरविहीन होता है ॥ ३ ॥

११ पैत्री सुरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना कुटिला विभाति ।

चिन्ताभिभूतो मनुजस्तदा स्यादौदास्ययुक्तो दयितासमेतः ॥ ४ ॥

पैत्रीरेखा यदि विचले भागमें बोटी बोटी रेखाओं से कटीहुई टेढ़ी होकर सोहती होते ही प्राणी नारीसमेत चिन्तासे व्याकुल होताहुआ उदासीनतामें युक्त बना रहता है ॥ ४ ॥

१२ बृद्धाङ्गले रुध्वंगतं सुचिहं तिर्यग्द्विरेखं सरलं द्विरेखम् ।

चौर्ये प्रवृत्तो मनुजो मनस्वी विश्वासहीनो वनिताविहीनः ॥ ५ ॥

अँगूठा के ऊपरले भागमें यानी नहके पास तिरीछी दो रेखाओंवाला व सीधी दो रेखाओंवाला निशान यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी चोरकर्मकारी व मनमौजी होकर विश्वास रहित होताहुआ बनिता से विहीन होजाता है ॥ ५ ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिवन्धदेशात्कुद्राविभिन्ना यदि याति चान्द्रम् ।

स्यान्मन्दभाग्यो मनुजो जनानां मत्या विहीनो मदनातुरश्च ॥ ६ ॥

मणिवन्ध (क्रब्जे) से उठी व छोटी छोटी रेखाओं से कटी हुई रेखा यदि बुधालय के पास चलीजावे तो वह प्राणी मनुष्यों के बीच मन्दभागी होता हुआ निर्वृद्धि होकर कामातुर होजाता है ॥ ६ ॥

माघरेखा

१४ पित्रा वियुक्ता यदि चोर्ध्वरेखा तदन्तरे बाणसमा विभाति ।

सोयं जनः स्याद्यवसायशाली विश्वासहीनो बलतासमेतः ॥ ७ ॥

यदि पैत्रीरेखा से जुदी ऊर्ध्वरेखा (भाग्यरेखा) प्रतीत हो और उन दोनों के बीचमें बाणाकारसी एक रेखा सोहती हो तो वह प्राणी रोजगारी होकर अविश्वासी होता हुआ बलसमूहों से संपन्न बना रहता है ॥ ७ ॥

१५ पैत्री सुरेखा यदि नीचदेशो शाखाप्रशाखासहिता विभाति ।

बुद्धया विहीनो मनुजो गदार्तो मस्तिष्कपीडां लभते नितान्तम् ॥ ८ ॥

पैत्रीरेखा यदि निचले भाग में शाखा प्रशाखाओं समेत सोहती हो तो वह प्राणी निर्वृद्धि होकर रोगों से पीड़ित होता हुआ गाढ़ी माथेकी पीड़िकों पाता है ॥ ८ ॥

१६ अङ्गुष्ठमूले विशादं विशालं चिह्नं त्रिकोणादियुतं यदा स्यात् ।

प्रवञ्चको ना जगतो जनानां मायारतो मानवबृन्दवन्द्यः ॥ ९ ॥

अँगूठेकी मूल में साफ व विशाल निशान यदि त्रिकोण आदिकों से संयुक्त होता हुआ प्रतीत हो तो वह प्राणी जगत् के जनों का बलनेहारा होकर माया में रत होता हुआ मानवसमूहों से बन्दनीय होता है ॥ ९ ॥ (देखो चित्र नं० ४?)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सौम्यालये चेद्युगपञ्चक्षिसंस्थाः क्षुद्राः सुरेखाः सरला विभान्ति ।

सोयं जनः स्याज्जनघातकारी हत्यासमूहैः सहितोऽपकारी ॥ १० ॥

१ “ मदनो मन्मथो मारः ” (१५्यमरवाक्यम्) ॥

दो पांतियों में टिकीं, छोटी व सीधी बहुतसी रेखायें यदि बुधालय में सोहती हैं वह प्राणी प्राणियों का घातक होकर हत्यासमूहों से संयुत होता हुआ अपकार (बुरा) का करनेवाला होता है ॥ १० ॥

२ ब्रभालये चेद्धिशदं विशालं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति ।

संस्थापकोयन्तु विना परीक्षां मतस्य नारीकृतहानिमेति ॥ ११ ॥

सूर्यके स्थान में साफ सुधरा सीधा व तीन रेखाओंवाला निशान विशाल होकर सोहता हो तो वह प्राणी विना परीक्षा मतका चलानेवाला होकर रमणीगणों से हुई हानि को पाता है ॥ ११ ॥

३ भोगाद्यशाखा यदि याति मन्दं तथा द्वितीया धिषणं प्रयाति ।

मातापितृभ्यां घृणितोऽरिभीतो दीर्घा न चेन्नारिकृता विपत्तिः ॥ १२ ॥

सौभाग्यरेखा (फेटलाइन) की पहिली शाखा शनैश्चर के स्थान में व दूसरी शबूहस्पति के घरमें पहुँच जावे तो वह प्राणी माता पिता से वृणित होकर वैरियों से दरत और यदि पूर्वोक्तरेखा फैली हुई न हो तो वह नारी से की विषदा को भोगता है ॥ १२ ॥

४ सौम्यालयान्ते विशदस्वरूपं चिह्नं त्रिकोणं यदि भाति भिन्नम् ।

सोयं श्रमासङ्कमना मनुष्यो नारी तदीया सृतिमेति सूतौ ॥ १३ ॥

बुधालय के समीप साफ सुधरा त्रिकोण का निशान भिन्न होकर यदि प्रतीत हो वह प्राणी बड़ा परिश्रमी होता है और उसकी भार्या सन्तान उपजाने के समय माँ पाती है ॥ १३ ॥

५ पैत्रीसमुत्था जनर्नी विभित्वा भोगां च रेखा समुपैति सूरम् ।

भूपालवन्द्यो मनुजो महात्मा मायारतः स्यान्ममतासमेतः ॥ १४ ॥

पैत्रीरेखा से उठी हुई रेखा मात्ररेखा और भोगरेखा को काटकर सूर्य के पास चली जाती है तो वह प्राणी राजाओं से वन्दनीय व महात्मा होकर माया में रमता हुआ ममता से संरहता है ॥ १४ ॥

६ चिह्नं सकोणं सरलं द्विरेखं तिर्यक्त्रिरेखं गुरुगं विभाति ।

आचारहीनो मनुजस्तदानीं वित्तस्य हानिं लभते नितान्तम् ॥ १५ ॥

कोणसमेत सीधा दोरेखाओंवाला व तिरीछी तीन रेखाओंवाला निशान यदि बृहस्पति के स्थान में सोहता हो तो वह प्राणी आचार से हीन होता हुआ धनकीं बड़ीभारी होती है को पाता है ॥ १५ ॥

७ भोगा सुरेखा यदि नीचभागे भग्नस्वरूपा विशदा विभाति ।

विश्वासहीनो मनुजो महौजा मत्या विहीनो मदनातुरः स्यात् ॥ १६ ॥

सौभाग्यरेखा यदि निचले भागमें भग्न होकर साफ सोहती हो तो वह प्राणी पहावन् व विश्वास हीन होकर निर्वृद्धि होता हुआ कामी होता है ॥ १६ ॥

८ भोगा सुरेखा भगिनीसमेता कुविन्दुमध्या शनिगा विभाति ।

सन्तानहीनो मनुजस्तदा स्यादौर्बल्ययुक्तो दीयितो दयालुः ॥ १७ ॥

भोगरेखा भगिनी समेत होती हुई बीचमें छोटे विन्दुओंवाली होकर शनैश्चर के पास पहुँचकर प्रतीत हो तो वह प्राणी अपुत्री व दुर्वल होकर सबोंका प्यारा होता हुआ दयावान होता है ॥ १७ ॥

९ पैत्रीमुखे चेद्विशदं विशालं जालस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं जनः सज्जननिन्दकः स्यादाचारहीनो व्यभिचारशाली ॥ १८ ॥

पैत्रीरेखा के मुखके समीप साफ व विशाल जालरूपसा चिह्न यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी सज्जनों का निन्दक होकर आचार से विहीन होता हुआ व्यभिचारी होता है ॥ १८ ॥

१० मात्री विभिन्ना यदि नीचभागे क्षुद्राः समीपे कुटिला विभान्ति । माटरेख

नाप्रोति सौख्यं पुरुषः कदापि संक्षीणबुद्धिः सरलस्वभावः ॥ १६ ॥

मातुरेखा यदि निचले भागमें कटी हो और पासही छोटी छोटी तिरीछी बहुतसी रेखायें सोहती हों तो वह प्राणी कभी सौख्य को नहीं पाता है और क्षीणबुद्धि होकर सीधे स्वभाववाला बना रहता है ॥ १६ ॥

११ वप्रस्य रेखा यदि कण्ठदेशे शाखात्रयेणापि युता यदा स्यात् ।

सोयं मतालम्बनतो हि पीडां प्राप्नोति जन्तुर्जनताविहीनः ॥ २० ॥

पितृरेखा यदि कण्ठदेश में तीन शाखाओं से संयुत होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी जनसमूहों से विहीन होता हुआ मतके आलम्बन से पीड़ाको पाता है ॥ २० ॥

१२ चन्द्रालये भाति मिथो विभिन्नं गुणस्वरूपं यदि चिह्नयुग्मम् ।

सोयं जनः कृत्रिमबन्धयुक्तो भुग्नं न चेत्स्यादुपकारहीनः ॥ २१ ॥

चन्द्रमा के स्थान में परस्पर कटे, गुणा केसे रूपवाले दो निशान यदि प्रतीत हों तो वह प्राणी बनाये भाइयों से संयुक्त होता है अथवा पूर्वोक्त निशान क्रमसे गमन करें तो वह प्राणी अनेक भाइयोंवाला कहाता है और यदि दोनों निशान टेढ़े न हों तो वह पुरुष उपकार से हीन रहता है यानी किसीकी भलाई नहीं करता है ॥ २१ ॥

१३ पैत्रीसमुत्था भगिनीसमेता रेखा गभीरा यदि याति चान्द्रिम् ।

सोयं नरः स्याच्चपलस्वभावो भग्ना यदा चेत्फलमन्यथा स्यात् ॥ २१ ॥

पैत्रीरेखा से उठीहुई रेखा भगिनीसहित होकर यदि गहरी होतीहुई बुध के चलीजावे तो वह प्राणी चपलस्वभाववाला होता है और यदि पूर्वोक्त रेखा के प्रतीत होवे तो फल अन्यथा होजाता है ॥ २२ ॥

१४ मात्रा वियुक्ता कुटिला सुपैत्री ह्यधो द्विशाखा मणिबन्धमेति ।

स मन्दभाग्यः पुरुषस्तदानीं दारिद्र्यदुःखाभिभवं प्रयाति ॥ २३ ॥

मातृरेखा से जुदी व टेढ़ी पैत्रीरेखा निचले भागमें दो शाखाओंवाली होतीहुई मन्दभाग्य (कब्जे) के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी मन्दभागी होता हुआ दारिद्र्य से दुःख के अनादर को पाता है ॥ २३ ॥

१५ सञ्जिङ्गमस्तं मणिबन्धगं चेचिह्नं द्विरेखं समुपैति मात्रीम् ।

मिथ्याभ्रमेणापि युतो मनुष्यो दारिद्र्ययुक्तो विगताभिमानः ॥ २४ ॥

कटेशीशवाला व मणिबन्धगामी दो रेखाओंवाला निशान यदि मातृरेखा के पहुँचजावे तो वह प्राणी मिथ्याभ्रम से युक्त होताहुआ दरिद्री होकर घमएड से होजाता है ॥ २४ ॥ (देखो चित्र नं० ४२)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ कनिष्ठिकानामिकपर्वयुग्मे रेखाद्यं चेत्सरलं विभाति ।

सोयं जनो विन्दति बाहुघातं भ्रात्रा विहीनो भ्रमतासमेतः ॥ २५ ॥

कनिष्ठिका और अनामिका अँगुली की पहली व दूसरी पोर में सीधा दो रेखाओंवाला निशान यदि प्रतीत होता हो तो वह प्राणी भुजाओं में चोट चपेट को पाताहै और भ्रम सपूहों से संपन्न होताहुआ भाइयों से विहीन रहताहै ॥ २५ ॥

२ सुतर्जनीपर्वयुगे द्विरेखं मध्यापरुषके यदि द्वित्रिरेखम् ।

शोफार्दितोयं मनुजस्तदा स्याज्जवरादिरोगैः परिपीडिताङ्गः ॥ २६ ॥

तर्जनी अँगुली की पहली व दूसरी पोर में सीधा दो रेखाओंवाला और मध्य अँगुली की पोरों में दो तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी ज्वर रोगों से व्याकुल अङ्गवाला होकर शोथरोग से पीड़ित होता है ॥ २६ ॥

३ सौम्यालयान्ते उसरलैकरेखं तिर्यग्विभिन्नं यदि भाति चिह्नम् ।

ज्ञानी सुमानी पुरुषस्तदानीं स्यादौत्यकारी दयितापहारी ॥ २७ ॥

वुधालय में असरल एकरेखावाला तिरीछा कठाहुआ निशान यदि सोहता हों तो वह प्राणी ज्ञानी व सुमानी होकर दूतकर्म को करता हुआ किसी विजातीय प्राणी की प्यारी ग हरनेवाला होता है ॥ २७ ॥

४ समुत्थिता चेन्मणिवन्धदेशात्सर्पानना वै समुपैति मध्याम् । प्रारम्भोत्तम्

धूर्तस्वभावो मनुजो धनाढ्यः धन्यो धरित्र्यां धरयासमेतः ॥ २८ ॥

मणिवन्धदेश से उठीहुई रेखा सर्प के समान भुँहवाली होकर यदि मध्यमा अँगुलीकी हली पोर में पहुँचजावे तो वह प्राणी धूर्तस्वभाववाला व धनी होकर धरासमेत होता हुआ पृथ्वीमण्डल में धन्य गिनाजाता है ॥ २८ ॥

५ भोगाद्यशाखा समुपैति सौरि तथा द्विशाखे जननीमुपेतः ।

सोयं मनुष्यः शुभकर्मकारी दानी सुमानी तु महोपकारी ॥ २९ ॥

भोगरेखा की पहली शाखा शनैश्चर के पास चलीजावे तथा दो शाखायें मात्ररेखा के प्राप्तने सामने होवें तो वह प्राणी शुभदायक कर्मों का करनेहारा होताहुआ दानी व मुपानी होकर बड़ाभारी उपकारी होता है ॥ २९ ॥

६ लूतामुजालं विशदं विशालं चिह्नं यदा चेदुरुगं विभाति ।

सोयं जनो मज्जति वारिवाहे बाल्ये वयस्के बलतासमेतः ॥ ३० ॥

बृहस्पति के स्थान में प्राप्तहुआ साफ सुधरा अकड़ी जाल के समान विशाल होकर निशान यदि प्रतीत होता हो तो वह प्राणी बाल्यवस्था में ही बलसमूहों से संपन्न होता हुआ जल में डूबजाता है ॥ ३० ॥

७ चन्द्रालयान्ते परिभाति चिह्नं भिन्नत्रिकोणं यदि बाहुभिन्नम् ।

सोयं नरःस्यान्निंगमार्गमङ्गः सत्यप्रवक्त्रा सरलस्वभावः ॥ ३१ ॥

चन्द्रालय के समीप भिन्न त्रिकोणवाला निशान यदि भिन्नबाहुवाला होताहुआ सोहता हो तो वह प्राणी वेद व शास्त्रों का ज्ञाता होकर सत्यवक्त्रा होताहुआ सरलस्वभाववाला रहजाता है ॥ ३१ ॥

८ बृद्धाङ्गुलेऽर्वे द्वितये परुषके वेदाङ्गतुल्यं यदि भाति व्यस्तम् ।

सोयं जनःस्याद्व्यभिचारशाली ह्याचारहीनः कुविचारपाली ॥ ३२ ॥

अँगूठे की दूसरी पोरमें चार ४ अङ्कके समान निशान यदि उलटा होकर सोहता हो तो वह प्राणी व्यभिचारशाली होकर आचार से हीन रहताहुआ निन्दित विचारों का पालने-गाला होता है ॥ ३२ ॥

६ मात्रीस्वर्णीर्थे मिलिता सुपैत्र्या तदन्तरे चापसमा विभाति ।

दुःखार्दितोयं पुरुषस्तदानीं सृत्युं स्वतो वाऽच्छति सर्वदैव ॥ ३३ ॥

मात्रेखा अपने शिरोभाग में पैत्रीरेखा से मिलाप करती हो और उन दोनों रेखा के बीच में धन्वाकारसी एक और रेखा यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी दुःखों से घबड़ हुआ आपही से हमेशा मौतको चाहता है ॥ ३३ ॥

१० भोगासमीपेहि भिथो विभिन्नं गुणानुरूपं यदि लक्ष्मयुग्मम् ।

दारिद्र्ययुक्तो मनुजो विबन्धुश्चिह्नप्रमाणैरपि बन्धुता वा ॥ ३४ ॥

सौभाग्यरेखा के पासहीं परस्पर कटेहुए गुणा के आकार वाले दो निशान ये प्रतीत होते हों तो वह प्राणी भाइयों से राहित या सहायता से हीन होता हुआ दिन बनारहता है अथवा जितनेही चिह्न प्रतीत होते हों उतनेही भाई होते हैं ॥ ३४ ॥

११ समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्छिं द्विरेखं यदि याति चान्द्रिम् ।

सोयं जनःस्यात्परदास्ययुक्तो भग्नं यदा चेत्परवन्दिमेति ॥ ३५ ॥

मणिबन्ध से उठाहुआ दो रेखाओं वाला निशान यदि बुधालय में चलाजावे तो वह प्राणी पराई दास्यता को करता है यानीं परयुरुओं का सेवक होता है और यदि पूर्वों निशान कटा हुआ प्रतीत हो तो वह प्राणी परवन्धनको पाता है ॥ ३५ ॥

१२ अङ्गुष्ठमूले यदि भाति चिह्नं रेखासुषट्कं कुटिलं विशुद्धम् ।

सोयं नरः स्यात्प्रमदाविलासी ह्यानन्दराशी महतामुपासी ॥ ३६ ॥

अङ्गुष्ठकी मूलमें साफ सुथरा वरेखाओं वाला निशान यदि टेढ़ा होकर सोहता हो तो वह प्राणी प्रमदाओं में विलास करनेवाला होकर आनन्द की राशिवाला होता हुआ महात्मालोगों का सेवक बनारहता है ॥ ३६ ॥

१३ अव्जालयान्ते विशदं गभीरं घनस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे वार्धिर्ययुक्तो विधुरस्वभावः ॥ ३७ ॥

चन्द्रालय के पासहीं साफ सुथरा व गहरा निशान हथौड़े के समान रूपवाला घण्टा बजाने की मुगरी के समान होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी वहिरा हो हुआ टेढ़े स्वभाववाला होकर जलमें डूबजाता है ॥ ३७ ॥

१४ तिसःसुरेखा मणिबन्धसंस्थासां विभिन्ना यदि चाद्यरेखा ।

सोयं यशस्वी मनुजो नराणां प्राज्ञः प्रशंसी परमायुषाद्यः ॥ ३८ ॥

शोभन तीनरेखायें जो मणिबन्ध (कब्जे) में बनी रहती हैं उन्हींके बीच पह-

वा कटीसी प्रतीत होवे तो वह प्राणी मनुष्यों के मध्य में यशस्वी होकर प्राज्ञ प्रशंसापात्र होता हुआ परमायु से संयुक्त होता है ॥ ३८ ॥ (देखो चित्र नं० ४३)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

भोगासमुत्था सख्लैकरेखा संमध्यभिन्ना यदि याति सूरम् । सूर्यरेखा

मान्यो वदान्यो मनुजस्तदानीं सद्धर्मशाली धनतामुपैति ॥ ३९ ॥

भोगरेखा से उठी, सीधा एकरेखा बीचमें कटी हुई यदि सूर्यालय में पहुँचजावे तो वह प्राणी मानी व दानी होकर सद्धर्मशाली होता हुआ धनसमूहों को पाता है ॥ ३९ ॥

मन्दालये चेद्विशदं गभीरं चिह्नं त्रिरेखं सरलं विभाति ।

शान्तस्वभावो मनुजो हि नूनमुद्गहीनः समयं समेति ॥ ४० ॥

शनैश्चर के स्थान में साफ़, गहरा, सीधा होकर तीनरेखाओं वाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी निश्चयकर शान्तस्वभाव वाला होता हुआ व्याकुलता से रहित होकर अपने समय को व्यतीत करता है ॥ ४० ॥

पूज्यालये चेत्सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरो विभिन्नम् ।

सोयं मनुष्यो विधनो विदीनो हीनो जनैर्गच्छति सर्वदेशम् ॥ ४१ ॥

बृहस्पति के स्थान में सीधा तीनरेखा वाला व तिरीछी चाररेखाओं से कटाहुआ नेशन यदि सोहता हो तो वह प्राणी अथनी व दरिद्री होकर सर्वजनों से विहीन होता हुआ सबदेशों में जाता है ॥ ४१ ॥

सौम्यालयान्ताच्चलिता सुभोगा रेखा गभीरा गुरुगेहमेति ।

कौपान्वितोऽयं पुरुषस्तदानीं पारुष्ययुक्तः खलु साहसी स्यात् ॥ ४२ ॥

बृथके स्थान से चलीहुई भोगरेखा गहरी होकर बृहस्पति के स्थान पर्यन्त, चलीजाके वह प्राणी कौपशाली होकर कठोरता से संयुक्त होताहुआ साहसी होता है ॥ ४२ ॥

देवेन्द्रवन्द्यालयगा सुभोगा संकर्तिता चेद्यदि कण्ठदेशे ।

धर्मेण हीनो हि नरो नरणां भूपादिभीत्या नितरां विभेति ॥ ४३ ॥

बृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई भोगरेखा यदि कण्ठदेशमें कटी फटीसी प्रतीत हो तो वह प्राणी नरोंके बीचमें अधर्मी होताहुआ राजा, आगी और चोरके ढरसे बहुतही रहता रहता है ॥ ४३ ॥

चन्द्रालये चेत्सरलं द्विरेखं चिह्नं सुभोगाभिमुखं प्रयाति ।

विश्वासहीनो मनुजो विबन्धुर्वेश्याविलासी वन्निताविहीनः ॥ ४४ ॥

चन्द्रमा के स्थानमें सीधा व दो रेखाओं वाला निशान यदि भोगरेखा के सामने =
जावे तो वह प्राणी अविश्वासी व भाइयोंसे रहित होकर वेश्यागामी होता हुआ निज-
से विहीन होजाता है ॥ ४४ ॥

७ मात्री सुरेखा यदि नीचभागे क्षुद्राविभिन्ना मिलिता सुपैत्र्याम् ।

मात्रानिरस्तो मनुजो हि त्रस्तो विध्वस्तमानो ममतासुपैति ॥ ४५ ॥

मात्रीरेखा यदि निचले भाग में छोटीरेखाओं से कटी हुई पैत्रीरेखा में जाकर मिलतो वह प्राणी मातासे निकाला व घबड़ाता हुआ टूटेमानवाला होकर ममताको पाता है ॥

८ भोगासमीपे करवौलचिह्नं भित्वा सुमात्रीं समुपैति पैत्रीय ।

सांघातिकं मृत्युसुपैति मत्यो मत्याविहीनो मदनातुरात्मा ॥ ४६ ॥

भोगरेखाके पास टिकाहुआ तरवारका निशान यदि मात्रेरेखाको भेदनकर पैत्रीरेखा सामने चलाजावे तो वह प्राणी निर्वुद्धि होकर कामदेव से पीड़ित होता हुआ सांघातिको पाता है ॥ ४६ ॥

९ पैत्रीस्वशीर्णे मिलिता सुमात्र्या चिह्नं विधत्ते यदि कोणरूपम् ।

सोयं जनःस्याद्विषितौंगमज्ञो गौरस्वरूपो ह्यतिगौरवाद्यः ॥ ४७ ॥

शिरो भाग में पैत्रीरेखा मात्रीरेखा के साथ मिलाप करती हुई कोणरूप चिह्नको था हो तो वह प्राणी गणितशास्त्रका ज्ञाता होता हुआ गौराङ्ग होकर अति गौरवता से संवना रहता है ॥ ४७ ॥

१० संमध्यभिन्ना मिलिता जनन्यां भाग्यासुरेखा कुरुते हि कोणम् ।

सोयं विवादी मनुजो विषादी कष्टप्रदायी तु महजननाम् ॥ ४८ ॥

धीर्चमें कटी होकर भाग्यरेखा मात्रेरेखामें मिलती हुई कोणरूप निशान को बनाती हो वह प्राणी विवादी होकर विषादी होता हुआ महजनलोगोंको बड़ा कष्टदायक होता है ॥ ४८ ॥

११ कण्ठत्रिशाखा विनता गभीरा पैत्री सुरेखा समुपैति भाग्याम् ।

सोयं जनो विन्दति वित्तवृन्दं संस्थांसमेतः सरलस्वभावः ॥ ४९ ॥

कण्ठमें तीन शाखाओंवाली, लची हुई गहरी होकर पैत्रीरेखा भाग्यरेखा के पास जावे यानी मिलजावे तो वह प्राणी मर्यादासमेत सीधेस्वभाववाला होता हुआ धनसमेतो पाता है ॥ ४९ ॥

१२ अङ्गुष्ठमूले च पितुः समीपे त्रिपुण्ड्ररूपं यदि भाति चिह्नम् ।

१ निष्कासितः २ खड्गचिह्नम् ३ गणितशास्त्रवेत्ता ४ समृद्धम् ५ मर्यादा ॥

सोयं मनुष्यो बलवीर्यहीनो दीनो ह्यधीनो लंलनाविहीनः ॥ ५० ॥

अँगूठे की सूल व पैत्रीरेखा के पास त्रिपुण्ड्रपवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी बल व वीर्य से हीन होकर दीन व अधीन होताहुआ विशेषता से रमणीविहीन होता है ॥ ५० ॥

१३ चन्द्रालयान्ते विशदं गभीरं तारानुरूपं यदि भाति लक्ष्म ।

सोयं नरो मज्जति नीरैमध्ये मानापमानेन युतो यविष्टः ॥ ५१ ॥

चन्द्रालय के पास साफ सुथरा व गहरा होकर ताराके समान आकारवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी जल में डूबजाता है और उसका छोटा भाई मान व अपमान से संयुक्त होता है ॥ ५१ ॥

१४ विद्योतते चेन्मणिवन्धदेशो गुणानुरूपं यदि लक्ष्मयुग्मम् ।

सत्येन हीनो मनुजो मलाद्यो मान्योऽधमानां धनतासमेतः ॥ ५२ ॥

मणिवन्ध (कब्जे) के ऊपरले भागमें गुणाके आकारवाले दो निशान यदि सोहते हों तो वह प्राणी धनाद्य व मैला होकर अधमजनों का माननीय होताहुआ सत्यसे हीन होजाता है ॥ ५२ ॥

१५ सर्पानुरूपं मणिवन्धसंस्थं वक्रं सुचिह्नं सुतरां विभाति ।

सोयं नरः स्यात्परिणामदर्शी ज्ञानाधिकारी परकार्यकारी ॥ ५३ ॥

सर्पके समान आकारवाला, टेढ़ा निशान मणिवन्ध (कब्जे) में टिकाहुआ अधिकता से यदि सोहता हो तो वह प्राणी ज्ञानाधिकारी व परकार्यकारी होकर परिणामदर्शी होता है ॥ ५३ ॥ (देखो चित्र नं० ४४)

अथ त्र्योदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह-

१ कनिष्ठिकापर्वयुगे विभाति कोणार्धरूपं यदि लक्ष्म शुद्धम् ।

चौर्ये प्रवृत्तः पुरुषस्तदा स्याच्चातुर्ययुक्तश्चपलस्वभावः ॥ ५४ ॥

कनिष्ठा अँगुली की पहली व दूसरी पौरमें अर्धकोण निशान यदि शुद्ध होकर सोहता हो तो वह प्राणी चतुरता से संयुत होता हुआ चपलस्वभाववाला होकर चौरकर्म में लगा रहता है ॥ ५४ ॥

२ सुमध्यमायाः प्रथमे परुषके त्रिकोणरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं मनुष्यः सकले स्वकार्ये प्राप्नोति हानिं न सुखं कदापि ॥ ५५ ॥

१ निजरमणीरहितः २ नक्षत्ररूपम् ३ जलमध्ये ४ तस्यकनिष्ठोभ्राता ५ नीचजनानां माननीयः ६ धनानां समूहः ७ “परिणामो विकारो द्वे समे” (इत्यमरः) ८ चोरकर्मणि ॥

मध्यमा अङ्गुली की पहली पोरमें त्रिकोणरूपवाला निशान यदि सोहता हो तो प्राणी समस्तकार्यों में हानि को पाता है और सुखको कभी नहीं पाता है ॥ ५५ ॥

३ पूज्यालयस्योपरिगं विभाति पाश्वंत्रिरेखं सरलाद्विरेखम् ।

पित्तार्दितोयं लभते सुशोथं दीर्घपिरा चेद्रमणीकृतार्थम् ॥ ५६ ॥

बृहस्पति के स्थान के ऊपरलेभाग में प्रासहुआ पाश्वमें तीनरेखावाला होकर सीढ़ों रेखावाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी पित्तरोग से पीड़ित होताहुआ उसूजनको पाता है और यदि पूर्वोक्त दो रेखाओं में से कोई रेखा दीर्घ होकर प्रतीत हो किसी नारीकृत धनको पाता है ॥ ५६ ॥

४ सूरालये चेत्कुटिला सशाखा भोगां विभित्वा जनर्नीं प्रयाति ।

सोयं जनः संशयसक्तचित्तो भूपादिकोपाद्वहुहानिमेति ॥ ५७ ॥

सूर्यके स्थान में टेढ़ी होकर शाखा समेत रेखा भोगरेखाको काटकर मातृरेखा के मने पहुँचजावे तो वह प्राणी सन्देह में मनको लगाता हुआ राजा महाराजा आदि लोगों के कोपसे घनी हानिको पाता है ॥ ५७ ॥

५ भोगा सुरेखा यदि नीचभागे संकर्तिता चेन्मिलिता जनन्याम् ।

सोयं श्रमासक्तमना मनुष्यो विश्रामहीनो विपदामुपैति ॥ ५८ ॥

भोगरेखा यदि निचलेभाग में कटीहुई मातृरेखा में मिलजावे तो वह प्राणी विश्रामहीत होकर परिश्रम में मनको लगाता हुआ विपदाको पाता है ॥ ५८ ॥

६. संभोगरेखा सरला गभीरा शीर्षे नता चेन्मिलिता सुमात्र्याम् ।

उग्रस्वभावो मनुजो महौजा विख्यातकीर्तिर्विजितारिपक्षः ॥ ५९ ॥

भोगरेखा सीधी व गहरी होकर शिरोभागमें लचीहुई यदि मातृरेखा में मिलाप करते हो तो वह प्राणी उग्रस्वभाववाला व बड़ा बलवान् होताहुआ विख्यातकीर्तिवाला होकर शब्दपक्षका विजय करनेवाला होता है ॥ ५९ ॥

७ चन्द्रालयान्ताचलिता सुमात्री भोगासुशीर्षे मिलिता यदा चेत् ।

सोयं जनो विन्दति वित्तनाशं शाखायुता चेत्खलु साहसी स्यात् ॥ ६० ॥

चन्द्रालय के समीप से चलीहुई मातृरेखा भोगरेखा के शिरोभाग में यदि मिली तो वह प्राणी धननाश को पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा शाखाओं से संयुत हो तो वह साहसी होता है ॥ ६० ॥

८. चन्द्रालये चेन्मिलितं स्वशीर्षे रेखाद्रयं वै विरलं विभाति ।

^१ “ पेन्नवं विरलं तत्तु ” (इत्यमर ।) ॥

तत्प्राणनाशं कुरुते विपक्षो दीर्घापरा चेत्खलु वैरिजेता ॥ ६१ ॥

चन्द्रमा के स्थान में दो रेखाओंवाला निशान यदि शिरोभागमें मिलाहुआ विरल होकर प्रतीत हो तो वैरीलोग उस प्राणी के प्राण को हरते हैं और यदि पूर्वोक्त रेखाओं से कोई रेखा दीर्घ हो तो वह प्राणी वैरियों को विजय करता है ॥ ६२ ॥

वृद्धाङ्गुलेवै द्वितये परुष्के रेखाद्यं चेत्सरलं सशाखम् ।

सोयं ह्यगम्यागमनं करोति गम्भीरबुद्धिर्गणितागमज्ञः ॥ ६३ ॥

अङ्गटे की दूसरी पोरमें दो रेखाओंवाला निशान यदि सीधा होकर शाखासहित प्रतीत हो तो वह प्राणी गंभीर बुद्धिशाली होकर गणितशास्त्र का ज्ञाता होताहुआ अगम्या रमणियों में गमन करता है ॥ ६३ ॥

१० रेखाचतुष्कं सरलं विभाति रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम् ।

सोयं निमग्नो मनुजो जलौघे जायाजितो जल्पति जन्तुवादम् ॥ ६४ ॥

चाररेखावाला सीधा और चार रेखाओं से तिरीछा कटाहुआ निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी निजनारी से पराजित होकर प्राणियों का झगड़ा बकताहुआ जलसमूह में बजाता है ॥ ६४ ॥

११ काव्यालयान्ते विशदं सकोणं गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं मनुष्यो धनधान्ययुक्तो मायारतो मानववृन्दमुख्यः ॥ ६५ ॥

शुक्रालय के पास यदि साफ सुथरा होकर कोणों समेत गुणा के आकारवाला निशान दि सोहता हो तो वह प्राणी धन धान्य से संयुक्त होकर माया में रत होताहुआ मानवसमूहों मुखिया गिनाजाता है ॥ ६५ ॥

१२ भुज्ना चलन्ती मणिबन्धदेशाङ्गयां सपैत्रीं प्रविभिन्नं याति ।

प्रेमास्पदो वै पुरुषस्तदानीं प्राप्नोति पारं भवसागरस्य ॥ ६५ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से चलीहुई रेखा टेढ़ी होकर भास्यरेखा और पितृरेखा को काट नेर शुक्रके पास पहुँचजावे तो वह प्राणी प्रेमका धाम होताहुआ भवसागर के पारको नहीं जाता है ॥ ६५ ॥

१३ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशादेखा गर्भीरा समुपैति सौम्यम् ।

नारीकृतापत्तियुतो मनुष्यो मित्राभिभूतो हि समेति काराम् ॥ ६६ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठीहुई रेखा गहरी होकर बुधालय पर्यन्त चलीजावे तो वह नीरी मित्रों से अनादृत होकर स्त्रीकृत विपदा से संयुत होता हुआ कारालय (जेल-नामे) में जाता है ॥ ६६ ॥ (देखो चित्र नं० ४५)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ ब्रह्मालयस्योपरिं विभाति रेखाद्यं चेत्सरलं सुदीर्घम् ।

सोयं महात्मा मनुजस्तदा स्याज्ञानेन मानेन धनेन धन्यः ॥ ६७ ॥

सूर्यालय के ऊपरले भागमें प्राप्त हुआ यानी अनामिका अङ्गुली की पहली पोरसे उठ दूसरी पोर के मध्य में पहुँचा हुआ लम्बा दो रेखाओंवाला सीधा निशान यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी महात्मा होकर ज्ञान-मान और धनसे प्रशंसनीय होता है ॥ ६७ ॥

२ सौम्यालये चेद्विशदं च सूक्ष्मं रेखाचतुष्कं सरलं विभाति ।

सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे वृद्धे वयस्के बहुसौख्यमेति ॥ ६८ ॥

बुधालय में साफ सुथरा व छोटासा होकर चार रेखाओंवाला सीधा निशान यदि प्रतीत होता हो तो वह प्राणी जलमें डूबा हुआ वृद्धावस्था में घने सौख्यको पाता है ॥ ६८ ॥

३ सूरालये चेत्सरलं विभाति रेखाचतुष्कं खलु स्वत्परुपम् ।

पुत्रप्रपौत्रादियुतो मनुष्यो महामनीषी ममताविहीनः ॥ ६९ ॥

सूर्यालय में सीधा चाररेखाओंवाला छोटासा निशान यदि सोहता हो तो प्राणी पुत्र व प्रपौत्र आदिकों से संपन्न होता हुआ बड़ा वुद्धिमान होकर ममता से विरहता है ॥ ६९ ॥

४ देवेन्द्रवन्द्यालयगं विभाति चिह्नं त्रिकोणं विशदस्वरूपम् ।

संस्थासमेतो मनुजो धनाद्वो धन्यो धरायां सरलस्वभावः ॥ ७० ॥

बृहस्पति के स्थानमें पहुँचा हुआ साफ सुथरा त्रिकोणका निशान यदि प्रकाशम होता हो तो वह प्राणी मर्यादा समेत धनाद्व्य होकर धरामण्डल में प्रशंसनीय होता हुआ सीधे स्वभाववाला होता है ॥ ७० ॥

५. पूज्यालये चेद्विशदस्वरूपं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं मनोव्याधियुतो मनुष्यो मस्तिष्कपीडां लभते सशोकः ॥ ७१ ॥

बृहस्पति के स्थान में यानी भोगरेखा के कण्ठदेश के पास तारा के समान निर यदि चमकता हो तो वह प्राणी मानसी पीड़ा से पीड़ित होता हुआ शोकसमेत माने पीड़ाको पाता है ॥ ७१ ॥

६ पैत्रीसुशीर्षोपरिं विशुद्धं गुणानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

पुरोहिताचार्यनिर्पीडिताङ्गो बाधासमेतो बहुदुःखमेति ॥ ७२ ॥

पैत्रीरेखा के शिरोभाग के ऊपरले भागमें प्राप्तहुआ साफ सुथरा होकर गुणाके आकार निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी पुरोहित और आचार्य या गुरुसे पीड़ित प्रक्रियाला होताहुआ वाधासमेत वहुतसे दुःखोंको पाता है ॥ ७२ ॥

७ भोगासुशीर्षे मिलिता सुपैत्री भोगा सुखं चैति यदा सुमात्री ।

धूर्तस्वभावो मनुजो नराणां कार्यं विधत्ते सततं समस्तम् ॥ ७३ ॥

भोगरेखा के शिरोदेश में पितृरेखा यदि मिलाप करती हो और यदि भोगरेखा के मुख अपीप में मातृरेखा चलीगई हो तो वह प्राणी मनुष्यों के बीच धूर्तस्वभाववाला (बलछन्दी) होता हुआ समस्तकार्यों को हमेशाही किया करता है ॥ ७३ ॥

- भिन्ना सुमात्री यदि नीचभागे गोलार्धरूपं कुरुते हि चिह्नम् ।

सोयं नरः स्यान्निजवन्धुवर्गे विश्वासहीनो बहुसेवकाब्यः ॥ ७४ ॥

मात्रीरेखा यदि निचलेभाग में बिन्नभिन्न होकर अर्धगोलाकार निशानको बनाती हो तो वह प्राणी अपने वान्धववर्गों में आविश्वस्त होताहुआ अनेकानेक दासगणों से सेव्यन होता है ॥ ७४ ॥

मन्दालये चेत्सलु भोगरेखा क्षुद्राविभिन्ना समुपैति सौम्यम् ।

नानापदार्थैः सहितो मनुष्यो भूपादिभीत्या बहुहानिमेति ॥ ७५ ॥

शनैश्चरके स्थान के पासही यदि भोगरेखा छोटी २ रेखाओं से कटीहुई बुधालय पन्त चलीजावे तो वह प्राणी नानावस्तुओं से संयुत होता हुआ राजा महाराजा आदिकों दरसे घनी हानिको पाता है ॥ ७५ ॥

० मात्रीसुरेखा यदि मध्यदेशे क्षुद्राविभिन्ना विनता विभाति ।

अल्पायुषं तं पुरुषं करोति सौभाग्यवन्तं बहुपुत्रवन्तम् ॥ ७६ ॥

मातृरेखा यदि मध्यभागमें यानी शनैश्चरालय के सामने छोटी २ रेखाओं से कटीहुई चर्चीसी प्रतीत होवे तो उस प्राणी को सौभाग्यवाला व अनेक पुत्रोंवाला बनाकर व्यायु करदेती है यानी वह प्राणी चर्चीस वर्ष के भीतरही मरजाता है ॥ ७६ ॥

१ पैत्रीसमुत्था खलु चोर्ध्वरेखा शेषे सशाखा शशिनं प्रयाति ।

सांघातिकं मृत्युमुपैति मत्यो मत्या विहीनो ममतासमेतः ॥ ७७ ॥

पैत्रीरेखा से उटीहुई ऊर्ध्वरेखा (फेटलाइन) शेषभागमें शाखासमेत चन्द्रालय में चली तो वह प्राणी निर्बुद्धि होकर ममतासमेत होताहुआ सांघातिकमौतको पाता है ॥ ७७ ॥

१२ भौमालयान्ते मिलितं गभीरं तिर्यक्तिरेखं समुपैति काव्यम् ।

अपव्ययेनापि युतो मनुष्यः शेषेनुतापं कुरुते सदैव ॥ ७५ ॥

मङ्गल के स्थान में मिलाहुआ गहरा होकर तिरीछी तीन रेखाओंवाला निशान शुक्रालय के पासही पहुँच जावे तो वह प्राणी बुरेकामों में पैसे को खर्चता है और धन चुकजाता है तो सदैव पछितावा किया करता है ॥ ७५ ॥

१३ भाग्यासुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां तदन्तरे चेत्समकोणचिह्नम् ।

साधारणोयं पुरुषस्तदा स्यान्नार्या यदा चेत्तनयं प्रसूते ॥ ७६ ॥

भाग्यरेखा पैत्रीरेखा में मिली हो यानी ऊर्ध्वरेखा पितृरेखा से मिलाप करती हो उन रेखाओं के बीच में समकोणकासा चिह्न यानी बीछी के डङ्कासा निशान यदि होताहो तो वह प्राणी साधारणपुरुष होता है और यदि पूर्वोक्त निशान रमणी के करता सोहता हो तो वह पुत्रों को पैदाकरती है ॥ ७६ ॥

१४ समुत्थिता चेन्मणिबन्धदेशाद्रेखा गभीरा समुपैति भाग्यम् ।

सर्वप्रियो वै पुरुषस्तदानीं विजित्य बन्धुं सुखतां समेति ॥ ८० ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठी हुई रेखा गहरी होकर भाग्यरेखा के पास पहुँच तो वह प्राणी सर्वजनों का प्यारा होताहुआ बैरीभाई का विजयकर सुखता को पाता है ॥ ८० ॥

१५ चन्द्रालये चेद्विशदस्वरूपं चिह्नं चतुष्कोणयुतं विभाति ।

सोयं यशस्वी मनुजो मनस्वी विश्वासशाली बहुवित्तमेति ॥ ८१ ॥

चन्द्रालय के निकटवर्ती साफ सुथरा होकर चारकोनों से संयुत होताहुआ नियदि सोहता हो तो वह प्राणी यशस्वी व मनमौजी होताहुआ विश्वासशाली होकर धन को पाता है ॥ ८१ ॥ (देखो चित्र नं० ४६)

अथ चतुर्दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सौम्यालयान्ते सरलैकरेखं संमध्यगोलं यदि भाति चिह्नम् ।

दुर्दृष्टियुक्तो विकलो मनुष्यो विक्षीणवीर्यो विषयानुरागी ॥ ८२ ॥

वुधालय के पास सीधी एकरेखावाला व बीच में गोलाकार यानी पौरवान समान होकर निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी विशेषता से क्षीणवीर्यवाला व में अनुराग करनेवाला होकर दुर्वलदृष्टिसे संयुक्त होताहुआ व्याकुलही बनारहता है ॥

१ तदन्तरे चेदलिंदंशनाङ्क्यमिति वा पाठः ॥

२ भोगा गभीरा गुरुगा विभाति शाखा तदीया यदि याति मन्दम् ।
सोयं मनुष्यो वनिताविलासादौर्भाग्ययुक्तो धनहानिमेति ॥ ८३ ॥

सौभाग्यरेखा गहरी होकर वृहस्पति के घरमें पहुँची हुई यदि सोहती हो और यदि उसकी शाखा शनैश्चर के स्थान में चलीगई हो तो वह प्राणी रमणियों में आसक्त होनेसे दौर्भाग्यशाली होताहुआ धनहानि को पाता है ॥ ८३ ॥

३ मात्रीसमुत्था विशदा विभुग्ना रेखा यदैका विषणं प्रयाति ।

स मन्दभाग्यो मनुजस्तदानीं प्राप्नोति सौख्यं चरमे वयस्के ॥ ८४ ॥
मात्ररेखा से उठी हुई साफ सुथरी व टेढ़ी होकर एकरेखा यदि वृहस्पति के स्थान पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी मन्दभागी होताहुआ अन्तिम अवस्थामें सौख्यको पाता है ॥ ८४ ॥

४ आरम्भदेशे खलु भोगमात्र्योस्तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं गतो वै मनुजो विदेशं प्राप्नोति भद्रं भयताविहीनः ॥ ८५ ॥

भोगरेखा व मात्ररेखा के आरम्भदेश में तारा के समान निशान यदि प्रकाशमान होताहो तो वह प्राणी विदेशको गयाहुआ भयसमूहों से निर होकर कल्याण को पाता है ॥ ८५ ॥

५ भोगासुमध्ये सरलं त्रिरेखं तिर्यग्निभिन्नं खलु चन्द्रमित्या ।

सोयं मनुष्यो रिपुतासमेतो मातापितृभ्यां कुरुते विवादम् ॥ ८६ ॥

भोगरेखा के मध्यभाग में एकरेखा से तिरीछा कटाहुआ सीधा तीन रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी माता पिता के साथ विवाद (भगड़ा) करता है ॥ ८६ ॥

६ चिह्नं गभीरं जठरे जनन्या वृत्तार्धरूपं विशदं विभाति ।

त्यक्त्वा स्वकीयौ पितरौ मनुष्यो ह्यात्ममभरिवैभ्रमते विदेशम् ॥ ८७ ॥

माताके उदरस्थल में साफ सुथरा व गहरा होकर वृत्तार्धरूप यानी अर्ध गोलाकार निशान यदि सोहताहो तो वह प्राणी अपने मातापिताको छोड़कर आत्मा को पालताहुआ देश में वूमता है ॥ ८७ ॥

७ मात्रीसुरेखा शशिनं समेति पैत्री विभुग्ना मणिवन्धमेति ।

एवं विधे गर्ततरे प्रयाते करोति चौर्यं चपलस्वभावः ॥ ८८ ॥

मात्रीरेखा चन्द्रालयके पास चलीजावे और पैत्रीरेखा टेढ़ी होकर मणिवन्ध (कब्जे)

८ सहयोगं विनापि तृतीया वृद्धो यूनेत्यादिनिर्देशात् ॥

में मिल गई हो जबकि ऐसा गड़हेकासा निशान प्रतीत होवे तो वह प्राणी चम स्वभाववाला होताहुआ चोरीको करता है ॥ ८८ ॥

८ पैत्रीरेखा चेत्सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम् ।

सोयं जनो वै कुरुते कुकृत्यं विषप्रयोगैर्विषयानुरक्षः ॥ ८९ ॥

पैत्रीरेखा के कण्ठदेश में सीधा तीन रेखाओंवाला और चाररेखाओं से तीन कटाहुआ निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी विषयों में लगाहुआ विषप्रयोगों निन्दित कार्य को करता है ॥ ८९ ॥

९ पित्रा चियुक्ता यदि मातृरेखा द्विधा विभक्ता खलु चाग्रभागे ।

सोयं नरो भिन्नतरस्वभावो ह्याप्नोति खेञ्चं खलैतासमेतः ॥ ९० ॥

पैत्रीरेखासे वियोग करतीहुई मातृरेखा यदि अग्रभाग में दो मकार से बट्ठगई हो वह प्राणी खलैतासमेत भिन्नस्वभाववाला होताहुआ खजरोग को पाता है यानी पैत्री लँगड़ा होजाता है ॥ ९० ॥

१० न तद्विरेखं मणिवन्धसंस्थं तद्भूतचिह्नं सरलद्विरेखम् ।

सांघातिकं मृत्युमुपैति मत्यो मन्दस्वभावो मदनाकुलात्मा ॥ ९१ ॥

मणिवन्ध (कब्जे) में टिका हुआ लची दो रेखाओंवाला और उनसे उपजा हुआ निशान सीधी दो रेखाओंवाला होकर यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी नीच स्वभाववाला होता हुआ काम से पीड़ित आत्मावाला होकर सांघातिक मौत को पाता है ॥ ९१ ॥

११ अङ्गुष्ठमूले विशदं विभाति कोणस्वरूपं यदि युग्मचिह्नम् ।

सोयं दरिद्रः परिवारयुक्तो भिक्षासुवृत्तिं कुरुते अप्यज्ञेस्तम् ॥ ९२ ॥

अङ्गूठे की मूल में साफ सुथरे होकर कोणरूपवाले दो निशान यदि प्रतीत होवे वह प्राणी परिवार से संयुत होता हुआ दरिद्री होकर हमेशा भीख को मांगता है यानी भिक्षावृत्ति से निर्वाह करता हुआ जीता है ॥ ९२ ॥

१२ पैत्रीसुरेखा यदि नीचभागे वृत्तार्धभिन्ना मणिवन्धमेति ।

सोयं हठान्मृत्युमुपैति मत्यो मत्या विहीनो विपदासमेतः ॥ ९३ ॥

पैत्री रेखा यदि निचले भाग में अर्धवृत्ताकार निशान से कटी हुई मणिवन्ध (कब्जे) के पास पहुँच जावे यानी अङ्गूठे की मूल में समा जावे तो वह प्राणी विपदासमेत निर्वाह होता हुआ हठ (जिद) से मौत को पाता है ॥ ९३ ॥

१३ सर्पननाभा मणिबन्धसंस्था ह्येवंविधाश्चेद्यति सन्ति रेखाः ।

तावन्मितं वै भ्रमते विदेशं व्यापद्ग्रहग्रस्तमना मनुष्यः ॥ ६४ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) के ऊपरले भाग में टिकी हुई सर्प के समान मुखवाली रेखा यदि होती हो अथवा ऐसीही जितनी रेखायें प्रतीत होवें तो वह प्राणी उतनेही बार विशिष्ट व्यापदारूप ग्रह से ग्रसे हुए मनवाला होता हुआ निश्चयकर त्रिदेश में घूमता है ॥ ६४ ॥

१४ सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के सार्पं द्विरेखं यदि भाति चिह्नम् ।

वाल्याद्यवस्थाङ्गुलिकक्रमेण नूनं नरो मज्जति वारिवाहे ॥ ६५ ॥

समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर में सर्प समान वक्राकार दो रेखाओंवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी वाल्यादि अवस्था और कनिष्ठादि अँगुलियों के अनुक्रम निश्चयकर जलसमूह में डूबता है यानी पूर्वोक्त निशान यदि कनिष्ठा में हो तो वाल्यावस्था में व अनाभिका में हो तो युवावस्था में व मध्यमा में हो तो मध्यावस्था में यींनी में हो तो बृद्धावस्था में और यदि अँगूठे में हो तो अतिवृद्धावस्था में जल निपग्नता है ॥ ६५ ॥ (देखो चित्र नं० ४७)

अथ पञ्चदशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

सर्वाङ्गुलीनां त्रितये परुष्के वक्रं द्विरेखं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं मनुष्यो बलवीर्यहीनो दौर्बल्ययुक्तो दयितो दयालुः ॥ ६६ ॥

समस्त अँगुलियों की तीसरी पोर में वक्राकार दो रेखाओंवाला निशान यदि प्रतीत हो तो वह प्राणी बल व वीर्य से हीन तथा दुर्वल शरीरवाला होता हुआ प्यारा कर दंयालु होता है ॥ ६६ ॥

सौम्यालये चेत्सरलं सकोणं संमध्यरेखं विशदं विभाति ।

सोयं नरो नीतिपरो भयार्तो भिक्षासुवृत्तिं कुरुते प्यजस्म ॥ ६७ ॥

बुधालय में सीधा कोण समेत बीच में रेखावाला व साफ सुथरा होकर निशान यदि होता हो तो वह प्राणी नीतिपरायण होकर भय से व्याकुल होताहुआ निरन्तर भिक्षा ले करता है ॥ ६७ ॥

भोगासुरेखा खलु नीचभागे शाखाद्येनापि युता यदा स्यात् ।

सोयं विवादी मनुजो विषादी व्यासक्षचित्तो व्यवसायशाली ॥ ६८ ॥

भोगरेखा यदि निचले भाग में दो शाखाओं से संयुत होकर प्रतीत होवे तो वह

प्राणी विचादी व विषादी होकर विषयों में आसक्त मनवाला होता हुआ रोज़ग़ार होता है ॥ ६८ ॥

४ भाग्यासुरेखा रविगा विभाति त्वर्धार्धवृत्तेन युता सुशीर्षे ।

दौष्टमर्यदोषान्मनुजस्तदानीं कारालयं याति करालरूपः ॥ ६९ ॥

भाग्यरेखा यदि गहरी होकर सूर्यलियपर्यन्त चली जावे और यदि शिरोभाग अर्धार्धवृत्त से संयुत होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी बुरे कर्मों के दोष से कराल होता हुआ जेलखाने को जाता है ॥ ६९ ॥

५ भोगासमुत्था गुरुगेहमेति संकर्तिता चेत्खलु कण्ठदेशे ।

सोयं जनो वै भ्रमते विदेशं प्राप्नोति मृत्युं ममतासमेतः ॥ १०० ॥

भोगरेखा से उठी हुई शाखारेखा यदि वृहस्पति के स्थानपर्यन्त चली जावे यदि कण्ठभाग में कटी फटीसी प्रतीत होवे तो वह प्राणी विदेश में वृमता है और ममता समेत मौत को पाता है ॥ १०० ॥

६ दिधा विभक्ता खलु शेषभागे सौभाग्यरेखा गुरुगा विभाति ।

प्रवच्चयित्वा पितरौ स्वकीयौ ह्यनारतं कुप्यति कोपशाली ॥ १ ॥

शेषभाग में दो प्रकार से बटीहुई सौभाग्यरेखा वृहस्पति के स्थान में पहुँचकर यदि न हती हो तो वह प्राणी अपने माता पिताओं को अत्यन्त छलकर कोपशाली होताहुआ सदैव कोपित होता है ॥ १ ॥

७ भाग्या विभिन्ना खलु भोगरेखा कोणं विधत्ते यदि मध्यदेशे ।

वित्ताभिलाषी मनुजो विलासी प्राप्नोति कामं कलयासमेतः ॥ २ ॥

भाग्यरेखा (फेटलाइन) से कटीहुई भोगरेखा यदि मध्यभाग में कोणको बनाती तो वह प्राणी धनाभिलाषी होकर कलासमेत विलासी होताहुआ कामको पाता है ॥ २ ॥

८ मात्रीसुरेखा मिलिता सुपैत्र्यां वृत्तार्धयुक्ता खलु कण्ठदेशे ।

सोयं विदीनो दयिताविहीनो भङ्गत्वा स्ववाटिं भयतासुपैति ॥ ३ ॥

पैत्रीरेखा में मिलीहुई मात्रीरेखा कण्ठदेशमें अर्धगोलाकार निशान से संयुक्त हो यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी दंगिदी होकर दयिता से विहीन होताहुआ अपनी वाइ विनाशकर भयसमूहों को पाता है ॥ ३ ॥

९ भौमालयान्ते सरलं द्विरेखं संवृकणमध्यं यदि भाति चिह्नम् ।

उच्चस्थलादै पतनं जनस्य नो कर्तितं चेन्मरणं प्रयाति ॥ ४ ॥

१ “भौमालयरेखा गुरुगा विशुद्धा” इति वा पाठः ॥

भौमालय के पास सीधा व दो रेखाओंवाला निशान बीचमें कटाहुआ यदि प्रतीत होवे तो उस प्राणी का ऊंचे से गिरना होता है और यदि पूर्वोक्त निशान बीचमें कटाहुआ नहीं प्रतीत होवे तो वह प्राणी मरणको पाता है यानी गिरकर मरजाता है ॥ ४ ॥

१० पैत्रीसमुत्था मिलिता सुमात्र्यां कोणं विधत्ते विशदस्वरूपम् ।

दौर्जन्ययुक्तो मनुजोतिलुब्धो लावण्यहीनो ललनां समेति ॥ ५ ॥

पैत्रीरेखा से उठी व मात्रीरेखा में मिलीहुई रेखा यदि साफ सुथरा कोणरूप निशान को बनाती हो तो वह प्राणी दुर्जनता से संयुक्त व सुन्दरता से हीन होता हुआ बड़ालोंभी होकर रमणी को पाता है ॥ ५ ॥

११ समुत्थिता चेन्मणिवन्धदेशात्सर्पनुरूपा जननीमुपैति ।

विना प्रयासं लभते हि वित्तं विश्वासघाती जनवञ्चकश्च ॥ ६ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठीहुई सर्पकार रेखा यदि मातृरेखा के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी जनोंका छलनेवाला होकर विश्वासघाती होताहुआ विना परिश्रम धनको पाता है ॥ ६ ॥

१२ मातुःसमीपे विशदस्वरूपा रेखा यदैका भगिनी विभाति ।

संलब्धवित्तो मनुजोऽधिकारी दीर्घा यदा चेद्बहुवित्तमेति ॥ ७ ॥

साफ सुथरी एक भगिनीरेखा मातृरेखा के पास यदि सोहती हो तो वह प्राणी अधिकारी होकर धनको पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा दीर्घाकार होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी बहुतसा धन पाता है ॥ ७ ॥

१३ पूँज्यालयाच्चेच्चलिता सुरेखा चाँपस्वरूपा शशिजं समेति ।

धूर्तस्वभावो मनुजो हि लम्पटो दान्यो वदान्यो ध्वजभङ्गमेति ॥ ८ ॥

बृहस्पति के स्थान से चलीहुई रेखा धनुषाकारवाली होकर यदि बुधालय पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी धूर्तस्वभाववाला व व्यभिचारी होकर बड़ादाता व बड़ावक्ता होता हुआ ध्वजभङ्गताको पाता है ॥ ८ ॥

१४ मात्रीसमुत्था कुटिला सुपैत्री ह्यधोदिभिन्नौ मणिबन्धमेति ।

सोयं जनः स्यात्परिमाणभोजी प्रमाणपायी दयितानुयायी ॥ ९ ॥

मात्रीरेखा से उठीहुई टेढ़ी होकर पैत्रीरेखा यदि निचले भागमें छोटी दो रेखाओं से कटतीहुई मणिबन्ध (कब्जे) में समाजावे तो वह प्राणी परिमाणभोजी व परिमाणपायी होकर प्यारी का अनुगामी होता है ॥ ९ ॥

१५ सर्वाङ्गलीनां द्वितये परुषके कोणस्वरूपं यदि भाति चिन्हस् ।

ना नार्तियुक्तो मनुजोऽतिदुर्बलो मूर्च्छामयं वै लभते उत्साहः ॥ १० ॥

समस्त अङ्गुलियों की दूसरी पोर में कोणरूपवाला निशान यदि सोहता हो तो प्राणी नानाव्याधियों से संयुक्त होता हुआ बड़ा दुर्बल व आत्मी होकर मूर्च्छारोग पाता है ॥ १० ॥ (देखो चित्र नं० ४८)

अथ त्रयोदशलक्षणाङ्कितकरतत्त्वफलमाह—

१ इज्यालयाच्चेच्चलिता कुरेखा भित्त्वा सुभोगां समुपैति सौरिय ।

शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यो लावण्यलीलालसितोऽत्साहः ॥ ११ ॥

बृहस्पति के स्थान से चलीहुई एक छोटीसी रेखा सौभाग्य रेखा को काटकर शनैश्चरातय पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी सुन्दरता की लीला से विलसित होताहु सुस्तदेहवाला होकर शीशकी पीड़ा को पाता है ॥ ११ ॥

२ भोगाविभुजना शनिगा विभाति क्षुद्रा विभिन्ना यदि नीचभागे ।

विमूर्चिकाक्रान्तवपुर्ज्वरातो जम्भायुतो याम्यपदं प्रयाति ॥ १२ ॥

भोगरेखा टेढ़ी होकर शनैश्चर के स्थान में पहुँची व निचले भागमें एक छोटीरेखा से कटती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी हँजेरोगसे ग्रसा शरीरवाला व ज्वर से पीड़ित होकर ज़म्भुवाई लेताहुआ यमालय को जाता है ॥ १२ ॥

३ मात्रीसुरेखा भगिनीसमेता स्वल्पस्वरूपा पितरं समेति ।

तदास्थिभङ्गं लभते नरो वै त्वन्या यदा चेदधिकाङ्गनःस्यात् ॥ १३ ॥

भगिनीसमेत मात्रीरेखा छोटीसी होकर पैत्रीरेखा में समाजावे यानी पैत्रीरेखा मिलाप करती हो तो वह प्राणी हड्डीटूनेकी पीड़ाको पाता है और यदि दूसरी भगिनीरेखा प्रतीत होती हो तो वह नाना अङ्गनाओंवाला होता है यानी अनेकानेक रपणियों रमता है ॥ १३ ॥

४ पैत्रीसमुत्थां शनिगां स्वशीर्षे संयुज्य भाग्या मणिबन्धमेति ।

सोयं मनुष्यः कलहानुरक्तः प्राप्नोति कारां कमलाविहीनः ॥ १४ ॥

अपने शिरोभाग में पैत्रीरेखा से उठी व शन्यालय में पहुँची हुई रेखासे मिला भाग्यरेखा मणिबन्ध (कठ्जे) के पास आजावे तो वह प्राणी लड़ाका होता हु लक्ष्मी से विहीन होकर जेलखाने को जाता है ॥ १४ ॥

अङ्गुष्ठशाखा यदि सन्तु तिसस्तासां सुमध्या खलु कर्तिता चेत् ।

सोयं जनो वैरिगणान्विजित्य सत्यप्रतिज्ञः क्षमतामुपैति ॥ १५ ॥

अँगूठे की शाखायें यदि तीन होवें उनहोंमें से बीचवाली शाखा कटी हुई प्रतीत होवे वह प्राणी सत्यसंकल्पवाला होताहुआ वैरिगणों का विजयकर क्षमाको पाताहै ॥ १५ ॥

समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्छिदं द्विरेखं यदि याति चन्द्रम् ।

सोयं नरो मूढतरो नरणां विश्वासघाती वनितारतः स्यात् ॥ १६ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से उठाहुआ दोरेखाओंवाला चिह्न यदि चन्द्रालय में चलाजावे वह प्राणी मनुष्यों के मध्य में महामूर्ख होताहुआ विश्वासघाती होकर वनिता में रहता है ॥ १६ ॥

पैत्री विभुजना मणिबन्धमेति शाखाचतुष्केन युता स्वमध्ये ।

सोयं जनः स्याभ्यिजबन्धुवर्गे विश्वासहीनो विषमस्वभावः ॥ १७ ॥

पैत्रीरेखा टेढ़ी होकर अपने विचलेभाग में चार शाखाओं से मिलती हुई मणिबन्ध (कब्जे) के पास चलीजावे तो वह प्राणी अपने बन्धुवर्गों में आविश्वासी होताहुआ कन स्वभाववाला होता है ॥ १७ ॥

वृद्धाङ्गुलेऽर्वे द्वितये परुषके तिरोद्धिभिन्नं सरलं द्विरेखम् ।

विश्वासराहित्यमुपैति जन्तुर्जाज्वल्यमानः खलु नास्तिकश्च ॥ १८ ॥

अँगूठे की दूसरी पोर में तिरीछी दोरेखाओं से कटाहुआ सीधा दो रेखाओंवाला शान यदि प्रतीत होता हो तो वह प्राणी कोपसे अतीव जलताहुआ नास्तिक होकर श्वासहीनता को पाता है ॥ १८ ॥

वृद्धाङ्गुलेऽर्वे नखतः समुत्थं द्विपर्वगं चेत्सरलं द्विरेखम् ।

विश्वासशाली मनुजो रसाली प्रजामुपाली जनदुःखदाली ॥ १९ ॥

अँगूठेके नाखून से उठा व दूसरी पोरतक गया हुआ सीधा दो रेखाओंवाला निशान दि सोहता हो तो वह प्राणी विश्वासी व मिष्टभाषी होकर सन्तानों का पालनेवाला हुआ जनोंके दुःखों का विदारक होता है ॥ १९ ॥

०मुतर्जनी चेद्वितये परुषके धत्ते सकोणं यदि बाहुभिन्नम् ।

सोयं मनुष्यो रसनारसज्जो रामारतो द्यूतयुतो दयालुः ॥ २० ॥

यदि तर्जनी अँगुलीही दूसरे पोर में कोण समेत व भुजाभिक्ष चिह्न को धारती हो तो वह प्राणी जिहाके स्वादका ज्ञाता व दयालु होकर मुन्दरियोंमें रत होताहुआ लुखाड़ी होता है २०॥

११ सुमध्यमाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि मध्यकोणम् ।

दुरोदराक्रान्तमना मनुष्यो मान्यो वदान्यो बलतामुपैति ॥ २१ ॥

मध्यमा अङ्गुलीकी दूसरी पर्वमें कोण समेत व वीच में कोणका रखनेवाला नियदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी जूवा खेलने में मनको लगाता हुआ माननीय व बड़ा होकर बलसमूह को पाता है यानी महावलवान् बना रहता है ॥ २१ ॥

१२ अनामिकाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि बाहुभिन्नम् ।

द्यूते रतो वै मनुजो विलासी ह्यानन्दराशी खलु सुद्धयुपासी ॥ २२ ॥

अनामिका अङ्गुली की दूसरी पोर में यदि कोणसमेत व भुजाभिन्न होकर चिह्न न होवे तो वह प्राणी जुवाड़ी होकर भोगी व आनन्दकी राशि होताहुआ विद्वानों उपासक होता है ॥ २२ ॥

१३ कनिष्ठिकाया द्वितये परुष्के चिह्नं सकोणं यदि मध्यकोणम् ।

सोयं नरो द्यूतपरोऽप्युदारो ह्याप्रोति शङ्कां निजजीवनेषुः ॥ २३ ॥

कनिष्ठा अङ्गुली की दूसरी पोरमें कोणसमेत व वीच में कोणका रखनेवाला नियदि प्रतीयमान होता हो तो वह प्राणी जूवा खेलताहुआ उदार व अपने जीवन में आलापावान् होकर सन्देह को पाता है ॥ २३ ॥ (देखो चित्र नं० ४६)

अथ दशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ पैत्री विभुग्ना मणिबन्धमेति वृत्तार्धयुक्ता खलु चोर्ध्वभागे ।

श्वासादिरोगान्मृतिमेति मत्यो न्यूना यदा चेद्यसोऽनुमानात् ॥ २४ ॥

यदि पैत्रीरेखा टेढ़ी होकर मणिबन्ध (कब्जे) के समीप चली जावे और यदि ऊपर भाग में वृत्तार्धसे संयुक्त होकर मृतीत होवे तो वह प्राणी श्वासरोग व क्रमिरोग आदि से मौतको पाता है और यदि पूर्वोक्त रेखा स्वल्परूप होकर सोहती हो तो वह अवस्था अनुमान से मौतको पाता है ॥ २४ ॥

२ पैत्रीसमीपाच्चलितं सरेखं वेत्रस्वरूपं शशिजं समेति ।

सोयं नरो मूढतरो बलीयान् वामाजितो वै भ्रमते विदेशम् ॥ २५ ॥

पैत्रीरेखा के निकटदेश से चलाहुआ रेखा समेत वेत के समान प्रकाशमान निशान वुथालयपर्यन्त चलाजावे तो वह प्राणी महामूर्ख व बड़ा बलवान् होकर बनिता से जित होताहुआ विदेश में घूमता है ॥ २५ ॥

३ चन्द्रालयाच्चलितं द्विरेखं भित्वा सुमात्रीं गुरुमभ्युपैति ।

सोयं सुभारयो मनुजो मनस्वी धन्यो यदा चेन्मणिबन्धसंस्थम् ॥ २६ ॥

चन्द्रालय से चला हुआ दो रेखाओंवाला निशान यदि मात्रीरेखा को काटकर वृहस्पति स्थान के सामने पहुँच जावे तो वह प्राणी बड़ाभाग्यशाली होता हुआ मनमौजी होता है और यदि पूर्वोक्त चिह्न कङ्गे के पास टिका हुआ प्रतीत होता हो तो वह प्राणी धन्यता है ॥ २६ ॥

समुत्थितं चेन्मणिबन्धदेशाच्छिह्नं द्विरेखं बुधमभ्युपैति ।

गाम्भीर्यशाली गणको गरिष्ठो ज्येष्ठो वरिष्ठो जनतामुपैति ॥ २७ ॥

मणिबन्ध (कङ्गे) से उठा हुआ दो रेखाओंवाला निशान यदि बुधालयर्थन्त लाजावे तो वह प्राणी गाम्भीर्यशाली, ज्योतिर्वेत्ता, गरिष्ठ, ज्येष्ठ व श्रेष्ठ होता हुआ नसमूह को पाता है ॥ २७ ॥

शेषे सुभागे खलु मातृकाया मध्ये विभिन्नं यदि भाति सार्प्यम् ।

आत्माभिमानी पुरुषोऽतिलुब्धो मन्दो मलाद्यो मदनातुरश्च ॥ २८ ॥

मातृरेखा के शेषभाग में यदि बीच में कटा हुआ सर्पकार निशान प्रतीत होता हो तो वह प्राणी आत्माभिमानी, बड़ालोभी, मूर्ख व मलिनस्वभाववाला होता हुआ काम से याकुल रहता है ॥ २८ ॥

मात्रीसमीपे विशदं विभाति सर्पानुरूपं यदि युग्मचिह्नम् ।

सोयं नरो मज्जति वारिवाहे मध्ये वयस्के सुखतामुपैति ॥ २९ ॥

मात्रीरेखा के समीपवर्ती साफ सुथरे सर्पसमान आकारवाले दो निशान यदि सोहते हों तो वह प्राणी जल में ढूँढता है और मध्यावस्था में घने सुखको पाता है ॥ २९ ॥

सुमध्यमायास्तृतये परुषके चिह्नं त्रिशूलं वृजिनं विभाति ।

श्वासावरोधात्खलु पाशतो वा प्राप्नोति मृत्युं भुवि चौरमुख्यः ॥ ३० ॥

मध्यमा अँगुली की तीसरी पर्वमें त्रिशूल का चिह्न टेढ़ा होकर यदि सोहता हो तो वह प्राणी पृथ्वीमण्डल में मुखिया चोर होकर श्वासावरोध या फांसी से मौतको पाता है ॥ ३० ॥

अनामिकायास्तृतये परुषके संमध्यगोलं वृजिनैकरेखम् ।

सोयं नरश्चौरवरोऽतिलम्पटो विसंकटो वै विकटो नरणाम् ॥ ३१ ॥

अनामिका अँगुलीकी तीसरी पर्वमें टिका हुआ बीचमें गोलाकार व तिरीछी एकरेखा ला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी चोरोंमें मुखिया होकर व्यंभिचारी व मनुष्यों विकट होता हुआ घने संकटवाला होता है ॥ ३१ ॥

सौम्यालयाच्चेचलिता गभीरा भोगा सुरेखा गुरुगा विभाति ।

जैवात्मकोयं मनुजो जवाव्यो ह्यामोति नित्यं ललनासुभोगम् ॥ ३३ ॥

यदि बुधालय से चलीहुई गहरी होकर भोगरेखा बृहस्पति के स्थानपर्यन्त सोहते तो वह प्राणी वेगवान् होकर दीर्घजीवी होताहुआ नित्यही रमणियोंमें भोगको पाता है ॥

३० चन्द्रालयाचेचलिता विभुग्ना मात्रीसुरेखा पितरं पैरेति ।

सोयं मनुष्यो निजवप्रजातो मान्यो वदान्यो विभुतासुपैति ॥ ३३ ॥

चन्द्रालय से चलीहुई टेढ़ी होकर मातृरेखा यदि पितृरेखा से मिलाप करती होते प्राणी अपने पितासे जन्माहुआ मान्य व वदान्य (वक्षा) होकर विभुताको पाता है ॥

(देखो चित्र नं० ५०)

अथैकादशलक्षणाङ्कितकरतलफलमाह—

१ सौम्यालये चेद्विशदं विशालं यवानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

नैजे कुटुम्बे कुरुते विवाहं त्वन्यालये चेत्कलसुक्लमेव ॥ ३४ ॥

बुधालय में साफ़ सुधरा व विशालरूप यवके आकारवाला निशान यदि सोहते तो वह प्राणी अपने कुटुम्ब या बन्धुगणों में व्याहको करता है और यदि अन्य प्राणी भी कहाहुआ ही फल होता है ॥ ३४ ॥

२ समुष्टिका चेत्करवालरूपा भोगा सुरेखा गुरुगा विभाति ।

सोयं ह्यगम्यागमनं करोति चेत्थं सुपैत्री तु फलं तदेव ॥ ३५ ॥

मुठिया समेत तखार के समान आकारवाली होकर भोगरेखा बृहस्पति के स्थानपर्यन्त सोहती हुई यदि सोहती हो तो वह प्राणी मौसी, चाची, दादी, बेटी व वह आदि गमन करता है और यदि ऐसेही पैत्रीरेखा भी प्रतीत होवे तो भी अगम्यागमन करता है ॥

३ भाज्या सशाखा शनिगा विभाति वृत्तेन युक्ता खलु नीचभागे ।

नीचाङ्गनां वै भजते मनुष्यो वाप्री यदीत्थन्तु फलं तदेव ॥ ३६ ॥

भाग्यारेखा (फेटलाइन) शनैश्चर के स्थान में पहुँची व निचलेभाग में शाखा वृत्ताकार निशान से संयुक्त होतीहुई यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी नीचरमणी को सोहती है और यदि ऐसेही पैत्रीरेखा भी प्रतीत होवे तो भी पूर्वोक्त फल होता है ॥ ३६ ॥

४ अङ्गुष्ठमूले विशादस्वरूपं वेदाङ्गतुल्यं यदि भाति भिन्नम् ।

संतापशाली मनुजो विशोकी दीर्घ यदा चेद्वहुशोकमेति ॥ ३७ ॥

अँगूठेकी मूल में शुद्धरूपधार चारअङ्क के समान भिन्न होकर निशान यदि प्रतीत होता हो तो वह प्राणी विशेषकी होकर सन्तापशाली होता है और यदि पूर्वोक्त चिह्न लम्बायमान होकर प्रतीत होवे तो वने शोक को पाता है ॥ ३७ ॥

५ अङ्गष्टशाखा यदि सन्तु तिस्रो वृत्तार्धयुक्ता प्रथमा हि तासाम् ।

लोके भ्रमन्वै मनुजस्तदानीमुद्धात्य पत्नीं पितरं समेति ॥ ३८ ॥

अँगूठेकी शाखायें तीन हों उन्हों में से पहली शाखा अर्धवृत्ताकार से युक्त होती हुई यदि प्रतीत होवे तो वह प्राणी लोक में भ्रमण करताहुआ विजातीय रमणी के साथ व्याहकर पिताके पास पहुँचता है ॥ ३८ ॥

६ मात्रीसमीपे सरलं त्रिरेखं रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम् ।

सोयं नरो मज्जति वारिवाहे प्राप्नोति मृत्युं मदनातुरश्च ॥ ३९ ॥

मात्रीरेखा के पास सीधा तीनरेखाओंवाला व तिरीछी चाररेखाओं से कटाहुआ निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी जल में डूबजाता है और कामातुर होकर मौतको पाता है ॥ ३९ ॥

७ रेखाचतुष्कं सरलं विभाति रेखाचतुष्कैस्तु तिरोविभिन्नम् ।

सोयं निमग्नो हि जलप्रवाहे नानार्तियुक्तो मरणं प्रयाति ॥ ४० ॥

चन्द्रालय के समीप सीधा चाररेखाओंवाला व तिरीछी चाररेखाओं से कटाहुआ निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी जलमें डूबा व अनेकानेक व्याधियों से घिरा हुआ मरण को पाता है ॥ ४० ॥

८ चिह्नं यदा चेन्मणिबन्धसंस्थं तिर्यक्त्रिभिन्नं सरलं त्रिरेखम् ।

सोयं जनो वै पतितो जलौघे जायाजितो याम्यपदं प्रयाति ॥ ४१ ॥

मणिबन्ध (कङ्गे) में टिका व तिरीछा तीन रेखाओं से कटाहुआ सीधा तीन रेखाओं वाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी भार्या से पराजित होकर जलसप्तह में गिराहुआ यमालय को जाता है ॥ ४१ ॥

९ कनिष्ठिकायाः प्रथमे परुषके समद्विकोणं यदि भाति चिह्नम् ।

चौर्याभियोगे लभते हि शास्ति न मन्यते ना निजदोषजालम् ॥ ४२ ॥

कनिष्ठा अँगुली की पहली पर्वते में समद्विकोणवाला निशान यदि सोहता हो तो वह प्राणी चौरी के मुकुदपा में सजा को पाता है परन्तु वह अपने दोषजालको नहीं मानता है ॥ ४२ ॥

१० चन्द्रालयाच्चलिता सुमात्री संयुज्य पैत्रीं कुञ्जमध्युपैति ।

आत्रा युतो वै मनुजो धनाढ्यो धन्यो धरायां धरया समेतः ॥ ४३ ॥

यदि चन्द्रालय से चली हुई मात्रीरेखा पैत्रीरेखा से मिलापकर मङ्गलालय में पूर्ण गई हो तो वह प्राणी धरा समेत व भाई से संयुत होकर धनाढ्य होताहुआ पृथ्वीपर्वत में धन्य होता है ॥ ४३ ॥

११ मात्रीसमुत्था कुटिला सुपैत्री संवृत्तकरणठा मणिबन्धमेति ।

सोयं मनुष्यो वनितावियुक्तो रामे रतो रामपदं प्रयाति ॥ ४४ ॥

मात्रीरेखा से उठी व टेढ़ी होकर पैत्रीरेखा कण्ठमें वृत्ताकार निशान को धारती यदि मणिबन्ध के पास चली जावे तो वह प्राणी रमणी से विषेशी होकर राममें परावर्ह होताहुआ रामालय को जाता है ॥ ४४ ॥ (देखो चित्र नं० ५ ?)

अथ अङ्गेज्ञिमतानुसाराज्जन्मवारमासादिज्ञानमाह—

सुतर्जनी निम्नतलाच्चलन्ती रेखा गभीरा मणिबन्धमेति ।

तां वै सुपैत्रीं प्रवदन्ति सन्तो ह्यायुष्यरेखां कथयन्ति केषि ॥ ४५ ॥

तर्जनी अङ्गुली के निचले भागसे चली हुई गहरी रेखा यदि मणिबन्ध के पास पहुँ जावे तो उसको पण्डितों ने पैत्रीरेखा कहा है और कितेक इंगलिशवेता विद्वान्लोगों आयुष्य रेखा (लाइफलाइन) भी कहते हैं ॥ ४५ ॥

तन्निम्नदेशाच्चलिता गभीरा रेखा यदा चन्द्रमसं प्रयाति ।

तां मातृकां वै प्रवदन्ति प्राज्ञा विज्ञा महान्तो नितरामुदाराः ॥ ४६ ॥

पैत्रीरेखा के निचले देश से गहरी रेखा यदि चन्द्रालयपर्यन्त चली जावे तो उसको अतीव उदार व बड़े प्राज्ञ विज्ञलोगों ने मातृरेखा (हच्छलाइन) कहा है ॥ ४६ ॥

एषा सुरेखा खलु दर्शनीया कुत्र स्थले वै गमनं करोति ।

तदन्तिके चेत्कति सन्ति वज्राशिष्ठना न भिन्ना बहुरेखिकाभिः ॥ ४७ ॥

निश्चयकर यह मातृरेखा किस स्थल में गमन करती है और उसके समीपवर्ती किन्तु से वज्राकार चिह्न प्रतीत होते हैं और यदि वे बहुतसी रेखाओं से छिन्न व भिन्न होते हैं प्रतीत न होवें तो वक्ष्यमाण जन्म वारादि कहना चाहिये ॥ ४७ ॥

रेखास्वरूपं सकलं विचार्य ध्यात्वा सुदेवं गणपं गुरुं च ।

वारं वदेद्दै जनुषो विपश्चिद्ब्रूयात्सुमासं तु तथा तिर्थीश्चै ॥ ४८ ॥

१ गोत्राकुः पृथिवी पृथ्वीत्यमरः । कुःपृथ्वी ततो जातं भौमभिति यावत् २ तरं भिति वा पाठः ॥

देवाश्रिप गणनायक और गुरुदेव का ध्यानधर व रेखाका सारांख प्रचार कर विद्वान् को वार, महीना व तिथि या तारीख को बताना चाहिये ॥ ४८ ॥

पैत्रीसमुत्था विशदा गभीरा मात्री सुरेखा शशिनं समेति ।

तत्रस्थले चेत्खलु चैकवज्रं ज्येष्ठं सज्जूनं प्रवदेत्ससोमम् ॥ ४९ ॥

पैत्रीरेखा से उठी व साफ सुथरी व गहरी होकर मात्रीरेखा यदि चन्द्रालयपर्यन्त चलीगई हो और यदि उसी स्थान में एकला वज्राकार निशान प्रतीयमान होता हो तो ज्येष्ठमास वा चन्द्रवार समेत ज्ञनमास कहना चाहिये ॥ ४९ ॥

वज्रैकचिह्ने विशदे प्रयाते दिनानि व्रूयाद्वासंख्यकानि ।

वज्रद्वये चेत्खलु विंशकानि वज्रत्रये स्युः सति त्रिंशकानि ॥ ५० ॥

यदि शुद्धरूप होकर एकही वज्राकार चिह्न प्रतीत होता हो तो दश दिन व दो वज्र हों तो वीस दिन व तीन वज्र हों तो तीस दिन कहना चाहिये ॥ ५० ॥

मात्रीसुरेखा विशदा गभीरा भौमालयं चेद्वजते यदानीम् ।

आकूटवरं चैव तथा सुमार्चं व्रूयात्सुमासं सह भौमवारम् ॥ ५१ ॥

यदि मात्रीरेखा साफ सुथरी व गहरी होकर मङ्गलालय पर्यन्त चलीजावे तो भौमवार समेत आकूटवर या मार्च मास कहना चाहिये ॥ ५१ ॥

सौम्यालयान्तं यदि याति मात्रीरेखा गभीरा विशदस्वरूपा ।

आगस्टमासं सबुधं मयं वा व्रूयान्न वज्राः खलु चेद्विभिन्नाः ॥ ५२ ॥

साफ सुथरी व गहरी होकर माताकी रेखा यदि बुधालय पर्यन्त चलीजावे और यदि वज्राकार चिह्न भिन्न होकर नहीं प्रतीत होवें तो बुधवार समेत आगस्टमास या मई मास कहना चाहिये ॥ ५२ ॥

मात्रीसुरेखा विशदाऽविभिन्ना गंभीररूपा धिष्ठेण प्रयाति ।

नवम्बरं वा खलु केश्वरार्द्धं वृहस्पतिं वारमुदाहरन्ति ॥ ५३ ॥

यदि मात्रीरेखा साफ सुथरी व गहरी होकर अन्यरेखाओं से नहीं कटती हुई वृहस्पति स्थानपर्यन्त पहुँचजावे तो आचार्यतोग गुरुवार समेत नवम्बर मास या करवरी मास हते हैं ॥ ५३ ॥

रेखा जनन्या विशदस्वरूपा शुक्रालयं याति गभीररूपा ।

एप्रेलमासं भृगुवासंरात्र्यं सेष्टम्बरं वा प्रवदन्ति विज्ञाः ॥ ५४ ॥

माताकी रेखा साफ सुथरी व गहरी होकर यदि शुक्रालय पर्यन्त चलीजावे तो मुवार समेत अपरैल मास या सितम्बरमास पण्डितों ने कहा है ॥ ५४ ॥

धात्रीसुरेखा धवलस्वरूपा मन्दालंयस्याभिमुखं प्रयाति ।

डिसम्बरं वा खलु जानुवारिं सूरात्मजं वै कथयन्ति घस्थम् ॥ ५५ ॥

यदि मात्रीरेखा निर्मलरूप होकर शन्यालय पर्यन्त चलीजावे तो शनिवार समेत सितम्बर या जनवरी मास कहते हैं ॥ ५५ ॥

मात्रीसुरेखा विशदस्वरूपा सूरालंयस्याभिमुखं प्रयाति ।

जौलाईमासं रविवासरात्म्यं वदन्ति विज्ञा वदतां वरेण्याः ॥ ५६ ॥

यदि मात्रीरेखा उज्ज्वलरूप होकर सूर्यालय के सामने आकर प्राप्त होजावे तो कहालों में प्रधान होकर विज्ञलोगों ने रविवार समेत जुलाईमास कहा है ॥ ५६ ॥

मासद्यं चेत्कथितं तु यत्र कथं विचार्यं विदुषा च तत्र ।

एषा सुरेखा विशदा यदा स्यादाद्यो हि मासो भणितः सुधीभिः ॥ ५७ ॥

जिस स्थान में दोमास कहे गये हों वहांपर विद्वानों को कैसे विचार करना चाहिये कहते हैं कि यदि यह पूर्वोक्त मात्रीरेखा उज्ज्वलरूप होकर प्रतीत हो तो पण्डितों पहिलामास कहा है ॥ ५७ ॥

रेखा सुमात्री मलिना यदा चेन्मासो द्वितीयो विदुषा विचार्यः ।

एषा यदा चन्द्रमसं प्रयाति मातुः स्वरूपं लभते हि प्राणी ॥ ५८ ॥

यदि मात्रीरेखा यैली होकर प्रतीत होवे तो पण्डितों को दूसरा मास कहना चाहिए और यदि यह पूर्वोक्त मात्रीरेखा चन्द्रालयपर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी माता का रूप पाता है ॥ ५८ ॥

रक्षा सुमात्री धवलस्वरूपा रेखा गभीरा समुपैति सूरम् ।

वप्रस्वरूपं भजते हि जन्तुर्जाज्वल्यमानो जडताविहीनः ॥ ५९ ॥

यदि मात्रीरेखा लाली व उजली होकर गहरी होती हुई सूर्यालय पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी जडता से विहीन होकर निजतेज से प्रकाशमान होता हुआ पिंडरूप पाता है ॥ ५९ ॥

तिथिः सुरेखा मणिबन्ध संस्था एकैकशश्चेत्खलु त्रिंशदब्दम् ।

वयःक्रमं वै मुनयो वदन्ति संकर्तिताश्चेत्खलु चोनत्रिंशत् ॥ ६० ॥

मणिवन्ध (कब्जे) में टिकी हुई जो तीन रेखायें प्रतीयमान होती हैं उन्होंमें से एक रेखा का वयःक्रम मुनियों ने तीस तीस वर्ष का कहा है और यदि पूर्वोक्त तीनों खायें कटी हुई प्रतीत होवें तो उनतीस वर्षका वयःक्रम जानना चाहिये ॥ ६० ॥

अथ महाराष्ट्राणां मते करतलफलमाह—

सुकोमलं पाणितलं च यस्य नरो भवेत्कामिजनप्रधानः ।

कोमल
इथेली

कलाप्रवीणः कलहेन हीनः कान्ताविलासी कमनीयकायः ॥ १ ॥

जिसकी हथेली वहुतही कोमलसी प्रतीत हो तो वह प्राणी कामी जनों में मुख्य, इलाओं में चतुर व कलह (लड़ाई) से हीन होकर कान्ताविलासी होता हुआ अन्दर शरीरवाला होता है ॥ १ ॥

कठोरकं पाणितलं च यस्य नरो भवेत्कार्यकरो वलाद्यः ।

कठी इथेली

परिश्रमासक्षमना मनस्त्री मन्दो मदातो ममतासमेतः ॥ २ ॥

जिसका हस्ततल कठोरसा प्रतीत होता हो तो वह प्राणी कार्यकारी व वलवान् होकर परिश्रम में मनको लगाये हुए मनमौजी व मूर्ख तथा मदार्त होता हुआ ममता से संपन्न होता है ॥ २ ॥

यदा महत्योङ्गलयो हि सन्ति मनुष्यपाणेस्तु तलाच्छदानीय ।

सोयं जनः शिल्परतः कलाद्यः कुशाग्रबुद्धिः कृतकृत्यकः स्यात् ॥ ३ ॥

जिस मनुष्य की हथेली से जब अँगुलियां बड़ीसी प्रतीत होती हों तो वह प्राणी कारी-कारी में रत व कलाओं से युक्त होकर कुशाग्रबुद्धिवाला होता हुआ कृतकृत्य कहलाता है ॥ ३ ॥

मनुष्यपाणेस्तु तलाच्छदानीं करस्य शाखाः खलु सन्ति इस्वाः ।

सोयं नरः संसृतिलाभकारी बाल्ये स्ववृत्तं नितरां प्रवेत्ति ॥ ४ ॥

यदि मनुष्य के करतल से अँगुलियां छोटीसी प्रतीत होवें तो वह प्राणी दुनिया का आभ उठाता है और बाल्यावस्था में ही अपनी हालत को समझता है ॥ ४ ॥

संक्षेपतः संसंविधा हि सन्ति नारीनराणां कथिताः कराश्च ।

आद्यो हि मुख्यो मुनिसम्मतोपि तथा द्वितीयः श्रुतिकोणयुक्तः ॥ ५ ॥

खी पुरुषों के हाथ संक्षेप से सात प्रकार के कहे हैं उनमें से पहला मुख्य कहाजाता कि जिसको मुनियों ने माना है उसी प्रकार दूसरा चौकोण कहलाता है ॥ ५ ॥

वक्रस्तृतीयो भणितो हि शास्त्रे कोटीस्वरूपः कथितश्चतुर्थः ।

कोणस्वरूपः शरसंमितश्च ज्यौतिष्यरूपः खलु पष्टकोयम् ॥ ६ ॥

सामुद्रिकशास्त्र में तीसरा टेढेरूपवाला कहाता है औथा नोकीला कहलाता है पांकोनीला और छठा ज्यौतिष्यरूप कहा है ॥ ६ ॥

प्रोक्तः पुराणैः खलु सप्तमश्च मिश्रस्वरूपो मिलिताङ्गुलीकः ।

आरक्षवर्णो भृदुतासमेतो सौमांसलो लोमशवृन्दहीनः ॥ ७ ॥

मिश्रस्वरूप, मिली अँगुलियोवाला सातवां हाथ पुरातन पण्डितो ने कहा है जोकि उलालवर्ण व कोमलतासमेत होकर बड़ा मांसल होता हुआ लोमसमूहों से हीन होता है ॥

१ स्थौत्येन युक्तो दृढतासमेतो वृद्धाङ्गुलीको यदि भाति पाणिः ।

सोयं नरः शूरतरः सुधीरः प्रोक्तो हि मल्लो विदितो धरायाम् ॥ ८ ॥

यदि मोटा—मज्जबूत बड़ा अँगुलीवाला हाथ सोहता हो तो वह प्राणी बड़ा सूरभा सुधीर होकर धरामएडल में विरुद्धात होता हुआ मल्ल (पहलवान) कहलाता है ॥ ८ ॥

२ गोलाङ्गुलीको मनुजस्य यस्य विभाति पाणिर्भृदुतासमेतः ।

सोयं जनः शुद्धतरस्वभावो भेदस्य वेत्ता खलु गुप्तकस्य ॥ ९ ॥

जिस मनुष्य का हाथ कोमलता समेत गोल अँगुलीवाला होता है तो वह प्रसीधे स्वभाववाला होकर गुप्तभेद का ज्ञाता होता है ॥ ९ ॥

गोलाङ्गुलीको यदि नास्ति पाणिः पारुष्ययुक्तो मनुजस्तदानीम् ।

कामी कलावान्कलहेन युक्तो मन्दो मलाढ्यो ममताविहीनः ॥ १० ॥

यदि गोल अँगुलीवाला हाथ न हो तो वह प्राणी कठोर, कामी, कलावान् व कलतथा मन्द व मलाढ्य होकर ममता से विहीन होता है ॥ १० ॥

३ वक्राङ्गुलीको यदि भाति पाणिश्चारक्षवर्णो मलिनः कठोरः ।

परिश्रमासक्षमना मनुष्यस्त्वारामसक्तो रमया समेतः ॥ ११ ॥

यदि कुछेक लालवर्ण, मैला, कठोर होकर टेढ़ी अँगुलीवाला हाथ सोहता हो तो प्राणी मेहनती, आरामतलव व लक्ष्मीवान् होता है ॥ ११ ॥

पांलीस्वरूपो यदि भाति पाणिः प्रीत्यायुतो दिव्यतनुर्दयालुः ।

नान्तंशुकालंकरणैः समेतो मानी महौजा मदनांतुरश्च ॥ १२ ॥

यदि नोकीला हाथ सोहता हो तो वह प्राणी प्रीतिमान्, दिव्यशरीरी, दयावानेक वस्त्र व अलंकारोंवाला, मानी व महावलवान् होकर कामी होता है ॥ १२ ॥

कोणस्वरूपो यदि भाति पाणिः प्रसंब्रताहीनवपुर्मनुष्यः ।

धनाभिलाषी भ्रमतेष्यजसं भ्रान्तो भयार्तो धनतासुपैति ॥ १३ ॥

यदि कोनीला हाथ सोहता हो तो वह प्राणी प्रसंब्रता से हीनतनुवाला होकर धन-
भिलाषी होताहुआ निरन्तर दूमताहै और भ्रान्तव भयार्त होकर धनसमूहोंको पाताहै ॥ १३ ॥

ज्यौतिष्यरूपो मनुजस्य यस्य विभाति पाणिः खलु शुद्धरूपः ।

सोयं नरः स्यान्निगमागमज्ञः सत्यप्रवक्ता निजदेवभक्तः ॥ १४ ॥

जिस प्राणी का हाथ शुद्धरूप व ज्यौतिष्य रूपवाला होकर सोहता हो तो वह मनुष्य
द व शास्त्र का ज्ञाता व सत्यवक्ता होकर अपने इष्टदेव का भक्त होता है ॥ १४ ॥

मिश्राङ्गुलीको मलताविहीनो विभाति पाणिः पुरुषस्य यस्य ।

सोयं मनुष्यो धनतासमेतो विपत्तिमल्पां लभते कदापि ॥ १५ ॥

जिस पुरुष का हाथ मलसमूहों से हीन व मिली अँगुलीवाला होकर सोहता हो तो
वह प्राणी धनसमूहोंसे संपन्न होताहुआ किसी समय थोड़ीसी विपदाको पाताहै ॥ १५ ॥

नखफलान्याह—

लम्बायमानानि तथायतानि संरक्षवर्णानि नखानि यस्य ।

सोयं जनः स्यात्कविचृन्दमुख्यः साँवत्सरो वेदविदां वरेण्यः ॥ १६ ॥

जिसके नख लम्बे व चौड़े होकर लालवर्णवाले प्रतीत हों तो वह प्राणी कविसमूहों
प्रधान होकर ज्योतिःशास्त्र का ज्ञाता होताहुआ वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ होता है ॥ १६ ॥

वक्रस्वरूपाणि नखानि सन्ति दीर्घायमाणानि जनस्य यस्य ।

सोयं नरो वक्तरस्वभावो वेश्याप्रसक्तो वनिताविहीनः ॥ १७ ॥

जिस जन के नख टेढ़े व लम्बे होकर प्रतीत होते हों तो वह प्राणी टेढ़ेस्वभाववाला व
र्यागामी होकर रमणी से विहीन होता है ॥ १७ ॥

स्वल्पस्वरूपा मनुजस्य यस्य आपीतवर्णश्च पुनर्भवाः स्युः ।

सोयं जनः स्यात्सभिको हि धूर्तों मिथ्याप्रभाषी ममतासमेतः ॥ १८ ॥

जिस मनुष्य के छोटे व पीलेसे नख प्रतीत होते हों तो वह प्राणी फड़वाज या दगा-
ज, छलछन्दी और झूठा होकर ममतासे सम्पन्न होता है ॥ १८ ॥

श्यामायमाना नखरा हि सन्ति क्षुद्रस्वरूपाः पुरुषस्य यस्य ।

धूर्तस्वभावो मनुजस्तदानीं व्याजेन युक्तो विदितो धरयाम् ॥ १९ ॥

जिस पुरुषके नख काले व छोटेसे प्रतीत होते हों तो वह प्राणी धूर्त्तस्वभाव व होकर पृथ्वीतल में प्रख्यात होता है ॥ १६ ॥

पुनर्भवाश्चेचिपिटा हि यस्य श्यामायमानाः पृथुताविहीनाः ।

सोयं मनुष्यश्वलतासमेतो निर्लज्जरूपो नितरां विलासी ॥ २० ॥

जिसके नख चौड़ाई से विहीन व काले वर्णवाले होकर चपड़ेसे प्रतीत होते हों वह प्राणी छली व निर्लज्जरूप होकर बड़ाभोगी होता है ॥ २० ॥

लम्बायमानानि तथा सितानि नखानि शुद्धानि भवन्ति यस्य ।

सोयं नरः स्यादुपकारकारी मान्यो वदान्योऽवनिराजवन्द्यः ॥ २१ ॥

जिसके नख लम्बे, सफेद होकर स्वच्छता से प्रतीत होते हों तो वह प्राणी उपनान्य और वदान्य होकर राजाओं से वन्दनीय होता है ॥ २१ ॥

आरक्षवर्णा नखरा यदानीं भवन्ति काश्या मनुजस्य यस्य ।

व्युत्पन्नबुद्धिश्रपलः कृशाङ्गो व्याख्याकरः स्यादुपदेशकारी ॥ २२ ॥

जिस मनुष्य के नख पतले व रक्षवर्णवाले प्रतीत होते हों तो वह प्राणी व्युत्पन्नबुद्धिवाला व चलते पुर्जवाला व दुवला होकर व्याख्याकारी होताहुआ उपदेशकहाता है ॥ २२ ॥

गोलस्वरूपा नखरा हि सन्ति श्वेतेन हीनां मनुजस्य यस्य ।

चिन्तासमूहेन युतो मनुष्यो धनाभिलाषी भ्रमते भयार्ताः ॥ २३ ॥

जिस पुरुष के नख सफेद होकर गोलाकारसे प्रतीत होते हों तो वह मनुष्य चिन्तासमूहों से घिराहुआ व धनाभिलाषी होकर डरसे डरताहुआ धूमाकरता है ॥ २३ ॥

नखस्थचिह्नफलमाह-

वृद्धाङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं विभाति चिह्नं धवलस्वरूपम् ।

प्रेमी मनुष्यो रमणीसमेतो धन्यो धरायां धनतामुपैति ॥ २४ ॥

यदि अङ्गूठे के नख पर टिकाहुआ सफेद निशान सोहता हो तो वह प्राणी प्रेमी, न परायण व धरामएडल में धन्य होकर धनसमूहों को पाता है ॥ २४ ॥

वृद्धाङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं श्यामायमानं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं जनो मन्दमातिर्महौजा मानेन हीनो ममतां प्रयाति ॥ २५ ॥

यदि अँगूठे के नखपर टिका हुआ काला निशान प्रतीत होता हो तो वह प्राणी मन्द-
मति, महावलवान् व मानहीन होकर ममताको पाता है ॥ २५ ॥

आद्याङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं श्वेतस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सम्पत्समूहं लभते नितान्तं श्यामे तु चिह्ने धनहानिमेति ॥ २६ ॥

यदि तर्जनी अँगुली के नखपर टिका हुआ सफेदसा कोई दाग देख पड़ता हो तो वह प्राणी बड़ी दौलत को पाता है और यदि वह निशान कालासा भासता हो तो वह प्राणी धनहानि को पाता है ॥ २६ ॥

मध्याङ्गुलेश्चेन्नखरोपरिस्थं गौरस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सांयात्रिकःस्यान्मनुजस्तदानीमाकस्मिकं भृत्युमुपैति नीले ॥ २७ ॥

यदि मध्यमा अँगुली के नखपर टिका हुआ सफेद निशान प्रतीत होता हो तो वह प्राणी जहाजी होता है और यदि वह निशान काला दीखता हो तो वह मनुष्य अचानक मौत को पाता है ॥ २७ ॥

अनामिकाया नखरोपरिस्थं चिह्नं यदानीमवदातरूपम् ।

कीर्तिं च वित्तं लभते नितान्तं श्यामायमाने त्वपकीर्तिमेति ॥ २८ ॥

यदि अनामिका अँगुली के नखपर टिका हुआ सफेद दाग देख पड़ता हो तो वह प्राणी नामवरी व बड़ी दौलत को पाता है और यदि काला निशान भासता हो तो वह बुराई को पाता है ॥ २८ ॥

कनिष्ठिकाया नखरोपरिस्थं शुक्लस्वरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सावैत्संसरः कीर्तियुतो धनाढ्यो व्यापारवृद्धिनदाद्वृद्धिमेति ॥ २९ ॥

यदि कनिष्ठिका अँगुली के नखपर टिका हुआ सफेद निशान सोहता हो तो वह प्राणी ज्योतिषी, कीर्तिमान्, धनवान् होकर व्यापारसमूहों से घनी वृद्धिको पाता है ॥ २९ ॥

श्यामायमानं यदि भाति चिह्नं पीतस्वरूपं यदि वा विभाति ।

सोयं नरो व्याधिपरो नितान्तमल्पे वयस्के मरणं प्रयाति ॥ ३० ॥

यदि कनीनिका अँगुली के नख पै काला निशान सोहता हो या पीला निशान भासता हो तो वह प्राणी अत्यन्त रोगी बना रहता है और थोड़ी ही उमर में मरजाता है ॥ ३० ॥

गुरुस्थानफलमाह-

प्रदेशिनीमूलगतं विशुद्धं वृहस्पतेः स्थानमुदाहरन्ति ।

१ नीले तु मृत्युं जहसा समेति इत्यपि पाठः २ ज्योतिर्वेत्ता ३ व्यापारसमूहादिति ॥

समुन्नतं यस्य करे विभाति सुखी सुविद्यो विषयी नरः स्यात् ॥ ३१

तर्जनी अङ्गुली की मूळ में प्राप्त साफ सुथरा बृहस्पति का स्थान कहते हैं जिसके हाथ में ऊंचा होकर सोहता हो तो वह प्राणी सुखी व विद्वान् होकर विद्वान् होता है ॥ ३१ ॥

अधोनतं चेन्मनुजस्य यस्य गुरुस्थलं वै विशदं विभाति ।

महालसी स्यात्पुरुषो धनाशी सुसाहसी काव्यकरो विवादी ॥ ३२

जिस प्राणी के पाणितल में बृहस्पति का स्थान साफ नीचा होकर भासता हो वह पुरुष महालसी, सुसाहसी व वहसी होता हुआ धनाशी होकर कविता का कर्ता वाला होता है ॥ ३२ ॥

देवेन्द्रवन्द्यालयगा यदानीमृज्वी सुरेखा विशदा विभाति ।

सोयं मनुष्यो महतामुपासी सर्वेषु कार्येषु च सिद्धिमेति ॥ ३३

यदि बृहस्पति के स्थान में साफ सीधीसी रेखा सोहती हो तो वह प्राणी आदमियों का अनुयायी होकर सब कामों में सिद्धिको पाता है ॥ ३३ ॥

पूज्यालयस्था विशदा यदानीं क्षुद्राः सुरेखा बहुशो विभान्ति ।

सोयं नरो धर्मपरो नितान्तं सिद्धिं स्वकार्ये लभते कदापि ॥ ३४

यदि बृहस्पति के स्थान में टिकी हुई बहुतसी छोटी २ रेखायें सोहती हों तो वह प्राणी अत्यन्त धर्मपरायण होकर कभी अपने कार्य में सिद्धिको पाता है ॥ ३४ ॥

एका कुरेखा गुरुगा यदानीं पारंगता स्यान्मनुजस्य यस्य ।

शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यो मन्दस्वभावो ममतामुपैति ॥ ३५

जिस मनुष्य के करतल में यदि बृहस्पति की जगह में एक छोटीसी रेखा आरपा हो गई हो तो वह प्राणी शीश में चोट चपेट को पाता है और मन्दस्वभाववाला हुआ ममता को पाता है ॥ ३५ ॥

रक्तस्वरूपा विशदैकरेखा पूज्यालयस्था विरला विभाति ।

वामां मनोज्ञां लभते मनुष्यो धर्मानुयायी धनतासमेतः ॥ ३६

बृहस्पति के स्थान में टिकी हुई साफ एक रेखा चटकीले रक्तवाली विरल होती है तो वह प्राणी सुन्दरी रमणी को पाता है और धनसमूहों से संपन्न होते हुए धर्मानुयायी होता है ॥ ३६ ॥

देवेशवन्द्यालयगं विशुद्धं तारास्वरूपं यदि भाति निहम् ।

सोयं कुलीनो मनुजो महेच्छो धन्यो धरायां धनदानुगः स्यात् ॥३७॥
यदि बृहस्पति के स्थान में प्राप्ति साफ़ तारा के समान निशान सोहता हो तो वह
प्राणी कुलीन व महाशय होकर धरामएडल में धन्य होता हुआ धनेश (कुवेर) का
अनुगामी होता है ॥ ३७ ॥

नार्या यदा चेन्महतां जनानां तारानुरूपं गुरुगं विभाति ।

सा नष्टकीर्तिर्विधनाभिमाना स्वच्छन्दरूपा विचरेन्नितान्तम् ॥ ३८ ॥

यदि वडे लोगों की रमणियों के करतल में तारा के समान निशान बृहस्पति के
स्थान में पहुँचकर सोहता हो तो वह नारी कि जिसकी नामवरी जाती रहती है धन व
अभिमान भी चला जाता है और जोकि स्वेच्छाचारिणी होकर अत्यन्त विचरती है ॥ ३८ ॥

गुर्वालयस्थं विशदस्वरूपं चिह्नं चतुष्कोणयुतं विभाति । □

बाधाविमुक्तो मनुजस्तदानीं सौभाग्यशाली सुखतासमेतः ॥ ३९ ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में साफ़ सुथरा चार कोनोवाला निशान सोहता हो तो वह
प्राणी बाधाओं से विमुक्त व सौभाग्यशाली होकर सुखसमूहों से संपन्न होता है ॥ ३९ ॥

इज्यालयस्थं विशदस्वरूपं बिन्दुप्रयुक्तं यदि भाति चिह्नम् ।

आत्मम्भरिःश्यान्मनुजस्तदानीं नैजे कुटुम्बे त्वपकीर्तिमेति ॥ ४० ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में टिका हुआ साफ़ सुथरा बिन्दु (नुकेवाला) निशान
सोहता हो तो वह प्राणी पेटू होकर अपने कुटुम्ब में बुराई को पाता है ॥ ४० ॥

चिह्नं त्रिकोणं धिषणालयस्थं भिन्नं त्वधोगं यदि दृश्यते चेत् । △

सोयं जनो दीपशालाकिकाढ्यो दौर्भाग्यशाली जनतापकारी ॥ ४१ ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में टिका हुआ त्रिकोणाकार निशान दबा हुआ देखा जाता
हो तो वह प्राणी दियासलाई के बनाने से धनाढ्य होकर दौर्भाग्यशाली होता हुआ
जनसमूहों का अपकारी होता है ॥ ४१ ॥

समुन्नतं चेद्धिषणालयस्थं चिह्नं त्रिकोणं विशदं विभाति । △

सोयं नरो मन्त्रिवरो महौजा विख्यातकीर्तिर्विमलस्वभावः ॥ ४२ ॥

यदि बृहस्पति के स्थान में टिकाहुआ साफ़ सुथरा त्रिकोण का निशान ऊंचासा
तीत होता हुआ सोहता हो तो वह प्राणी प्रधानमन्त्री व बलवान् तथा प्रख्यातकीर्तिवाला
होकर अमल स्वभाववाला होता है ॥ ४२ ॥

पूर्वोक्तचिह्नं विशदं विशालं गम्भीरेखं यदि भ्राजमानम् ।

गर्वी धनाद्यो मनुजस्तदानीं स्वार्थी सहायी विमना विरोधी ॥ ४३ ॥

यदि पूर्वोक्त निशान साफ सुथरा, बड़ा व गहरी रेखावाला होकर सोहता हो तो प्राणी गर्वी, धनाद्य, स्वार्थी, सहायी और विमन होकर विरोधी होता है ॥ ४३ ॥

आयुष्यरेखाफलमाह—

प्रदेशिनीमूलतलाचलन्ती चाक्रान्तशुक्रा मणिबन्धमेति ।

आयुष्यरेखां कथयन्ति सन्तः पैत्रीं सुरेखां प्रवदन्ति केपि ॥ ४४ ॥

तर्जनी अङ्गुती के मूलतल से चलती व शुक्रालय को तैं करती हुई मणिबन्ध के पहुँचजावे तो उस रेखाको आयुरेखा कहते हैं और कितेक आचार्य पैत्रीरेखा कहते हैं ॥ ४४ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं छिन्ना न भिन्ना खलु लम्बिता चेत् ।

शुद्धस्वभावो मनुजोऽतिधन्यो जैवातृकः स्याद्विपदाविहीनः ॥ ४५ ॥

यह रेखा साफ कटी, फटी न होकर यदि लम्बी भासती हो तो वह प्राणी शुद्धस्वभावाला व महाधनवान् तथा आयुष्यवान् होकर विपदाओं से विहीन होता है ॥ ४५ ॥

श्यामायमाना वित्तं विभाति पैत्री सुरेखा पुरुषस्य यस्य ।

मात्सर्ययुक्तो मनुजो मलाद्यो दौर्जन्यशाली कृशतासमेतः ॥ ४६ ॥

जिस पुरुष के हाथ में पैत्री रेखा चौड़ी होकर कालीसी सोहती हो तो वह प्राणी दाहयुक्त न मलाद्य होकर दौर्जन्यशाली होता हुआ दुबला वना रहता है ॥ ४६ ॥

पैत्री सुरेखा यदि लम्बमाना संरक्षणी विशदा विभाति ।

सोयं जनः क्रोधयुतो नितान्तं वन्यस्य बुद्धिं भजते बलाद्यः ॥ ४७ ॥

यदि पैत्रीरेखा लम्बी, साफ व लाल वर्णवाली होकर सोहती हो तो वह प्राणी क्रोधी व बलवान् होकर वनेचर की बुद्धि को भजता है ॥ ४७ ॥

वप्रैस्य रेखा मिलिता जनन्यामन्यासमेता विशदा विभाति ।

सोयं जनो दुर्बलतासमेतो दान्तस्वभावो दैयितारतश्च ॥ ४८ ॥

यदि पैत्रीरेखा मात्रीरेखा में मिलगई हो और अन्य रेखाओं से संयुक्त होकर साफ हो तो वह प्राणी दुबला व दान्तस्वभाववाला होता हुआ दयिता में रत रहता है ॥ ४८ ॥

हस्तदये चेन्मनुजस्य यस्य मध्ये विवर्णा यदि भाति पैत्री ।

आजैन्मरोगी मनुजस्तदानीं नीचस्वभावः कृशतामुपैति ॥ ४९ ॥

१ विस्तीर्णा २ दुर्बलता ३ पैत्रीरेखा ४ प्रियासङ्कः ५ जन्मपर्यन्तमिति यावत् ॥

जिस मनुष्य के दोनों हाथों के बीच में यदि पैत्रीरेखा फीके रंगवालीं होकर सोहती हो तो वह प्राणी जन्मपर्यन्त बीमार बना रहता है और नीचस्वभाववाला होकर दुर्वलता को पाता है ॥ ४६ ॥

गुर्वालयाच्चलिता सुपैत्री चाक्रम्य शुक्रं मणिबन्धमेति ।

सोयं कुलीनो धनतासमेतश्चातुर्युक्तश्चपलस्वभावः ॥ ५० ॥

यदि बृहस्पति के स्थान से चली हुई पैत्रीरेखा शुक्रालय को तै करती मणिबन्ध (कब्जे) के पास पहुँच जावे तो वह प्राणी कुलीन, धनवान् व चतुर होकर चञ्चलस्वभाववाला होता है ॥ ५० ॥

वप्रोपरिस्था विशदस्वरूपा भौमी सुरेखा पुरुषस्य यस्य ।

व्यापद्विहीनो मनुजस्त्वरोगी संपत्तिशाली सुखतामुपैति ॥ ५१ ॥

जिस पुरुष की पैत्रीरेखा के ऊपर टिकी हुई साफ सुथरी मङ्गल की रेखा प्रतीयमान होती हो तो वह प्राणी विपदाओं से विहीन व नीरोगी होकर सम्पत्तिशाली होता हुआ सुखसमूहों को पाता है ॥ ५१ ॥

पैत्रीसुमध्याच्चलिता यदानीं शुक्रोच्चगा चेद्विशदा विभाति ।

सोयं जनो गच्छति सर्वदेशं सौभाग्यशाली सरलस्वभावः ॥ ५२ ॥

यदि पैत्रीरेखा के मध्यभाग से चली हुई साफ सुथरी रेखा शुक्रालय के ऊपर सोती हो तो वह प्राणी सब मुल्कों की सफर करता है और सौभाग्यशाली होकर सीधे संभाववाला होता है ॥ ५२ ॥

पैत्रीसमुत्था सरलैकरेखा देवेन्द्रवन्द्योपरिगा विभाति ।

सोयं नरः कीर्तियुतः सुविद्यः सर्वार्थसिद्धिं लभते धनाद्यः ॥ ५३ ॥

यदि पैत्रीरेखा से उठी हुई सीधी एक रेखा बृहस्पतिस्थान के ऊपर सोहती हो तो वह प्राणी यशस्वी, विद्वान् व धनवान् होकर सर्वार्थसिद्धि को पाता है ॥ ५३ ॥

पैत्रीसमुत्था यदि भाग्यरेखा मन्दालयं याति विशुद्धरूपा ।

सोयं जनो ग्रामधनादियुक्तो भूम्यश्वयानादिभिरावृतः स्यात् ॥ ५४ ॥

यदि पैत्रीरेखा से उठी हुई भाग्यरेखा साफ सुथरी होकर शन्यालयपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी गांव, धन आदिकों से संयुक्त होता हुआ जमीन, घोड़ा व गाड़ी आदि वाहियों से घिरा रहता है ॥ ५४ ॥

आरम्भदेशे मिलिता यदानीं चित्तादिरेखा निखिला विभान्ति ।
रोगाभिभूतो मनुजस्तदानीमाकस्मिकं मृत्युमुपैति नूनम् ॥ ५५ ॥

यदि आरम्भदेश में सौभाग्य आदि सारी रेखायें आपसमें मिली हुईं सोहती हो तो वह प्राणी बीमार रहता हुआ अवश्य ही एकाएकी मौत को पाता है ॥ ५५ ॥

बृद्धाङ्गलेवै निकटचलन्ती पैत्री सुरेखा रविजं प्रयाति ।

सन्तानहीनो मनुजस्तदानीं संतापशाली सुखतावियुक्तः ॥ ५६ ॥

यदि श्रीगूडे के समीपवर्ती देश से चलती हुई पैत्री रेखा शन्यालयपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी सन्तानरहित होकर संतापशाली होता हुआ सुखता से विहीन बना रहता है ॥ ५६ ॥

सौभाग्यरेखाफलमाद—heart line

सौभ्यालयाचेचलिता यदानीं रेखा गभीरा गुरुगा विभाति ।

सौभाग्यरेखां प्रवदन्ति सन्तश्चित्तस्य रेखां कथयन्ति केपि ॥ ५७ ॥

यदि बुधालय से चली हुई रेखा गहरी व गुरुगेहगामिनी होकर सोहती हो तो उन विद्वानों ने सौभाग्यरेखा कहा है और किंतुक आचार्य चित्त की रेखा कहते हैं ॥ ५७ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं विस्तीर्णरूपा धिषणं प्रयाति ।

वित्ताभिलाषी मनुजोतिलुभ्यः स्वार्थी मुशंकी भ्रमतेऽप्यजस्म ॥ ५८ ॥

यह सौभाग्यरेखा साफ सुधरी व चौड़ी होकर बृहस्पति के स्थान को चली जाती है तो वह प्राणी घनाभिलाषी व अतिलोभी तथा मतलबी होकर बड़ी शङ्का करता हुआ हमेशा घूमता है ॥ ५८ ॥

सौभाग्यरेखा विशदा यदानीं पीतस्वरूपा गुरुगा विभाति ।

सोयं नरो धूर्ततस्वभावो दौर्भाग्यशाली प्रथितो धरायाम् ॥ ५९ ॥

यदि सौभाग्यरेखा साफ व पीली होकर गुरुगेह को प्राप्त हुई सोहती हो तो वह प्राणी धूर्तस्वभाववाला व दौर्भाग्यशाली होता हुआ पृथ्वीमण्डल में प्रख्यात होता है ॥ ५९ ॥

आपीतवर्णा यदि चित्तरेखा गम्भीररूपा गुरुगेहमेति ।

सोयं मनोव्याधियुतो मनुष्यो रोगाभिभूतो रमयाविहीनः ॥ ६० ॥

यदि चित्त की रेखा (हार्टलाइन) कुछेक पीली व गहरी होकर बृहस्पति के स्थान

वा आगुण्यरेखामिति वा पाठः ॥

को पहुँच जावे तो वह प्राणी मानसीव्याधि से संयुक्त व रोगी होकर लक्ष्मी से विहीन होता है ॥ ६० ॥

स्वान्तस्य रेखा किल रक्षवर्णा गुर्वालियस्था मनुजस्य यस्य ।

दौर्जन्यहीनोऽधमताविहीनः सौभाग्यशाली सुखतामुपैति ॥ ६१ ॥

जिस प्राणी के करतल में सौभाग्यरेखा लालवर्णवाली होकर बृहस्पति के स्थान में इकी हुई सोहती हो तो वह प्राणी दुर्जनता व अधमता से विहीन होकर सौभाग्यशाली होता हुआ सुखता को पाता है ॥ ६१ ॥

सूर्यालयाच्चेच्छनिगेहतो वा चित्तस्य रेखा चलिता यदानीष् ।

आजन्मरोगी मनुजस्तदानीं जीवेच्छबृत्या भयतासमेतः ॥ ६२ ॥

यदि सूर्यालय या शन्यालय से चली हुई चित्त की रेखा (हार्टलाइन) सोहती हो तो वह प्राणी जन्मपर्यन्त रोगी बना रहता है और डरता हुआ शबृत्यि से जीता है ॥ ६२ ॥

सौभाग्यरेखा यदि सर्वदेशे छिन्ना विभिन्ना गुरुगेहगा चेत् ।

भार्यावियुक्तो मनुजस्तदानीमप्रीतिकारी धनतापहारी ॥ ६३ ॥

यदि सौभाग्यरेखा सर्व देश में कटी-फटी हुई बृहस्पति के स्थान में पहुँच गई हो तो वह प्राणी भार्या से वियुक्त व अप्रीतिकारी होकर धनसमूहों का विनाश करता है ॥ ६३ ॥

शाखाद्येनापि युता यदानीमेका गुरुस्था शनिगाऽपरा चेत् ।

रामासमेतः पुरुषस्तदानीमानन्दयुक्तो रमते रसायाम् ॥ ६४ ॥

यदि सौभाग्यरेखा दो शाखाओं से संयुक्त हो उन्होंमें से एक शाखा बृहस्पति के स्थान में गई हो और दूसरी शाखा शनैश्वर के स्थान में पहुँची हो तो वह प्राणी मुन्दरी समेत व आनन्दयुक्त होता हुआ पृथ्वी में रमता है ॥ ६४ ॥

शाखाविहीना विशदा यदानीं गम्भीररूपा गुरुगा विभाति ।

दौर्भाग्यशाली विधनो मनुष्यो दारिद्र्ययुक्तो भ्रमते भयार्तः ॥ ६५ ॥

यदि सौभाग्यरेखा साफ सुथरी व गहरी होकर गुरुस्थान में पहुँची हुई सोहती हो तो वह प्राणी दौर्भाग्यशाली, अधनी व दरिद्री होकर डरता हुआ दूमता है ॥ ६५ ॥

मन्दालये चेन्मनुजस्य पाणौ सौभाग्यमात्र्यौ मिलिते यदानीय् ।

नानार्तियुक्तो मनुजस्तदानीमाकस्मिकं मृत्युमुपैति नूनम् ॥ ६६ ॥

जिस प्राणी के पाणितल में शनैश्चर के स्थान में सौभाग्यरेखा और मातृरेखा द्वारा प्रतीत होवें तो वह मनुष्य नानाव्याधियों से संयुक्त होताहुआ निश्चयकर एक मौतको पाता है ॥ ६६ ॥

मातृरेखाफलमाह— *Head Line*

चन्द्रालयचेच्छलिता सुरेखा गंभीररूपा पितरं प्रयाति ।

✓ तां शीर्षरेखां कवयो वदन्ति मात्रीं तु रेखां प्रवदन्ति केपि ॥ ६७ ॥

चन्द्रालय से चलीद्वारा रेखा गहरी होकर पैत्रीरेखा के पास पहुँचजावे तो कवियोंने शीर्षरेखा (छड़लाइन) कहाहै और कितेक आचार्य मातृरेखा कहते हैं ॥ ६७ ॥

✓ एषा सुरेखा यदि नास्ति भिन्ना शास्त्राविहीना विशदा विभाति ।
सोयं नरो बुद्धिवरो बलाढ्यो विख्यातकीर्तिर्विदितो धरायाम् ॥ ६८ ॥

यदि यह 'मातृरेखा' कटी फटी न हो व शाखाओं से हीन होकर उज्ज्वलस्त्र सोहती हो तो वह प्राणी बुद्धिमान् व बलवान् व बड़ी नामवरीवाला होकर धरायाम् में प्रसिद्ध होता है ॥ ६८ ॥

✓ मात्री सुरेखा यदि पीतवर्णा विस्तीर्णरूपा जनकान्तिके चेत् ॥
सोयं जनः स्यात्कृशतासमेतः स्मृत्या विहीनः सरलस्वभावः ॥ ६९ ॥

यदि मातृरेखा पीली व चौड़ी होकर पैत्रीरेखा के पास सोहती हो तो वह प्रादुर्बला व स्मरणशक्ति से रहित होताहुआ सीधे स्वभाववाला कहाता है ॥ ६९ ॥

शीर्षस्य रेखा कृशगा यदानीं लम्बायमाना मनुजस्य पाणौ ।

सोयं नरः स्यात्सभिको हि धूर्तो नाज्ञाकरः कर्मकरः कृशाङ्गः ॥ ७० ॥

जिस मनुष्य के करतल में मातृरेखा पतली व लम्बी होकर सोहती हो तो वह प्रफड़वाज या दग्गावाज, छलछन्दी, कार्यकारी व दुबला होकर आज्ञाकारी नहीं होता है ॥ ७० ॥

विस्तीर्णरूपा यदि मातृरेखा श्यामायमाना पुरुषस्य यस्य ।

सोयं जनो वै जठरस्य रोगं प्राप्नोति नित्यं सुखताविहीनः ॥ ७१ ॥

त्रै घर्क जिस पुरुषके पाणितल में यदि मातृरेखा चौड़ी व काली होकर सोहती हो तो प्राणी सुखसमूहों से हीन रहताहुआ इमेशा पेटकी बीमारीको पाता है ॥ ७१ ॥

मातुः सुरेखोपरिगं विशुद्धं संरक्षवर्णं यदि भाति चिह्नम् ।

शीर्षाभिघातं लभते मनुष्यो गौरे तु वैद्यो विदितो धरायाम् ॥ ७२ ॥

यदि मातृरेखा के ऊपरले भाग में प्राप्तहुआ निशान साफ सुथरा व लालवर्णवाला होकर सोहता हो तो वह प्राणी शीश में चोट चपेट को पाता है और यदि पूर्वोक्त निशान सफेद होकर प्रतीत हो तो वह वैद्य-डाक्टर या हकीम होताहुआ पृथ्वीमण्डल में प्रख्यात होता है ॥ ७२ ॥

उर्ध्वरेखाफलमाह—

रेखा चलन्ती मणिबन्धदेशान्मध्याङ्कलिं याति गभीररूपा ।

तामूर्ध्वरेखां प्रवदन्ति सन्तो वित्तस्य रेखां कथयन्ति केपि ॥ ७३ ॥

मणिबन्ध देश से चलती हुई रेखा गहरी होकर मध्यमा अँगुली के पास जाती है तो उसको विद्वान् लोग उर्ध्वरेखा कहते हैं और कितेक आचार्य दौलत की रेखा बतलाते हैं ॥ ७३ ॥

भाग्यस्य रेखा मणिबन्धदेशाद्भीररूपा यदि याति मन्दम् ।

सोयं धनाङ्को मनुजो मनीषी संपत्तिशाली सुखतामुपैति ॥ ७४ ॥

मणिबन्ध (कब्जे) से चली हुई यह भाग्यरेखा गहरी होकर यदि शन्यालय पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी धनवान्, बुद्धिमान् व सम्पत्तिशाली होकर सुखसमूहों को पाता है ॥ ७४ ॥

आक्रम्य चन्द्रं यदि भाग्यरेखा मन्दालयं याति विशुद्धरूपा ।

सोयं जनो मध्यधनो हि लोके लावण्ययुक्तां ललनामुपैति ॥ ७५ ॥

यदि विशुद्धरूपवाली भाग्यरेखा चन्द्रालय को आक्रमण कर मन्दालय पर्यन्त चली जाती है तो वह प्राणी लोक में मध्यम धनवाला होकर सुन्दरतासंपन्न सुन्दरी को पाता है ॥ ७५ ॥

पैत्रीसमुत्था यदि भाग्यरेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति ।

नैजात्कुटुम्बात्सुखतां समेत्य संपत्तिशाली सरलस्वभावः ॥ ७६ ॥

यदि पैत्रीरेखा से उठी हुई भाग्यरेखा गहरी व साफ होकर सोहती हो तो वह प्राणी अपने कुटुम्ब से सुखसमूहों को पाकर संपत्तिशाली होता हुआ सीधे स्वभाववाला कहलाता है ॥ ७६ ॥

भाग्यस्य रेखा विशदा यदार्नीं देवेन्द्रवन्द्यालयगा विभाति ।

सोयं नरो नीतिपरो नराणां सर्वाधिकारी प्रभुतासमेतः ॥ ७७ ॥

यदि भाग्यरेखा साक्ष सुथरी होकर वृहस्पति के स्थान में पहुँची हुई सोहती हो तो वह प्राणी नरों के मध्य में नीतिपरायण होकर सर्वाधिकारी होता हुआ प्रभुता संपन्न होता है ॥ ७७ ॥

भौमात्समुत्था यदि भाग्यरेखा मध्याङ्गुलिं याति विशुद्धरूपा ।

भाग्येन हीनो मनुजस्तदानीं कार्ये समस्ते न हि सिद्धिमेति ॥ ७८ ॥

भौमात्लय से उठी हुई भाग्यरेखा साक्ष सुथरी होकर यदि मध्यमा अङ्गुलीपर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी भाग्यहीन होता हुआ सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धिको नहीं पाताहै ॥ ७८ ॥

प्रारम्भदेशे वृजिना विभाति प्रान्ते तु भाग्या सरला यदानीय् ।

महादरिद्रोपि भवेद्वनाब्यो वृद्धे वयस्के सुखतामुपैति ॥ ७९ ॥

यदि प्रारम्भदेश में भाग्यरेखा टेढ़ी हो और आखिरीमें सीधी होकर भासती हो तो वह प्राणी महादरिद्री हो तो भी धनवान् होता हुआ वृद्धावस्था में सुखसमूहों को पाताहै ॥ ७९ ॥

आरम्भदेशे सरला च रक्षा भिनति भाग्या यदि चित्तरेखाम् ।

सोयं जनः स्याच्चरमे वयस्के सौभाग्यशाली धनतामुपैति ॥ ८० ॥

यदि आरम्भदेश में सीधी व लालवर्णवाली भाग्यरेखा चित्तरेखा (सौभाग्यरेखा) को भेदती है तो वह प्राणी आखिरी अवस्था में सौभाग्यशाली होता हुआ धनवान् को पाता है ॥ ८० ॥

नो भाति पाणौ मनुजस्य यस्य भाग्यस्य रेखा विशदा यदानीय् ।

सोयं नरः स्याद्बलवीर्यहीनो दीनो धरायां न तु मांसभक्षी ॥ ८१ ॥

जिस मनुष्य के पाणितल में यदि भाग्यरेखा साक्ष सुथरी होकर नहीं सोहती हो तो वह प्राणी बल व वीर्य से हीन होता हुआ पृथ्वीमण्डल में दीन बना रहता है परन्तु मांस को नहीं खाता है ॥ ८१ ॥

सूर्यरेखाफलमाह—

चन्द्रारगेहात्खलु भाग्यतो वा रेखा यदैका दिनपं प्रयाति ।

तां सूर्यरेखां कथयन्ति सन्तो ह्यस्त्रो सुरूपां प्रवदन्ति चान्ये ॥ ८२ ॥

चन्द्रमा व महाल के घरसे या भाग्यरेखा से उठी हुई एक रेखा जब सूर्य के पास जाती

तो उसको विद्वान् लोग सूर्यरेखा कहते हैं और आचार्यलोग (अस्रोताइन)
होते हैं ॥ २२ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं विभाति पाणौ पुरुषस्य यस्य ।
सोयं जनः स्यान्निपुणोऽतिविज्ञो विख्यातकीर्तिर्विदितो धरायाम् ॥ २३ ॥

जिस पुरुषके पाणितल में यह सूर्यकी रेखा साफ सुथरी होकर यदि सोहती हो तो वह
प्राणी नियुण, अतिविज्ञ व बड़ी नामवरीवाला होकर धरामएडल में प्रसिद्ध होता है ॥ २३ ॥

भाग्यात्समुत्था दिनपस्य रेखा गम्भीररूपा विशदा विभाति ।
सोयं मनुष्यो हि महायशस्वी विद्वान्धनाढ्यो गणितागमज्ञः ॥ २४ ॥

यदि भाग्यरेखा से उठीहुई सूर्यकी रेखा गहरी व साफ सुथरी होकर सोहती हो तो
प्राणी बड़ायशस्वी, विद्वान् और धनवान् होताहुआ गणितशास्त्र का ज्ञाता होता है ॥ २४ ॥

भौमात्समुत्था तपनस्य रेखा रक्षा विशुद्धा यदि भाति पाणौ ।
सोयं महौजा मनुजो मनस्वी नैजादूणात्संलभते हि वित्तम् ॥ २५ ॥

यदि भौमरेखा से उठीहुई सूर्य की रेखा लाल व साफ होकर हाथ में सोहती हो
वह प्राणी बलवान् व मनमौजी होकर अपने गुण से धन को पाता है ॥ २५ ॥

शैर्षीसमुत्था सवितुः सुरेखा विद्योतते चेत्पुरुषस्य पाणौ ।
सोयं धनाढ्यो मनुजो हिलोके विख्यातकीर्तिः कृषिकारकः स्यात् ॥ २६ ॥

यदि शैर्षीरेखा (मातुरेखा) से उठीहुई सूर्यकी रेखा जिस पुरुषके पाणितलमें सोहती
तो वह प्राणी लोकमें धनवान् व विख्यातकीर्तिवाला होकर खेती किसानीका करने
ता होता है ॥ २६ ॥

वक्राङ्गुले पाणितले गभीरे ऋज्वी सुरेखा दिनपस्य भाति ।
सोयं मनुष्यः सकले स्वकार्ये नाप्रोति सिद्धिं सरलस्वभावः ॥ २७ ॥

यदि टेढ़ी अङ्गुलीवाले गहरे पाणितल में सीधी सूर्यकी रेखा सोहती हो तो वह प्राणी
वे स्वभाववाला होकर सारे अपने कामों में सिद्धि को नहीं पाता है ॥ २७ ॥

व्रध्नस्य रेखा यदि द्वित्रिशास्त्रा गम्भीररूपा विशदा विभाति ।
नाना मुकार्यं कुरुते मनुष्यो नाप्रोति सिद्धिं चरमे च कार्ये ॥ २८ ॥

यदि सूर्यकी रेखा दो तीन शास्त्राओंवाली व साफ सुथरी होकर चटकीले रंगवाली

प्रतीयमान होती हो तो वह प्राणी अनेकानेक कार्यों को करता है परन्तु आखिरी कार्य सिद्धि को नहीं पाता है ॥ ८८ ॥

सूर्यस्य रेखोपरिं विशुद्धं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

सोयं मनुष्यः सरलस्वभावः सख्युः सकाशाल्लभते हि वित्तम् ॥ ८९ ॥

यदि सूर्यकी रेखा के ऊपर विराजमान साफ सुथरा तारा के समान निशान सोहत हो तो वह प्राणी सीधे स्वभाववाला होकर पित्र के द्वारा धन को पाता है ॥ ९० ॥

चित्तार्कयोगे यदि विन्दुरूपं श्यामायमानं विशदं विभाति ।

नेत्रामयं वै लभते मनुष्यो हस्तद्वये चेजनुपान्धकः स्यात् ॥ ९० ॥

चित्तरेखा (हार्टलाइन) और सूर्यरेखा (असोलाइन) के योगमें काला व साफ होकर विन्दुरूपवाला निशान यदि प्रकाशमान होता हो तो वह प्राणी नेत्ररोग को पाता है और यदि दोनों हाथों में पूर्वोक्त निशान भासता हो तो वह प्राणी जन्म ही से अन्धा होजाता है ॥ ९० ॥

बलरेखाफलमाह—

रेखाचलन्ती मणिबन्धदेशात्संयुज्य पैत्रीं यदि सौम्यमेति ।

वीर्यस्य रेखां प्रवदन्ति तज्ज्ञा हैष्टिक्यरूपां कथयन्ति चान्थे ॥ ९१ ॥

यदि मणिबन्धदेश से चली हुई रेखा पैत्रीरेखा से मिलकर बुधालयर्थन्त चली जावे तो उसे विद्वान्लोग वीर्यरेखा कहते हैं और किंतक आचार्य (हिष्टिकलाइन) कहते हैं ॥ ९१ ॥

एषा सुरेखा पुरुषस्य पाणौ संरक्षण्णा विशदा विभाति ।

सोयं मनुष्यो बलतासमेतस्त्वारामसक्नः सुखतां प्रयाति ॥ ९२ ॥

जिस पुरुष के पाणितल में यह वीर्यरेखा साफ सुथरी होकर लालवर्णवाली पर्ती होवे तो वह प्राणी बलसमूहों से संपन्न होता हुआ आरामसत्त्व छोड़कर अनेक सुखों को पाता है ॥ ९२ ॥

आरम्भदेशो मिलिता सुपैत्र्यां वीर्यस्य रेखा धवला विभाति ।

सोयं मनो व्याधियुतो मनुष्यो दौर्बल्ययुक्तो दयितारतश्च ॥ ९३ ॥

यदि आरम्भदेश में वीर्यरेखा पैत्रीरेखा से मिलाप करती हुई उजली होकर सोहती हो तो वह प्राणी मानसीव्याधि से पीड़ित व दुबला होकर प्यारी में पराया बना रहता है ॥ ९३ ॥

श्यामायमाना यदि वीर्यरेखा विद्योतते चेन्मनुजस्य पाणौ ।

सोयं जनो व्याधियुतो नितान्तं वृद्धे वयस्के विपदामुपैति ॥ ६४ ॥

जिस मनुष्य के पाणितल में यदि वीर्यरेखा काली होकर सोहती हो तो वह प्राणी हमेशा रोगी होता हुआ वृद्धावस्था में विपदा को पाता है ॥ ६४ ॥

एषा सुरेखा विशदा गभीरा संरक्षवर्णा यदि माति पूर्णा ।

गर्वी गुणाद्यो मनुजस्तदानीं व्यापारयुक्तो व्ययतासमेतः ॥ ६५ ॥

यह वीर्यरेखा साफ सुथरी, गहरी व लालवर्णवाली होकर यदि पूर्णरूप से सोहती हो तो वह प्राणी गर्विला, गुणी व व्यापारी होकर खर्चीला होता है ॥ ६५ ॥

एषोर्ध्वशाखा यदि चैकशाखा संस्पृश्य शैर्षीं कुरुते त्रिकोणम् ।

सोयं सुकीर्तिः सुखतासमेतः सौन्दर्यशाली लभते धनौघम् ॥ ६६ ॥

यह वीर्यरेखा ऊपरले भाग में शाखावाली हो और यदि एक शाखा मात्ररेखा को छूटकर त्रिकोणाकार निशान को बनाती हो तो वह प्राणी बड़े नामवाला व सुखसमूहों से संपन्न होता हुआ सौन्दर्यशाली होकर घने धन को पाता है ॥ ६६ ॥

संस्पृश्य शैर्षीं तु तथा च भाग्यामेषा सुरेखा कुरुते त्रिकोणम् ।

सोयं जनो भाविफलस्य वक्ता चाकृष्टशक्तिं समवैति नूनम् ॥ ६७ ॥

यह वीर्यरेखा मातृरेखा तथा भाग्यरेखा (फेटलाइन) को छूटकर त्रिकोणाकार निशान को बनाती हो तो वह प्राणी भविष्यद्वक्ता होता हुआ मिसमेरेजम को निश्चयकर जानता है ॥ ६७ ॥

एषा सुरेखा विनता यदानीं छिन्ना न भिन्ना शशिनं समेति ।

दौर्बल्ययुक्तो मनुजस्तदानीं धातुक्षयं वै लभतेष्यजस्म ॥ ६८ ॥

यह वीर्यरेखा लची हुई कटी फटी न होकर यदि चन्द्रालय को चली जावे तो वह प्राणी दुबला होकर हमेशा धातुक्षीणता को पाता है ॥ ६८ ॥

वेलास्त्रिकवरेखाफलमाह—

भाग्यासमाना विशदस्वरूपा रेखा यदैका समुपैति सौम्यम् ।

वेलास्त्रिकवाख्यां प्रवदन्ति तां वै महानुभावा वदतां वरेण्याः ॥ ६९ ॥

यदि भाग्यरेखा के बराबर साफ सुथरी एक रेखा बुधालय पर्यन्त चली जावे तो उसे महानुभाव बोलनेवालों में पुलिया विद्वान् लोग वेलास्त्रिक बहते हैं ॥ ६९ ॥

काव्यालयाचेचलिता सुरेखा वक्तव्यरूपा यदि याति चान्द्रिष् ।

चौर्ये प्रवृत्तो मनुजस्तदार्नीं हत्याप्रकाण्डैः सहितो नराणम् ॥ १०० ।

यदि शुक्रालय से चली हुई वेलास्तिव रेखा टेढ़ी होकर बुधालय पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी चोरी करने का आदी होता हुआ मनुष्यों के बीचमें हत्यारा होता है ॥ १०० ।

एषा सुरेखा ऋजुतासमेता सौम्यालयं याति गभीररूपा ।

सौभाग्यशाली मनुजो मनीषी विख्यातकीर्तिर्विदितो धरायाम् ॥ १ ॥

यह वेलास्तिव रेखा सीधी व गहरी होकर बुधालय पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी सौभाग्यशाली, विद्वान् व विख्यातकीर्तिवाला होकर धरामण्डल में प्रसिद्ध होता है ॥ ? ।

गर्डलरेखाफलमाह—

रेखा चलन्ती शशिमूलुगेहाद्गोलार्धरूपा धिषणं प्रयाति ।

तां गर्डलाख्यां कवयो वदन्ति वृत्तार्धरूपां प्रवदन्ति चान्ये ॥ २ ॥

यदि बुधालय से चली हुई रेखा गोलार्धरूप होकर बृहस्पति के स्थान में चलीजावे तो उसे कविलोग 'गर्डल' कहते हैं और अन्याचार्य 'वृत्तार्धरूप' बतलाते हैं ॥ २ ॥

एषा सुरेखा विशदा सख्का छिन्ना न भिन्ना यदि भाति पाणौ ।

सोयं नरस्तूचपदाधिकारी सौन्दर्यशाली मुखतामुपैति ॥ ३ ॥

यदि पाणितल में यह 'गर्डलरेखा' साफ सुधरी व लालवर्णवाली होकर कटी फटी न होती हुई सोहती हो तो वह प्राणी ऊंचेपदका अधिकारी होताहुआ सौन्दर्यशाली होकर सुखसमूहों को पाता है ॥ ३ ॥

श्यामा च पीता खलु धूसरा वा छिन्ना च भिन्ना यदि भाति चैषा ।

सोयं बलिष्ठो हि पदाधिकारी स्वार्थी सहायी लभते धनौघम् ॥ ४ ॥

यदि यह पूर्वोक्त रेखा काली, पीली व भूरी होकर कटी फटी होतीहुई सोहती हो तो वह प्राणी बड़ाबली, पदाधिकारी, मतलबी व सहायी होकर घने घनको पाता है ॥ ४ ॥

मन्दालयाचेचलिता यदार्नीं वृत्तार्धरूपा समुपैति सौम्यम् ।

सोयं जनो धूर्ततरो हि दम्भी मिथ्याप्रभाषी मदनातुरश्च ॥ ५ ॥

मन्दालय से चलीहुई गोलार्धरूप रेखा यदि बुधालय पर्यन्त चलीजावे तो वह प्राणी बड़ाधृत, छली व झूँडा होकर कामी होता है ॥ ५ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं ब्रध्नेन भिन्ना शशिजं समेति ।
सोयं मनुष्यो व्यभिचारयुक्ते दुष्टस्वभावो धनतामुपैति ॥ ६ ॥

यदि पाणितल में यह पूर्वोक्त रेखा साफ सुथरी होकर सूर्य की रेखा से कटी फटी हुई बुधालय पर्यन्त चली जावे तो वह प्राणी व्यभिचारी व बुरे स्वभाववाला होता हुआ धनसमूहों को पाता है ॥ ६ ॥

क्षुद्राविभिन्ना यदि गर्डलाख्या काव्येन्दुरेखे विशदे विभातः ।
सोयं ह्यपस्मारयुतो मनुष्यो मान्यो वदान्यो ममताविहीनः ॥ ७ ॥

यदि गर्डलाख्या रेखा छोटी छोटी रेखाओं से भिन्नहुई प्रतीत होती हो और यदि शुक्र व चन्द्रमा की रेखायें साफ सुथरी होकर सोहती हों तो वह प्राणी मिरगी रोगवाला होकर मान्य व वदान्य होकर ममता से विहीन रहता है ॥ ७ ॥

एषा विशुद्धा यदि भाति पाणौ चास्कवर्णा पुरुषस्य यस्य ।
सोयं सुकीर्तिर्मनुजो धनाद्यो नान्दीकरो नीतिपरो नितान्तम् ॥ ८ ॥

जिस पुरुषके पाणितल में यह ‘गर्डलाख्या’ रेखा साफ सुथरी व कुछेक लालवर्ण वाली होकर यदि सोहती हो तो वह प्राणी बड़ी कीर्तिवाला व धनवान् होकर नान्दी, बादी व बड़ा नीतिपरायण होता है ॥ ८ ॥

आध्यापिकीवृत्तिपरः प्रवीणाः संपादका ये क्रिल पत्रकाणाम् ।
तेषां हि पाणावियमेव भाति रेखा गभीरा विशदा सदैव ॥ ९ ॥

जो लोग पढ़ाने की जीविका करते हैं व जो प्रवीण हैं और जो अख्तवारों के संपादक हैं उन्हीं लोगों के पाणितल में यह पूर्वोक्त रेखा साफ सुथरी व गहरी होकर सदैव सोहती है ॥ ९ ॥

नार्या यदा पाणितले विभाति रेखा विशुद्धा वितता हि यस्याः ।
भूतादिवाधापरिपीडिताङ्का सांगीतरक्ता प्रमदा तदा स्यात् ॥ १० ॥

जिस नारी के पाणितल में गर्डलाख्या रेखा साफ सुथरी व चौड़ी होकर यदि सोहती हो तो वह रमणी भूत-प्रेत आदि की वाधाओं से पीड़ित अङ्गवाली व गानेवाली होती है ॥ १० ॥

१ आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्थस्मात्प्रवर्तते । देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति कीर्त्यते (इति भरतः) ॥

मणिवन्धस्थरेखाफलमाह—

तिस्रो हि रेखा मणिवन्धदेशे विच्चस्य चाद्या गदिता सुधीभिः ।

प्रोक्षा द्वितीयाखिलशास्त्रकाणामेवं तृतीया भणिता हि भक्तेः ॥ ११ ॥

मणिवन्धदेश (कब्जे) में तीन रेखायें तिरीछी होती हैं उन्होंमें से पहली रेखा धनकी पण्डितों ने कही है, दूसरी शास्त्रों की रेखा और तीसरी भक्ति की रेखा कहलाती है ॥ ११ ॥

मतान्तरधाह—

रेखांश्चतस्रो मणिवन्धदेशे द्रव्यस्य मुख्या द्वितीयी च शास्त्री ।

भक्तेस्तृतीया भणिता बुधेन्द्रैर्दार्दिययुक्ता श्रुतिसंग्रिता स्यात् ॥ १२ ॥

मणिवन्ध देश में तिरीछी चार रेखायें होती हैं उन्होंमें से पहली धन की रेखा है और दूसरी शास्त्री रेखा कहलाती है व तीसरी भक्ति की रेखा पण्डितों ने कही है आँचौथी दरिद्र की रेखा कहलाती है ॥ १२ ॥

पुनररप्याह—

हेत्थस्वरूपा प्रथमा हि रेखा प्रोक्षा द्वितीया किल वेत्थरूपा ।

प्रासपेरिटी वै भणिता तृतीया रेखा कवीन्द्रैर्बुधसंमता च ॥ १३ ॥

पहुँचे में पहली आरोग्य की रेखा होती है व दूसरी धन दौलत की कहलाती है आँतीसरी बड़ती की रेखा कवीन्द्रों ने कही है कि जिसको पण्डितों ने माना है ॥ १३ ॥

एतास्तु तिस्रो मणिवन्धदेशे गम्भीररूपा विशदा विभान्ति ।

सोयं बलिष्ठो मनुजो धनाद्यो गम्भीरबुद्धिर्विदितो धरायाम् ॥ १४ ॥

जिसके पहुँचे (कब्जे) में ये तीनों रेखायें गहरी व साफ सुथरी होकर यदि सोही हों तो वह प्राणी बलवान् व धनवान् होता हुआ गम्भीर बुद्धिवाला होकर पृथ्वीमण्डल में प्रसिद्ध होता है ॥ १४ ॥

आद्या तु रेखा मिलिता यदानीं विद्योतते चेत्खलु स्वत्परूपा ।

यतेन जीवेन्मनुजस्तदानीमुद्दिग्नचित्तो भ्रमतेष्यजस्य ॥ १५ ॥

यदि पहली रेखा कम या ज्यादः ज़ुड़ी हो और छोटे रूपवाली होकर प्रतीत होवे तो वह प्राणी उड़े उपाय से जीता है और उद्दिग्न चित्तवाला होकर हमेशा घूमा करता है ॥ १५ ॥

१ पहुँचे रेखा एकधन, डिशये पण्डित ज्ञान । तीन सुरेखा भूत्तनर, चार दरिद्र वज्ञान ।

आरोग्यरेखा मणिबन्धदेशे गम्भीररूपा यदि भाति भिन्ना ।

दौर्माण्ययुक्तो मनुजस्तदानीमल्पं च वित्तं लभते कदापि ॥ १६ ॥

यदि पहुँचे में आरोग्य वा धनकी रेखा गहरी व भिन्न होकर सोहती हो तो वह प्राणी विर्णवशाली होकर कभी थोड़े धन को पाता है ॥ १६ ॥

रेखात्रयीणां यदि मध्यदेशे चिह्नं त्रिकोणं विशदं विभाति ।

सोयं जनो हृष्टमना महौजा वृद्धे वयस्के सुखतामुपैति ॥ १७ ॥

यदि पहुँचे में टिकीहुई तीनरेखाओं के विचले देश में साफ सुथरा होकर त्रिकोण का निशान सोहता हो तो वह प्राणी हर्षित मनवाला व महावलवान् होकर वृद्धावस्था में अवता को पाता है ॥ १७ ॥

संघिनकाया यदि भाति चाद्या रेखा गम्भीरा विशदस्वरूपा ।

सोयं वलिष्ठो मनुजो मदान्धो मन्दस्वभावो ममतामुपैति ॥ १८ ॥

यदि कब्जे में पहली रेखा गहरी व साफ सुथरी होकर कटी फटीसी प्रतीत होवे तो वह प्राणी महावलवान् व मदान्ध होकर नीच स्वभाववाला होता हुआ ममता को पाता है ॥ १८ ॥

रेखात्रयीतश्चलिता यदानीं भाग्यस्य रेखा तनुतासमेता ।

मिध्यप्रभाषी मनुजस्तदानीं संस्थाविहीनोऽप्यधमो नराणाम् ॥ १९ ॥

यदि तीनों रेखाओं से चली हुई भाग्य की रेखा पतली होकर सोहती हो तो वह प्राणी भूंठा व वेमर्याद होकर मनुष्यों के बीच अथम होता है ॥ १९ ॥

रेखात्रयस्थं विशदस्वरूपं तारानुरूपं यदि भाति चिह्नम् ।

भूमिस्थित

प्राप्नोति वित्तं मनुजोप्यलभ्यं भूमिस्थितं वा लभते धनौधम् ॥ २० ॥

यदि तीनों रेखाओं पर टिकाहुआ साफ सुथरा तारा के समान निशान सोहता हो तो वह प्राणी अलभ्य धन को पाता है या भूमि में गड़ेहुए धनसमूह को पाता है ॥ २० ॥

पूर्वोक्तचिह्नं मणिबन्धदेशे नो भाति सम्यज्मनुजस्य यस्य ।

सोयं मनुष्योऽप्यभिचारशाली प्राप्नोति वित्तं गणिकादिकेभ्यः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्य के कब्जे में पूर्वोक्त निशान भली भाँति नहीं सोहता हो तो वह प्राणी अभिचारी होकर वेश्या आदिकों से धनको पाता है ॥ २१ ॥

आक्रम्य शुक्रं यदि भाग्यभग्नी संभिद्य पैत्रीं शंशिनं समेति ।

सांयांत्रिकःस्यान्मनुजस्तदानीं व्यापारशाली व्ययतासमेतः ॥ २१ ॥

यदि शुक्रालय को आक्रमण कर भाग्यरेखा की भगिनी रेखा पैत्रीरेखा (लाइकलाइ) को घेदनकर चन्द्रमा के पास पहुँचजावे तो वह प्राणी जहाजी व व्यापारी होते खर्चीला होता है ॥ २२ ॥

समुत्थिता चेन्मणिवन्धदेशाद्वी सुरेखा यदि याति चान्द्रिष्म ।

प्राज्यं धनं वै लभते मनुष्यः संपत्तिशाली सखस्वभावः ॥ २३ ॥

यदि मणिवन्ध (कठो) से उठीहुई सीधी भाग्यभगिनी रेखा बुधालय पर्यन्त च जावे तो वह प्राणी सम्पत्तिशाली होकर सीधे स्वभाववाला होता हुआ महाधन पाता है ॥ २३ ॥

एषा सुरेखा विशदा यदानीं गम्भीररूपा दिनेपं प्रयाति ।

सोयं जनो विचवतां सहायात्प्राप्नोति विचं सुखदो नराणाम् ॥ २४ ॥

जब यह रेखा साफ सुधरी व गहरी होकर सूर्यालय पर्यन्त चली जावे तो वह प्राण धनदानों की सहायता से धन को पाता है और मनुष्यों को सुखदायक होता है ॥ २४ ॥

पूर्वार्द्धयुग्माङ्गमिमं मनोङ्गं संकीर्तयन्तां सुधियो नितान्तम् ।

ते लोकवश्याः किल सन्तु भूमौ विचं समायन्तु विदांप्रधानाः ॥ २५ ॥

इस सुन्दर पूर्वार्द्ध के द्वितीयाङ्ग को जो बुद्धिमान् अत्यन्त कीर्तन करते हैं, उनके वश लोग हो जाते हैं और पण्डितों में मुखिया होकर धनको पाते हैं ॥ २५ ॥

एषा पाणितलव्याख्या कीर्तिं देवि दुर्लभा ।

य इमांपठन्तु विद्वांसो भूयासुर्भूपवल्लभाः ॥ २६ ॥

अहो देवि ! यह दुर्लभ करतल की व्याख्या मैने कही है जो पण्डित लोग पहुँचे राजाओं के प्यारे होवेंगे ॥ २६ ॥

इति श्रीमत्पणिडतशक्तिधरमंकलितसामुद्रिकशास्त्रस्यपूर्वार्द्धद्वितीयाङ्गःसमार्पिषकाणेति शम् ॥

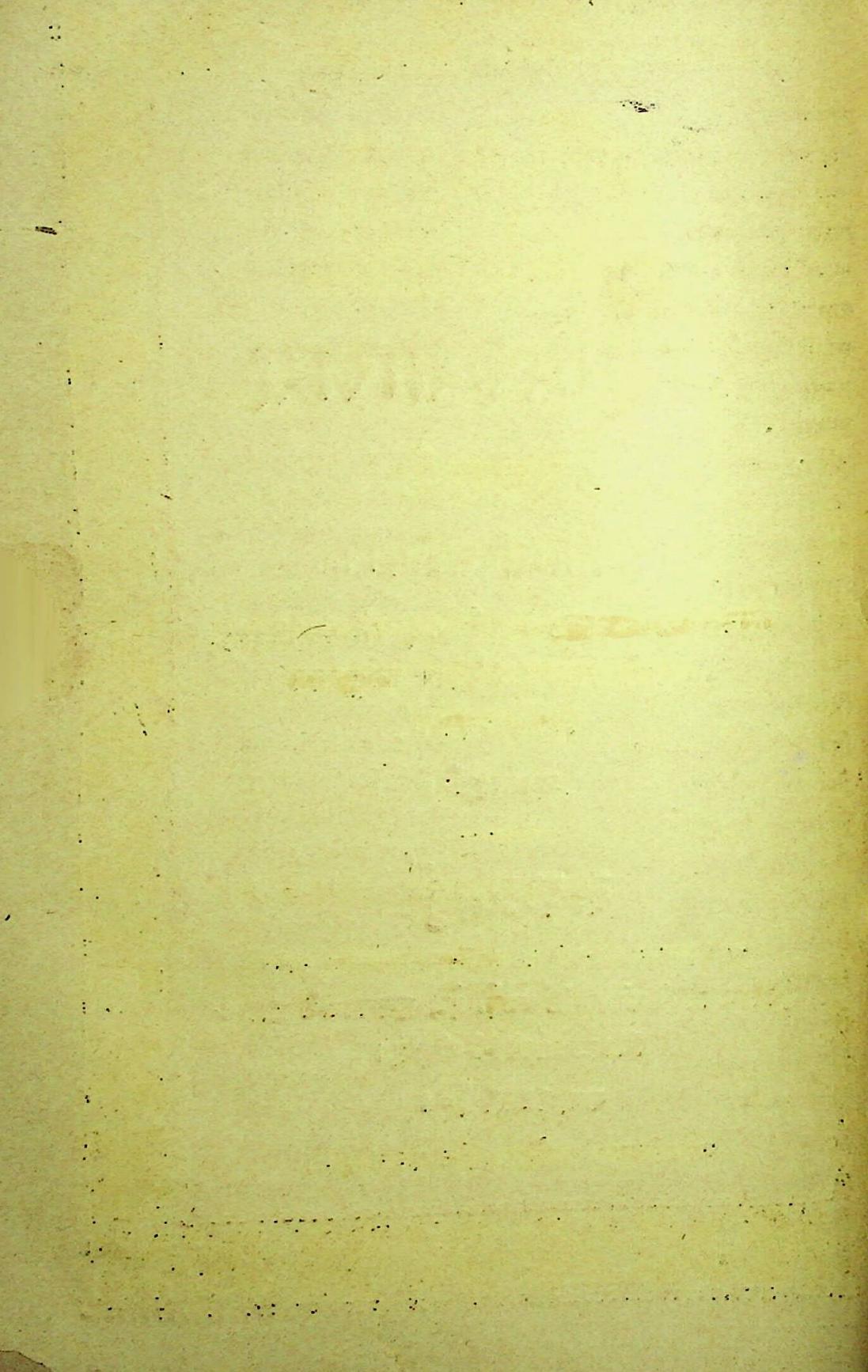


सामुद्रिकशास्त्रम्

उत्तरार्धः

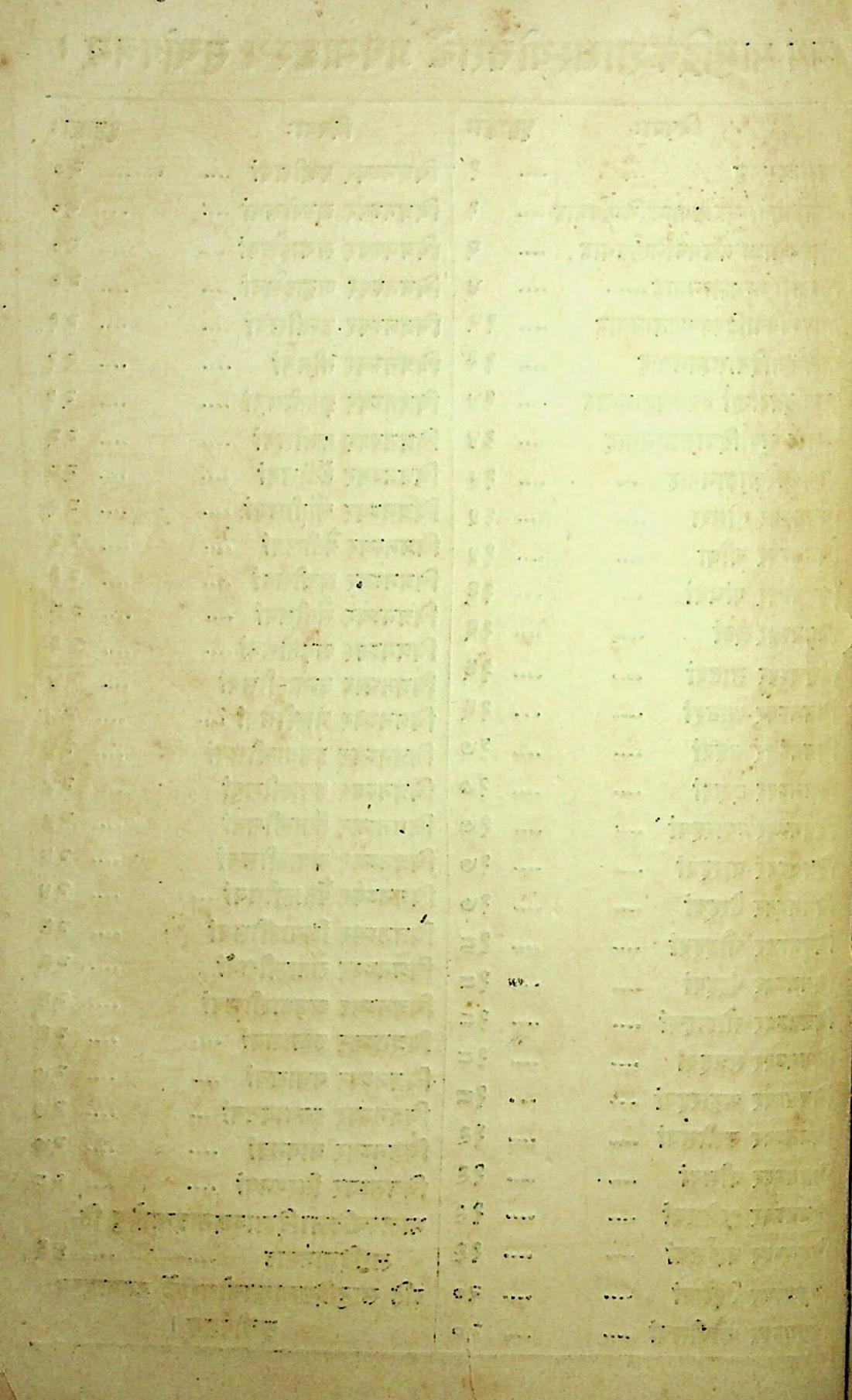
प्रथमोऽङ्कः सटीकः ।

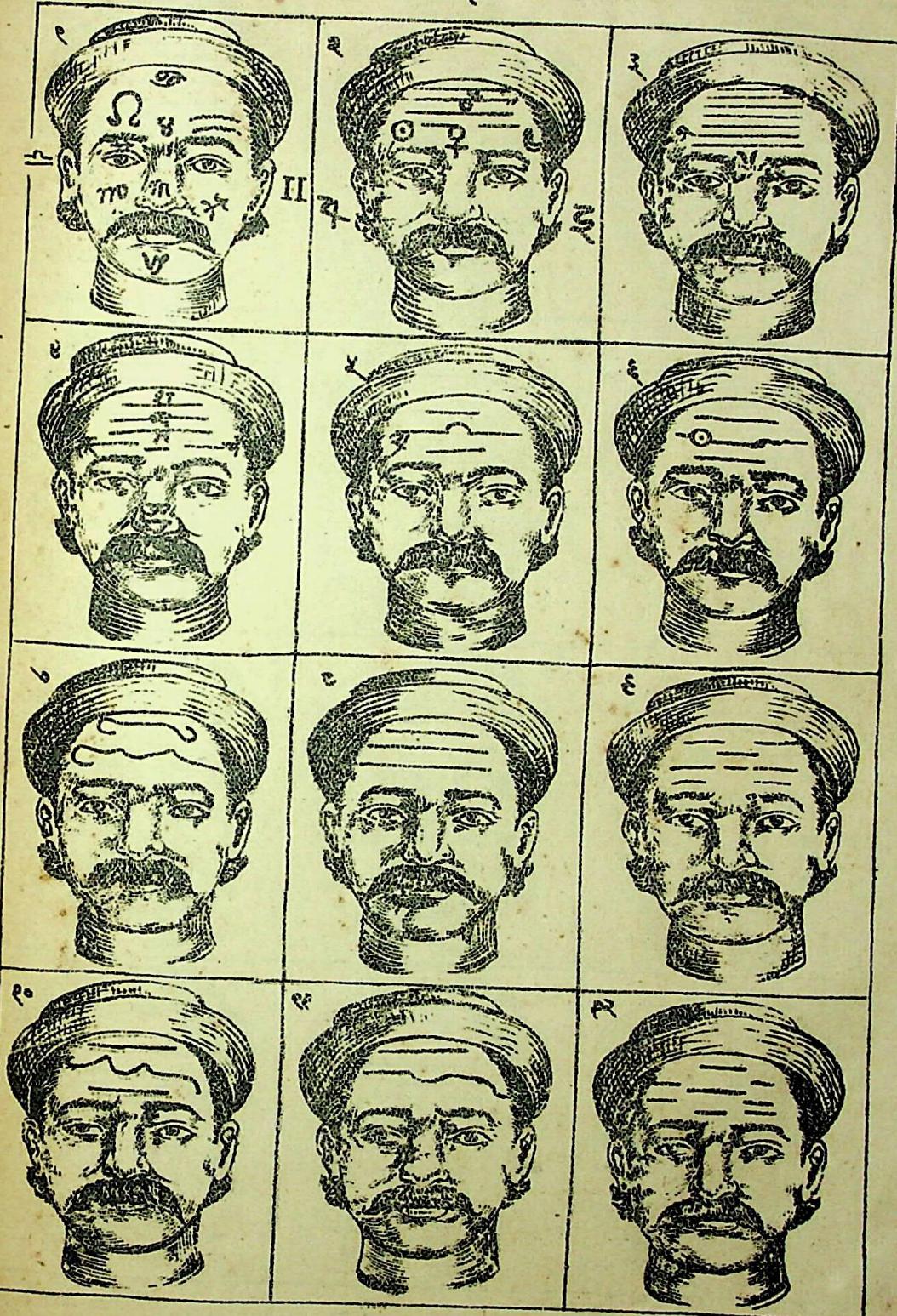
त्वस्य लक्ष्मे

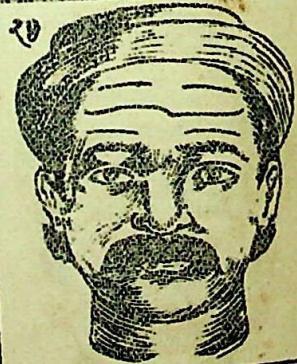
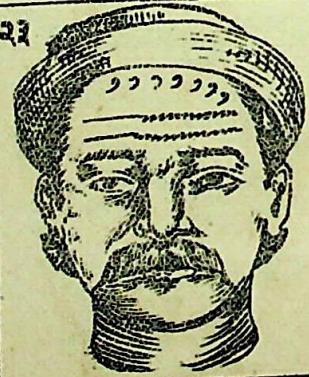
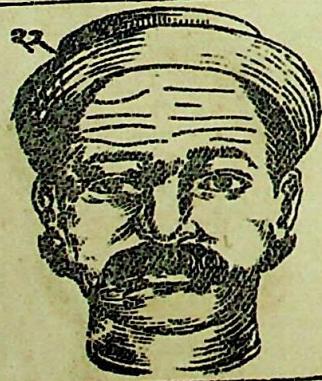
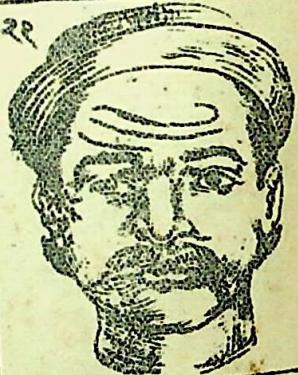
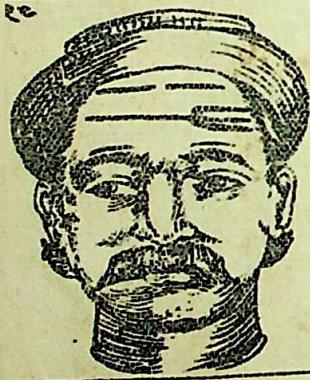
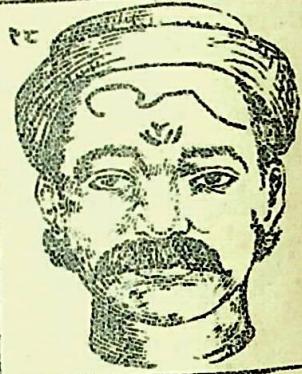
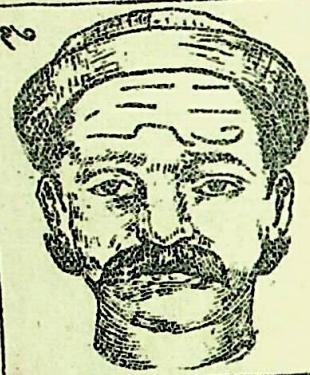
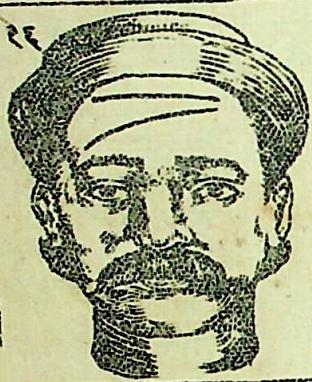
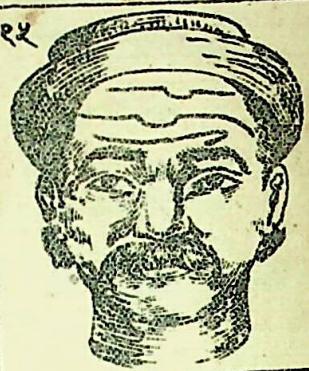
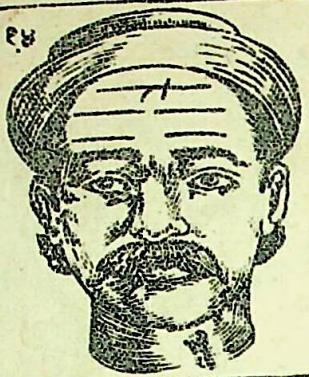
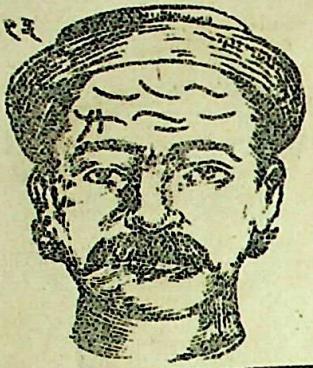


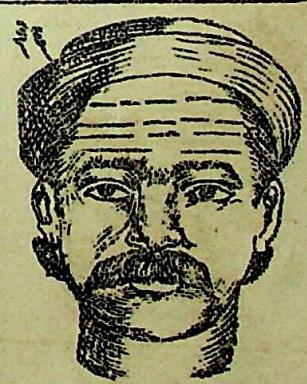
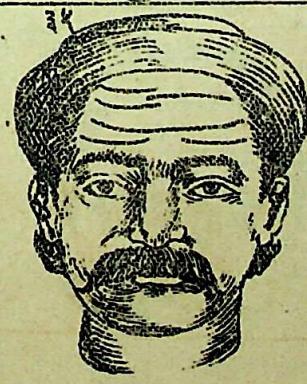
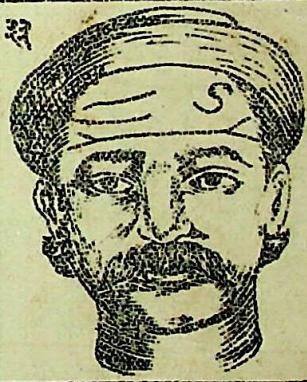
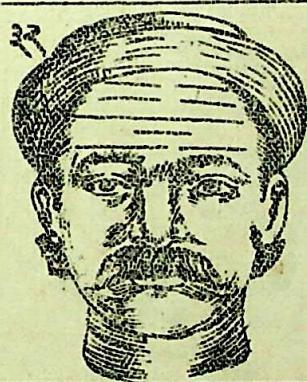
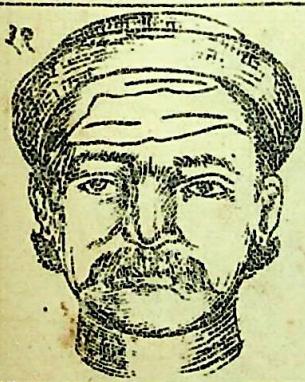
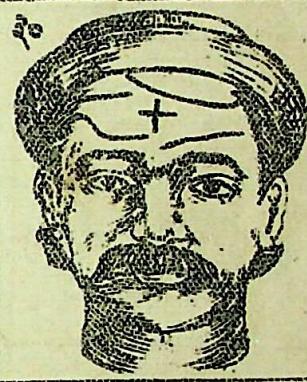
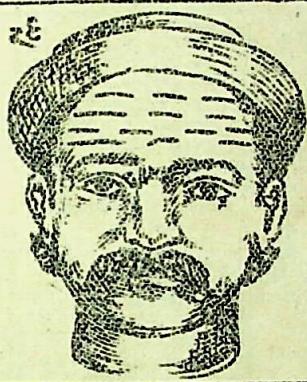
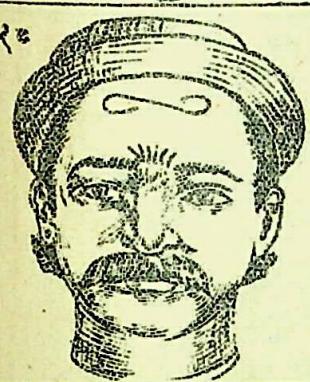
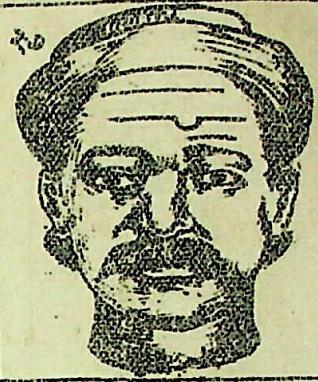
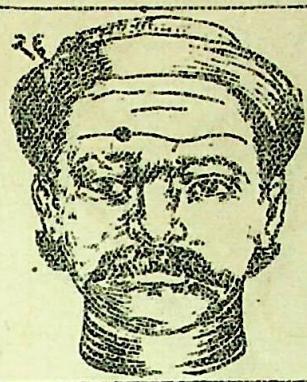
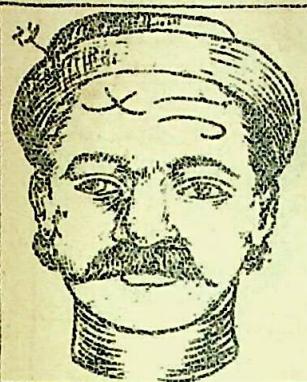
अथ सामुद्रिकशास्त्रस्योत्तरार्द्धे प्रथमाङ्कस्य सूचीपत्रम् ।

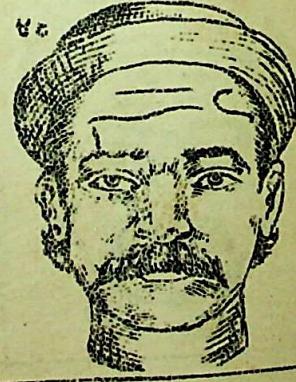
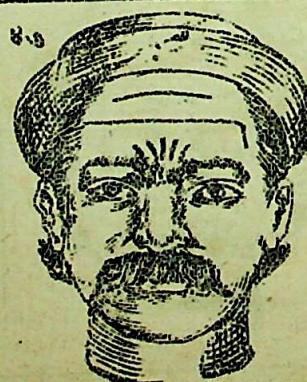
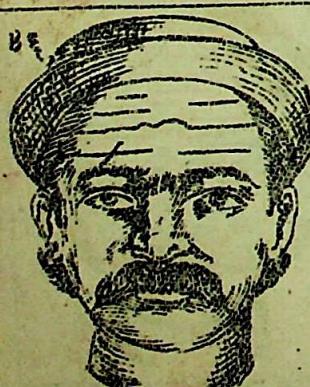
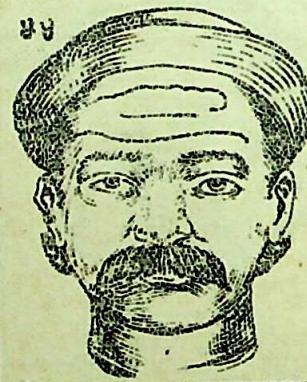
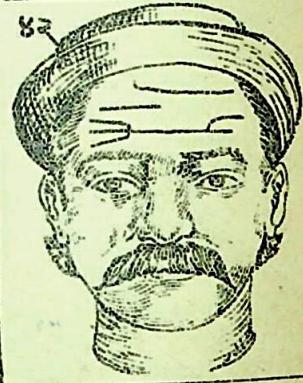
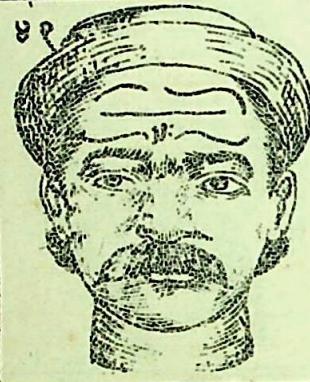
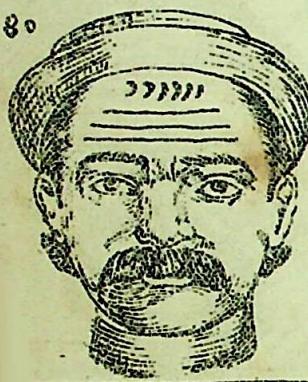
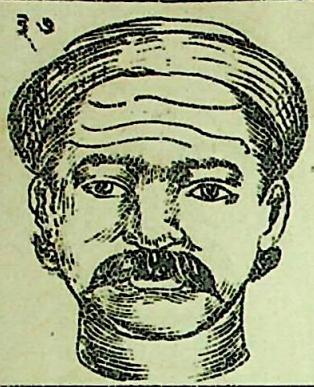
विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः		
मङ्गलाचरणम्	१	चित्रनम्बर पञ्चीसवां	२०
भालरेखातो वयक्रमाब्दनिर्णयमाह	२	चित्रनम्बर छबीसवां	२०
चक्षुदर्शनाज्जन्मसमयनिर्णयमाह,	२	चित्रनम्बर सत्ताईसवां	२०
चिह्नद्वारा जन्मलग्नमाह	४	चित्रनम्बर अट्टाईसवां	२१
भालस्थेषादिस्वरूपज्ञानमाह	१२	चित्रनम्बर उन्तीसवां	२१
भालेभेषादिवासज्ञानमाह	२३	चित्रनम्बर तीसवां	२१
स्वयादिग्रहाणां स्वरूपज्ञानमाह	१४	चित्रनम्बर इकतीसवां	२१
ललोटे सूर्यादिवासज्ञानमाह	१४	चित्रनम्बर बत्तीसवां	२२
भालस्थरेखाज्ञानमाह	१५	चित्रनम्बर तेंतीसवां	२२
चित्रनम्बर तीसरा	१५	चित्रनम्बर चौतीसवां	२२
चित्रनम्बर चौथा	१५	चित्रनम्बर पैतीसवां	२२
चित्रनम्बर पांचवां	१६	चित्रनम्बर छत्तीसवां	२३
चित्रनम्बर छठां	१६	चित्रनम्बर सैंतीसवां	२३
चित्रनम्बर सातवां	१६	चित्रनम्बर अड्डतीसवां	२३
चित्रनम्बर आठवां	१६	चित्रनम्बर उन्नालीसवां	२४
चित्रनम्बर नववां	१७	चित्रनम्बर चालीसवां	२४
चित्रनम्बर दशवां	१७	चित्रनम्बर इकतालीसवां	२४
चित्रनम्बर एतारहवां	१७	चित्रनम्बर बयालीसवां	२५
चित्रनम्बर बारहवां	१७	चित्रनम्बर तेंतालीसवां	२५
चित्रनम्बर तेरहवां	१७	चित्रनम्बर चवालीसवां	२५
चित्रनम्बर चौदहवां	१८	चित्रनम्बर पैंतालीसवां	२५
चित्रनम्बर पंद्रहवां	१८	चित्रनम्बर छियालीसवां	२६
चित्रनम्बर सोलहवां	१८	चित्रनम्बर सैंतालीसवां	२६
चित्रनम्बर सत्रहवां	१८	चित्रनम्बर अड्डतालीसवां	२६
चित्रनम्बर अट्टारहवां	१८	चित्रनम्बर उञ्चासवां	२६
चित्रनम्बर उन्नीसवां	१९	चित्रनम्बर पचासवां	२७
चित्रनम्बर चीसवां	१९	चित्रनम्बर इक्यावनवां	२७
चित्रनम्बर इकीसवां	१९	चित्रनम्बर बावनवां	२७
चित्रनम्बर बाईसवां	१९	चित्रनम्बर तिरपनवां	२८
चित्रनम्बर तेईसवां	२०	भालस्थितिलादिलाज्ज्वनादन्याक्रेषु ति-	४८
चित्रनम्बर चौबीसवां	२०	लादिज्ञानमाह	४८
			इति सामुद्रिकशास्त्रस्योत्तरार्द्धे प्रथमाङ्कस्य		
			सूचीपत्रम् ।		

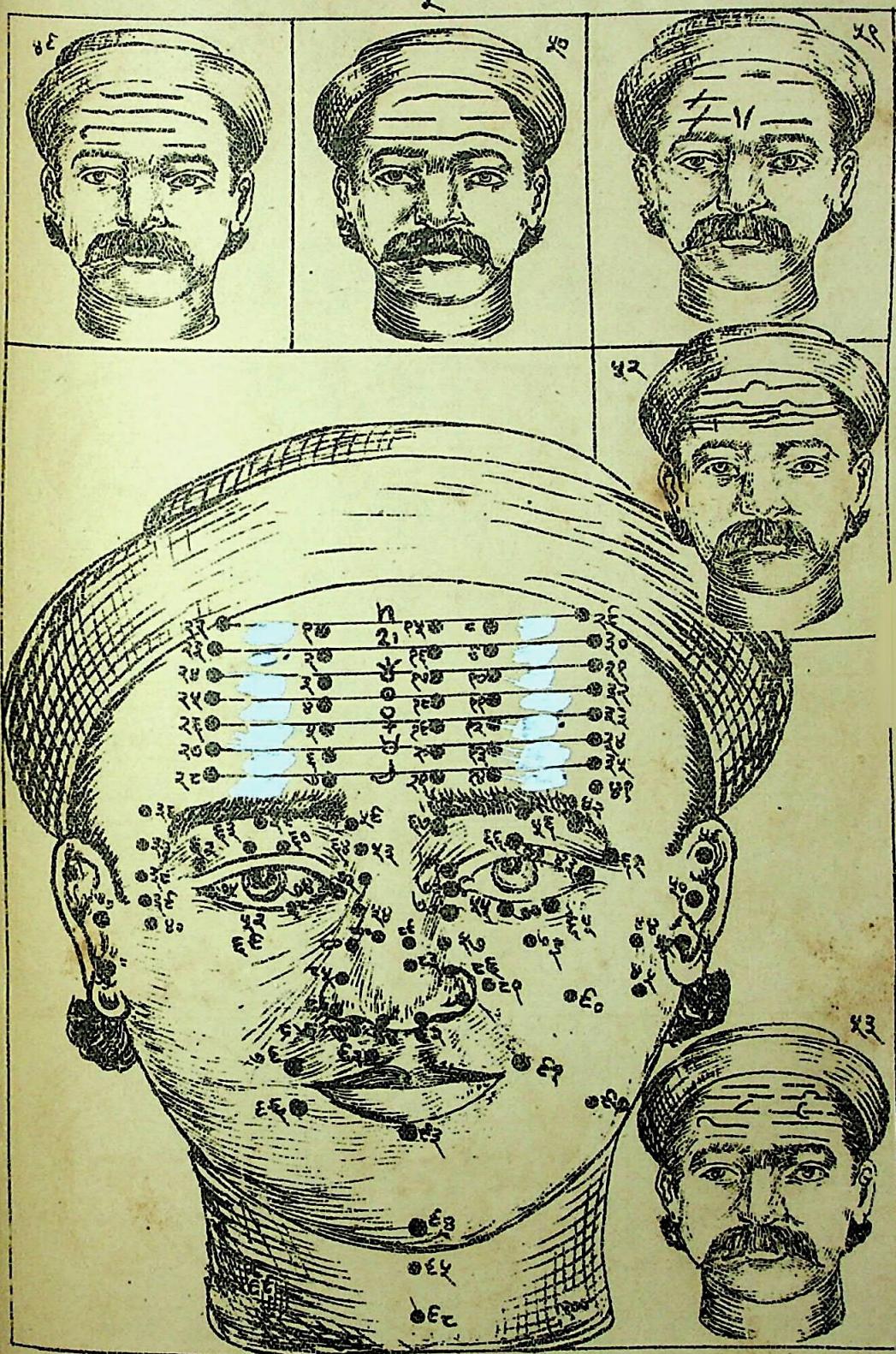


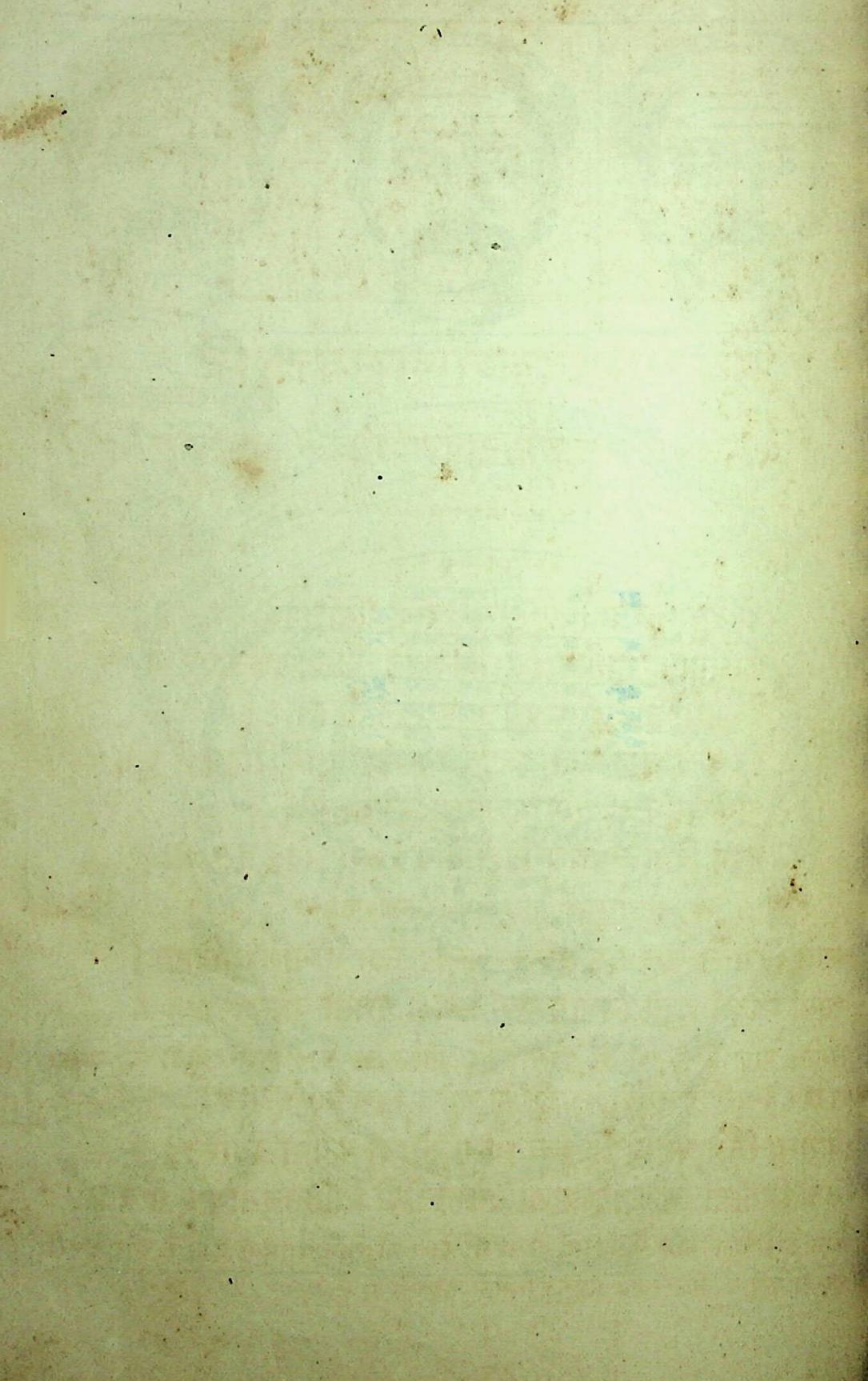














सामुद्रिकशास्त्रम्

उत्तरार्धः

द्वितीयोऽङ्कः सटीकः ।

पणिडतवरशक्तिभरशुक्लसंगृहीतम्—श्रीमद्रायवदाहुर
प्रयागनारायणभार्गवेण सर्वसुखाय
स्वकीयव्ययेन

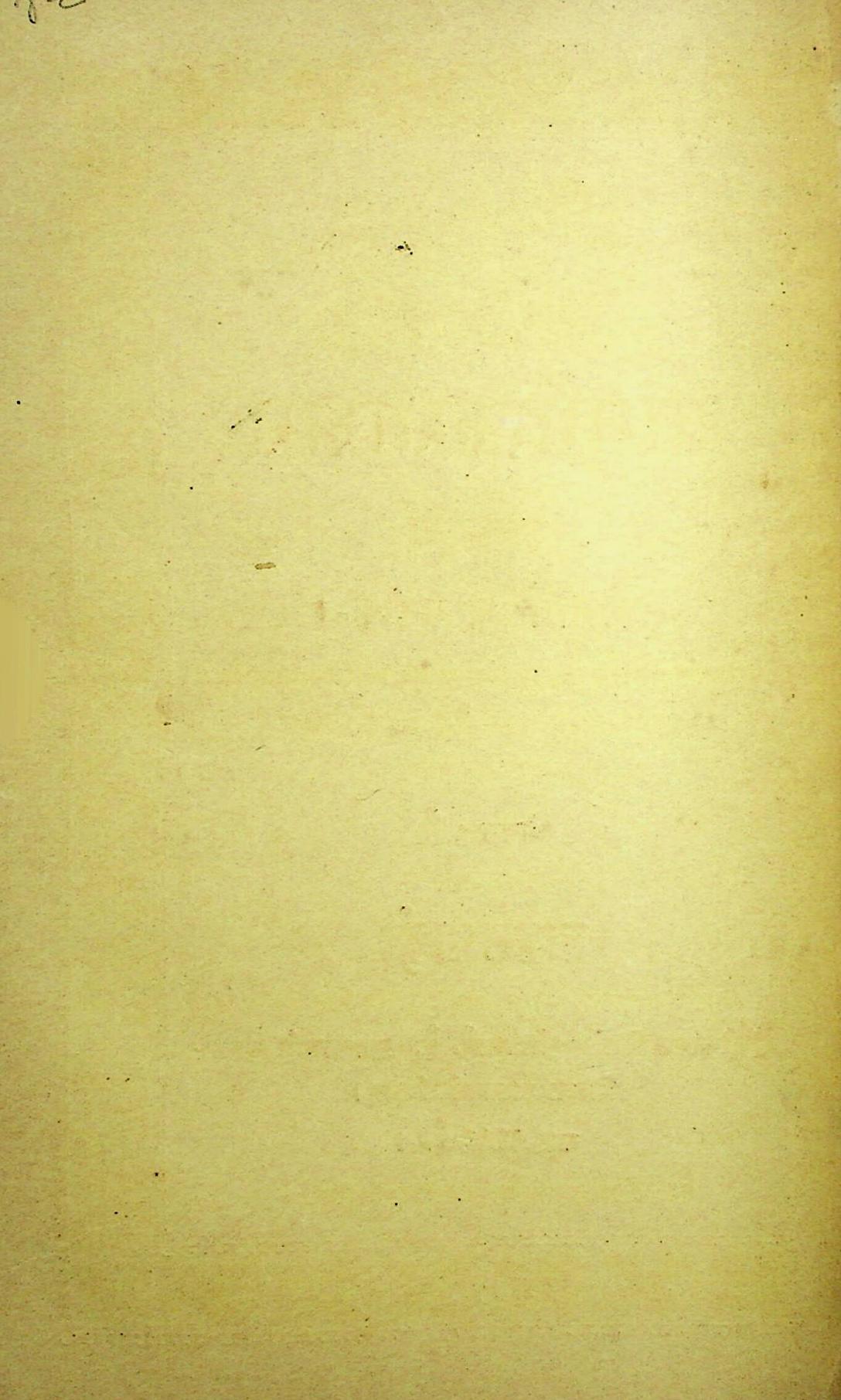
प्रथमावृत्तौ

लक्ष्मणपुरे

बाबू मनोहरलाल भार्गव वी. ए., मुपरिटेंडेंट इत्युपाधिधारिणः प्रबन्धेन
सुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., लुदण्डालये लुद्राप-
यित्वा प्राकाशयं नीतम् ।

सन् १९१९ ई० ।

अस्याधिकारः सर्वथास्वाधीन एव रक्षितः ।





अथ सामुद्रिकशास्त्रस्योत्तरार्द्धे प्रथमाङ्कं सोदाहरणमाह—

मङ्गलाचरणम् ॥

यो देवः सकलाधिपः सुखरः सर्वार्थसिद्धिप्रदः
कान्त्या विश्वविमोहनः कविपतिः कल्याणकल्पद्रुमः ।
देव्याराधितपादपद्मयुगलो हेरम्भतातो हर-
स्तं वन्दे मुखृन्दवन्दितपदं स्वाभीष्टसिद्ध्यै शिवम् ॥ १ ॥
अथोत्तरार्द्धे वक्ष्यामि भालरेखा सुलक्षणम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण विज्ञो देवि ! नरो भवेत् ॥ २ ॥

भालरेखातो वयः क्रमान्विर्णयमाह—

भाले विशाले खलु सप्त सन्ति रेखा विशुद्धा मुनिभिः प्रदिष्टाः ।
तासां स्वरूपं हृदये निधाय ब्रूयुः प्रमाणं वयसो बुधेन्द्राः ॥ १ ॥

विशाल भाल में मुनियों से बतलाई हुई निर्भलरूप सात रेखायें होती हैं उनका वरूप हृदय में धर बुधवरों को वयःक्रम का प्रमाण कहना चाहिये ॥ १ ॥

केशस्य निष्ठे प्रथमां हि रेखां सौराधिनाथां कवयो वदन्ति ।
ततो द्वितीयां धिषणाधिपालां ततस्तृतीयां क्षितिमूर्तुनाथाम् ॥ २ ॥

केशों के निचले भाग में कवियों ने पहली रेखा को शनिस्वामिनी कहा है और दूसरी गुरुस्वामिनी व तीसरी को मङ्गलस्वामिनी कहते हैं ॥ २ ॥

सामुद्रिकशास्त्रस्य

ततश्रुतुर्थीं दिननाथनाथा शुक्राधिपा पञ्चमिका प्रसिद्धां ।

शुधाधिनाथा खलु षष्ठिका सा या सप्तमी सा क्षणदाधिपेशा ॥ ३ ॥

तदनन्तर चौथी रेखा को सूर्यस्वामिनी, पांचवीं को भृगुस्वामिनी, छठी को बुधस्वामिनी और सातवीं को चन्द्रस्वामिनी मैंने कहा है ॥ ३ ॥

वयःक्रमस्याब्दनिरूपणे इयं संप्रोच्यते वै नितरामुपायः ।

एका कुरेखा यदि कर्णयुज्मस्नायुं समेतीह तदा विचार्यम् ॥ ४ ॥

वयःक्रमसम्बन्धी वर्षों के निरूपण में अतिशयिता से यह उपाय कहा जाता है कि एकशुद्गा रेखा जबकि कानों की नस (रग) को प्राप्त होजाती है उस समय परिदृतों को विचारना चाहिये ॥ ४ ॥

एषा कुरेखा यदि वामकर्णस्नायोः समुत्था समुपैति सीमाम् ।

भालस्य वामां निगदेहशाब्दं वयःक्रमं वा रविवर्षसम्मितम् ॥ ५ ॥

यदि यह शुद्गारेखा वायें कानकी रग से उठी हुई भालकी वाम सीमा को प्राप्त होती है तो दशवर्ष या बारहवर्ष का वयःक्रम कहना चाहिये ॥ ५ ॥

आस्पष्टरूपा परिवृश्यमाना हेषा कुरेखा यदि भालमध्यम् ।

संभेदयित्वा खलु विस्तृता चेदेकोनत्रिंशच्छरदं वदनित ॥ ६ ॥

यदि कुछेक स्पष्टरूप होकर परिवृश्यमान होती हुई यह शुद्गारेखा कपाल का मध्यभाग भेदनकर फैलजावे तो उनतीस वर्ष का वयःक्रम कहते हैं ॥ ६ ॥

एषा कुरेखा यदि इस्वरूपा वयःक्रमं इस्वतरं वदन्ति ।

दीर्घा यदानीं खलु दीर्घरूपं न्यूनाधिकं वै स्वाधिया विचार्यम् ॥ ७ ॥

यदि यह शुद्गारेखा इस्वरूप से प्रतीत होवे तो अल्पवयःक्रम और यदि दीर्घरूप से प्रतीत होवे तो बड़ा वयःक्रम कहते हैं इस प्रकार विद्वानों को अपनी बुद्धि से न्यूनता या अधिकता का विचार करना चाहिये ॥ ७ ॥

अथ चक्षुर्दर्शनाज्जन्मसमयनिर्णयमाह—

यस्यास्ति चक्षुः खलु कालवर्णं रात्रौ द्वियामं जनने जनस्य ।

आशयामवर्णं तदपेक्षया चेदघटीमितं वै समयं समीयात् ॥ ८ ॥

जिस प्राणी का नेत्र कालावर्ण प्रतीत होता हो तो उसका जन्मसमय रात्रिके दोपहर का कहना चाहिये और जो उसकी अपेक्षा कुछेक कालावर्ण प्रतीत होता हो तो एकपटी का जन्म समय जानना चाहिये ॥ ८ ॥